

जौर्ज आर० स्टूअर्ट के उपन्यास की नायिका आग की एक चिंगारी है जो उत्पन्न होते ही बुझने लगती है। वह कुछ देर सुंधकती है, मरने लगती है किन्तु फिर सजीव हो उठती है। उसके पश्चात् अपनी ही जीवन शक्ति से वह विध्वंसक अग्नि का रूप धारण कर लेती है, और जंगली भूमि पर मीलों तक दहकती है। मनुष्य इस विकराल 'शत्रु—आग—के विरुद्ध डट जाता है।

शान्ति के समय के इस आपत्ति-काल में शत्रु के संहार के लिये मनुष्य सभी साधनों का प्रयोग करता है—उसके लिये यह जीवन-मरण संघर्ष बन जाता है।

यह

उपन्यास

जंगल की आग

लेखक :

जौर्ज आर० स्टूअर्ट

अनुवादक :

केशव सागर एम० ए०

दो रुपया] [मूल्य २)

प्रकाशक :

इण्डियन यूनिवर्सिटी पब्लिशर्स, प्राइवेट लि०

कश्मीरी गेट

देहली ६

The Hindi Translation of "Fire" published
originally by Random House New York.
Translated & Published with the
permission of the author
and the Publishers.

मूल पुस्तक का संक्षेप, लेखक और प्रकाशक
की आज्ञा से प्रकाशित

मुद्रक
रूपवाणी प्रिंटिंग हाउस,
२३, दरियागंज,
दिल्ली

पुस्तक का विषय

'तूफ़ान' के लेखक का यह नया उपन्यास है। इसमें जंगल की आग की जीवन-कथा का वृतान्त है। यह आग कैसे बिजली के गिरने से उत्पन्न हुई, अपने प्रारम्भिक जीवन में यह कितनी न्यून थी, फिर यह कैसे भड़क उठी और इसने किस प्रकार भयानक रूप धारण किया और अन्ततः इस पर कैसे काबू पाया गया इसका वर्णन बड़े रोचक ढंग से किया गया है। आग की इस कहानी को पृष्ठ भूमि मान कर लेखक ने उन स्त्री-पुरुषों के जीवन का, उनकी आशाओं और निराशाओं का, उनके शोक और उनकी खुशी का वर्णन किया है जिन पर इस आग को बुझाने का दायित्व आ पड़ा था।

पुस्तक की समालोचना

'लिखने की शैली अति उत्तम है—यह कठोर, कृश और सुलझे हुए गद्य का उच्चतम नमूना है। लोगों के भाव, कैसे वे काम करते हैं, खाते, पीते, सोते और बात करते हैं ये सब बड़े ज़ोरदार शब्दों में लिखे हैं। यह एक बड़ी उत्तेजक कहानी है। यह इतनी सच्ची प्रतीत होती है कि किसी को यह विचार भी नहीं आ सकता कि स्पिटकैट एक की लूपत आग थी जिसके कारण एक भी वृक्ष विध्वंस नहीं हुआ। स्टुयवर्ट ने इस कुशलता से इस आग का चित्रण किया है कि यह हमें भड़कती और बुझती दिखाई देती है।

हारेस रेनल्ड्ज़, क्रिस्चन साइंस
मौनीटर, २२ अप्रैल, १९४८

'स्मरणीय उपन्यास' 'तूफ़ान' के लेखक ने मौसम के विषय में यह एक नई और अनोखी कहानी लिखी है। हवा, पानी, अथवा बिजली के प्रवाह से इस भयानक आग का उत्पात वृक्षों पर और लोगों पर हुआ यह मौसम का एक अभिशाप रूप सिद्ध हुई। यह इसी आग की कहानी है। 'जंगल की आग' की कहानी मनुष्य की आत्मा की कहानी भी है। यह आत्मा कैसे संघर्ष करती है और कैसे हार जाती है इसका वर्णन अति सुन्दर शब्दों में किया गया है। जौन बार्टले आग के जीवन के नव्वे दिन तक और उसके विरुद्ध की गई लड़ाई के चौथे दिन तक अग्नि-अधिपुरुष रहा। उसकी आँखों के सामने देवदार का कुंज विध्वंस हो गया, चीड़ का हरा-भरा जगल काला पड़ गया। जब उसे अपने काम से पृथक् कर दिया गया तो मौसम ने शत्रु का विरोध किया। जौन बार्टले ने 'जंगल की आग' को स्मरणीय उपन्यास बना दिया है।'

जेम्ज़ स्टीवन्ज़, न्यूयार्क टाइम्ज़, ११ अप्रैल, १९४८

पहला दिन :

पहरेदारिन ने रेडियो बन्द कर दिया। कुछ देर से विविध प्रकार की विलक्षण ध्वनियां विघ्न डाल रही थीं। कभी 'शां-शां' की आवाज़ आती, कभी 'गड़-गड़' की और कभी 'कड़-कड़' की। ऐसा प्रतीत होता था जैसे कहीं झंझा की खिचड़ी पक रही हो।

उसने रेडियो बन्द किया ही था कि टैलीफून की घंटी सुनाई दी। पहरेदारिन ने टैलीफून पर कान लगाया। 'दीर्घ-लघु लघु-दीर्घ'—यह उसका अपना संकेत था। उसने उत्तर में कहा :

'मैं सैरोगोरडो की पहरेदारिन बोल रही हूँ।'

'कहो, जूडिथ, क्या हाल चाल है ?' यह रेंजर की जानी पहचानी, गंभीर और रूखी आवाज़ थी।

पहरेदारिन ने कहा, 'अच्छा, बार्ट, तुम हो ?'

सूचना मिली है कि बिजली दक्षिण दिशा से, जिधर से प्रायः इसका आगमन होता है, पर्वत शृंखला के साथ-साथ कड़कती और गरजती चली आ रही है। दो दिन हुये इसका प्रहार सैववई जंगल की ऊंची धरती पर हुआ था। कल यह स्टैनिस्लास के स्थान पर हमारे लड़कों की परेशानी का कारण बनी। रेडियो में 'शां-शां' की जो आवाजें आ रही हैं उनसे प्रतीत होता है कि टेहो के ऊपर से यू० ऐस० ४० के साथ-साथ बिजली

आकाश को चीरती हुई चली आरही है । इसके पश्चात् हमारी और प्लूमाज़ की बारी है । कोई ख़ास घबराने वाली बात तो नहीं, परन्तु तुम अभी बच्ची हो····'

'बार्ट, यह तुम क्या कह रहे हो ? क्या तुम्हें भी बताना पड़ेगा कि····'

'भूल के लिये क्षमा कीजिये, परन्तु यह जानते हुये भी कि तुम्हें इक्कीसवां साल लगा है मैं तुम्हें अपक्व ही समझता हूँ । साथ ही एक बात और है । तुम साठ फीट ऊंचे बुर्ज पर एक कांच के डिब्बे में बैठी हो । इस अवस्था में यदि बिजली का कड़का और धड़का हो तो बड़े बड़ों के दिल दहल उठें ।'

'इसका उपचार मुझे मालूम है । सब आदेश एक गत्ते पर जो टैली-फून के बिलकुल साथ लटक रहा है लिखे हैं । इनमें से एक यह है कि यदि बिजली चमकती दिखाई दे तो झट स्विच खींच लो, और उस तिपाई पर खड़े हो जाओ जिसके नीचे कांच के पाये लगे हैं । क्यों ? ठीक है , न ?'

'बहुत खूब, माधवी, परन्तु यह मत भुला देना कि तुम पैडोरैसा के राष्ट्रीय वन में एक पहरेदारिन हो । तुम्हारा यह भी कर्त्तव्य है कि जब कहीं बिजली गिरती दिखाई दे तो अपने अलीडेड यन्त्र को घुमा दो, समय लिख लो और इसकी सूचना हमें पहुँचा दो । मैं तुम्हें केवल इतना ही कहना चाहता था । अब ज़रा अन्य व्यक्तियों को भी सूचित कर दूँ ।'

टैलीफून रखते-रखते ही पहरेदारिन को अपने मन में उत्तेजना उठती महसूस हुई । यह पद संभाले उसे केवल दो सप्ताह हुये थे । अभी तक कोई अस्वाभाविक घटना न हुई थी । कहीं-कहीं उसे धुआं उठता दिखाई दिया था, परन्तु वह बहुत दूर उसके दायित्व क्षेत्र से बाहर था, इस लिये उसने धुयें की खास परवाह न की थी ।

बुर्ज के चारों ओर एक संकीर्ण पैड़ बनी थी जिसमें एक जालीदार द्वार खुलता था । वह द्वार से बाहर निकली और पैड़ पर आगई । उसे

मालूम था कि कड़क दक्षिण दिशा से आरही है परन्तु उस बालक की भांति जो मिठाई को अन्त समय तक बचाये रखना चाहता है, पहरेदारिन ने पहले पश्चिम की ओर दृष्टि डाली । फिर वह पेड़ पर से होती हुई उत्तर और पूर्व को ओर गई । उसे कोई अलौकिक बात दिखाई न दी । इसके पश्चात् वह दक्षिण-पूर्वी उपदिशा में जा खड़ी हुई और चीड़ के ऊँचे शिखरों की सीध में दक्षिण दिशा की ओर टिकटिकी लगाकर देखने लगी । दृश्य नित्य के समान ही था ।

उसे बहुत निराशा हुई । निरन्तर फैली हुई, विशाल जंगलों से ढकी, कुण्डलीदार पर्वत शृंखलाओं और रूक्ष पर्वत शिखरों के ऊपर जो ऊत्तरी सीरानिवेदा की रीढ़ के समान थे उसे पराह्न-से-पराह्न रुई के गालों के समान बादल दिखाई दिया करते थे । आज भी बादलों में कोई परिवर्तन न आया था ।

पहरेदारिन ने अपनी दूरबीन संभाली । निकटवर्त्ती शृंखलायें उभर आईं और उनका पोर पोर दिखाई देने लगा । बादलों के आकार में अब भी कोई अन्तर दिखाई न देता था । उसने दूरबीन हटा ली । इस दृश्य में उसे दिलचस्पी की कोई बात नज़र न आई थी ।

वह कुछ निश्चिन्त हो गई । उसने अपना दायां हाथ ऊपर उठाया, और अपनी गाढ़े भूरे रंग की मर्दाना कमीज़ का ऊपर का बटन खोल दिया । उसे गर्मी का आभास हो रहा था । यह बात अस्वाभाविक थी क्यों कि इस समय दक्षिण-पश्चिम में स्थित पौट्टर की खाड़ी की गहरी दरार से प्रायः हवा के झोंके आया करते थे , परन्तु आज हवा का कहीं नाम न था । चिप-चिपाती गर्मी से जी घबराने लगा ।

अकस्मात जैसे उसे कोई अन्तर्बोध हुआ हो, उसकी दृष्टि तत्क्षण चारों ओर घूम गई । वह देखना चाहती थी कि कहीं ऐसा अवांछनीय धुआँ तो नहीं उठ रहा जिसका उसे बोध न हो ।

वह पुनः पश्चिम की ओर गई । पर्वत के उभार के कारण घाटी के पेंदे तक उसकी दृष्टि न पहुँच सकी । फिर भी घाटी से भारी-भारी काला।

धुआं उठता दिखाई दे रहा था। यह मगना की लकड़ी की मिल का धुआं था जो सदैव ही उठता रहता था। इसलिये पहरेदारिन ने इस धुयें की ओर विशेष ध्यान न दिया।

वह अभी पेड़ के पश्चिमी भाग पर खड़ी थी। पराह्न की धूप उस पर सीधी पड़ रही थी। हवा बन्द थी। इसलिये उसे बहुत गर्मी महसूस हो रही थी। सिर भी कुछ भारी था। उसे विचार आया कि वह साठ फीट की ऊँचाई पर खड़ी है। इस विचार ने उसे व्याकुल कर दिया।

सूर्य की किरणों से बचने के लिये वह पूर्व की ओर चली आई। शीतल वायु के एक झोंके ने उसका सब प्रमाद दूर कर दिया। अब वह पुनः दक्षिण दिशा में देखने लगी और देखते ही सहम गई। उसने फिर दृष्टि ऊपर उठाई। देखती क्या है कि आकार रहित बादलों में से एक ने स्पष्ट रूप धारण कर लिया है। यह बादल अन्य बादलों से अधिक धूमिल और अधिक विशाल था। उसकी रेखायें साफ़ दिखाई दे रही थीं और वह अन्य बादलों की अपेक्षा निकटतर मालूम होता था। उसके शिखर पर उसे एक गोला सा बना हुआ दिखाई दिया।

वह भीतर चली गई। आग का पता लगाने वाले यन्त्र के अलीडेड को घुमा कर उसने उसका रुख बादलों के केन्द्र की ओर कर दिया। वह केवल अभ्यास करना चाहती थी। यन्त्र के प्रयोग की आवश्यकता अभी उसे महसूस न हुई थी। क्षितिज चाप के पैमाने पर सुई एक से चार और फिर छः पर पहुँच गई। इसका अभिप्रायः यह था कि बादल वहां से दक्षिण पूर्व की उपदिशा से दक्षिण की ओर था। वह कितनी दूर था अथवा वह किस गति से उसकी ओर बढ़ेगा इसका बोध अपने अल्प अनुभव के कारण उसे न हो सकता था। परन्तु रेंजर ने उसे चेतावनी दी थी जिससे यह साफ़ विदित था कि पराह्नांत से पूर्व बुर्ज से होता हुआ वह सैरोगोरडो पहुँच जायेगा।

पौंडेरोसा के राष्ट्रीय बन में वर्षा नापने के यन्त्रों से यह प्रतीत होता

था कि वहां अन्तिम वर्षा १४ मई को हुई थी। अब सितम्बर का महीना था।

वर्षा रहित गर्मी में कोई विशेष बात नहीं हुई। कैलीफोरनिया में एक साधारण साल में हो ही क्या सकता था। परन्तु साधारण होते हुए भी इस स्थिति में जोखम किसी प्रकार कम न थी।

बादल अधिक घने हो रहे थे और पैंडोरेसा बन के ऊपर मंडरा रहे थे। सफ़फोक और बारलो ज़िलों की पांचों मचानों में बैठे हुये पहरेदार उन्हें देख रहे थे। शाम के चार बजे की कड़ाके की धूप थी। बैजर हिल और हैमिलन प्वांएट से यह बादल बहुत ही दूर प्रतीत होता था। उन्होंने बादल का एक पक्ष देखा था। उसके ऊपर का सिरा देख कर उनके मन में भय उत्पन्न हुआ। वह लवर्स लीप और हौर्स माऊंटेन की ओर बढ़ने को था इसलिये इस भाग के पहरेदार बादल को दूर की चीज़ न समझते थे। हवा का वेग बढ़ रहा था और उन्हें सर्दी महसूस होने लगी थी। ऊपर उड़ती हुई धुन्ध सियाह होती जा रही थी और उसे देख कर भय उत्पन्न होता था। मैरोगोरडो की मचान पर पहरेदारिन अभी भी धूप में खड़ी थी। दक्षिण पूर्वी क्षितिज में बादल बड़े वेग से बढ़ा आ रहा था और आसमान को ढांपे जा रहा था। उसे भी बादल की नीली कालिमा को देख कर भय उत्पन्न हुआ। क्षण-क्षण वर्षा की बहुत सी बूंदें गिर रही थीं परन्तु वे टूट-टूट कर छोटे-छोटे कणों में बंट कर हवा में उड़ जाती थी। इन आन्तरिक शक्तियों से बादल के ऊपरी भाग में उदद्युत प्रभार उत्पन्न हो गया था और नीचे के भाग में निद्युत प्रभार। इसका प्रभाव बादल के अग्र भाग पर विशेष रूप से हुआ था।

साथ ही निद्युत प्रभार ने बादल के नीचे की भूमि पर समान विद्युत प्रभार उत्पन्न कर दिया था। यह प्रभार एक अदृश्य परछाईं के समान दर्रे में उतर आया था और एक किनारे से दूसरे किनारे तक ऊपर नीचे जा रहा था।

वनीय मेढ़ों के ऊपर जाते जाते बादल के भीतर एक बलिष्ट क्रिया होने लगी। बादल और पृथ्वी के बीच लाखों घ्रुशक्स की आतति उत्पन्न हो गई। अब बादल के नीचे चट्टानों के या वृक्षों के शिखरों से यत्र तत्र अदृश्य रूप से बिजली का प्रवाह उठने लगा। एकाएक सैरोगोरडो की चोटी के निकट आतति चरम सीमा को पहुँच गई और बादल और पृथ्वी के बीच में बिजली की एक मील लम्बी सफेद चमक दिखाई दी।

चमक से पहरेदारिन की आंखें चुंधिया गईं। गर्जन से उसका दिल दहल उठा। मृत्यु के विचार से वह सन्न हो गई। बिजली की चमक लोप हो चुकी थी, परन्तु बिजली के गिरने से वृक्ष धड़ाम से भूमि पर आ पड़ा। वृक्ष के गिरने की आवाज़ उसे तिपाई पर चढ़ते-चढ़ते सुनाई दी। उसे विचार आया कि इसे नापना व्यर्थ है क्योंकि यह चमक उसके सामने ही तो हुई थी।

आधा मिनट भी न गुज़रा था कि वह फिर अपने काम पर डट गई। उसने यन्त्र का प्रयोग किया और देखा कि बिजली १३० दर्जे पर चमकी है और यह स्थान लवर्स लीप से कोसों दूर है। दो बार उसे गर्जन सुनाई दी परन्तु चमक दिखाई न दी।

अब ऐसा प्रतीत हुआ कि बिजली के गिरने से बादल से बिजली का प्रभाव कम हो गया है और वह उतना भयावह प्रतीत नहीं होता जितना पहले होता था। पूर्व दिशा में कहीं दूर उसे वर्षा होती दिखाई दी।

उसी क्षण बादल का अग्र भाग जो अभी भी बहुत प्रभारित था होवल पहाड़ की ढलान के ऊपर अनियन की खाड़ी के उत्तर में स्थित मेढ़ की ओर बढ़ा चला आ रहा था। इस मेढ़ पर घना जंगल था जिसमें अधिकतर वृक्ष जैफरी चीड़ के थे। ढलान पर कुछ हटकर इसी जाति का एक विशेष पेड़ खड़ा था। आस पास के वृक्षों में यह वृक्ष सब से ऊँचा था परन्तु मेढ़ के वन की अपेक्षा यह बादल से अधिक दूर था। फिर भी कुछ ऐसी शक्तियां काम कर रही थीं कि वृक्ष और बादल में आपस में संयोग स्थापित हो गया।

विद्युत का प्रभार जो बादल के नीचे था अनियन की खाड़ी के दर्रे में ऊपर आया और दूसरी ढलान से ऊपर चढ़ गया। उक्त वृक्ष की जड़ें भूमि के भीतर एक आर्द्र भाग तक पहुँची हुई थीं इसलिये इस विशाल वृक्ष पर बिजली का प्रभाव हुये बिना न रहा। भूमि की गील के साथ-साथ चलता हुआ बिजली का प्रभार वृक्ष की चोटी तक पहुँच गया। वृक्ष की चोटी पर एक पैनी शाख थी। विद्युत के मोचन के लिये इसने एक अति उत्तम बिन्दू का काम दिया। विद्युत के भार से कुछ क्षणों में ही वृक्ष आतत हो गया।

अकस्मात एक सैकेंड के लाखवें अंश के लिये एक नीलगूँ सफेद चमक उठी और बादल और पृथ्वी के बीच में वृक्ष में से होती हुई गुज़र गई। यह विद्युत-शक्ति इतनी अधिक थी कि बिजली के कई कारखाने मिल कर भी इतनी शक्ति उत्पन्न नहीं कर सकते थे।

बिजली तीन चक्कर काटती हुई वृक्ष के गूदे में से होकर गुज़र गई थी। उसकी छाल पर उसका कोई प्रभाव न पड़ा था। परन्तु जहां-जहां से बिजली गुज़री थी वहां इतनी गर्मी उत्पन्न हुई कि न केवल गूदा बल्कि लकड़ी भी वाष्प बन गई। बाहर का दबाव विस्फोटक था। जड़ों से लेकर चोटी तक एक कुंडली के रूप में शक्ति का प्रवाह हुआ और छाल के टुकड़े उखड़ कर हवा में उड़ने लगे। विस्फोटन से ऐसा शोर हुआ कि समस्त वातावरण गूँज उठा। यह शोर दर्रे में से होकर इस प्रकार गुज़रा जैसे कोई गर्जन हो।

गर्जन भी उस तक न पहुँची थी। सैरोगोरडो की पहरेदारिन ने पहले ही अपने एलीडेड यन्त्र को घुमा दिया था। उसने तारों में से झांक कर उस ओर दृष्टि डाली जहां उसे बिजली की चमक दिखाई दी थी। क्षितिज चाप पर उसने ६५ की संख्या पढ़ी।

उसे विचार आया, 'लगभग दस मील की दूरी पर, चार बजे का समय है।' यह सोच कर वह लिखने लगी कि इतने में गर्जन ने उसे आघेरा।

जितनी देर में उसने अंक लिखे उतनी देर में ही बादल उत्तर की ओर खिसक गया था। पहरेदारिन ने एक सिगरेट सुलगाई। अकस्मात उसे यह आभास हुआ कि एक घंटे से वह उत्तेजित रही है। तूफान गुज़र चुका था। अब वह एकदम शिथिलता महसूस करने लगी।

वृक्ष के नीचे भूमि के साथ-साथ एक जड़ थी जिसमें से बिजली का मोचन गुज़रा था। बिजली के गिरने से आस-पास के तृणों को आग लग गई।

ये तृण भूमि के ऊपर पड़े थे इसलिये उन्हें वायु पर्याप्त मात्रा में मिल रही थी। उनमें आग सुलगती रही। शाम को हवा का प्रवाह दर्रे की ढलान के साथ-साथ होने लगा और इस हवा के चलने से इन तृणों में से धुयें का पतला सा स्तम्भ इस प्रकार उठता दिखाई दिया जैसे बुझती हुई सिगरेट से उठता है। हवा में यह धुआं कुण्डलियों के रूप में उठा और धीरे-धीरे उसमें विलय हो गया।

दूसरा दिन :

प्रातः का समय था किन्तु धूप तेज थी और गर्मी भी खूब थी। पौंडेरोसा राष्ट्रीय बन का नवयुवक निरीक्षक अपनी पत्नी और दो छोटी बेटियों से विदा होकर सफ्फोक के छोटे से नगर की मुख्य सड़क से होता हुआ मुख्य कार्यालय की ओर बढ़ा। चौड़े छज्जे की टोपी ने धूप को रोक रखा था और वह उसकी आंखों तक न पहुँच रही थी। उसकी हरी यूनीफार्म बहुत साफ़-सुथरी थी। उसके मन में बहुत शान्ति थी।

बन विभाग की ध्वजा फहराता हुआ एक ट्रक उसके पास से गुज़रा।

ड्राइवर ने कहा, 'नमस्कार, निरीक्षक।'

निरीक्षक ने उत्तर दिया, 'हैलो!' अकस्मात उसकी शान्ति भंग हो गई। एक तो यह बात थी कि एकदम उसे ड्राइवर का नाम याद न आया था दूसरे उसने अचानक ही अपना हाथ इस प्रकार हिला दिया था जैसे उसकी उस व्यक्ति से मैत्री हो। उसे इस प्रकार हाथ हिलाना कुछ भद्दा प्रतीत

हुआ। साथ ही यह बात भी थी कि उसे पुनः निरीक्षक कहा गया था।

इस का अभिप्राय यह हो सकता था कि उसने कुछ उन्नति की है। उसकी सेवा के पहले साल के पिछले कुछ महीनों को छोड़ कर उसे श्री जोन्ज़ के नाम से बुलाते थे। जो युवक सेना से आये थे वे उसे 'महोदय' कह कर पुकारते थे। परन्तु लोग उसे 'स्लिम' कहकर क्यों नहीं पुकारते? उसका शरीर दुबला पतला था और यह नाम खूब फबता था। जिस प्रकार वे 'निरीक्षक' कहते थे उसमें व्यंग का लेश था।

मुख्य कार्यालय के द्वार की ओर डग भरते हुये उसने अपनी लम्बी टांगों को तनिक फैलाया और अचेत रूप से ही छः पग तीन डगों में बिना किसी श्रम के पार कर लिये।

स्विच बोर्ड पर बैठी हुई लड़की ने अभिवादन करते हुये कहा—'नकस्कार, निरीक्षक।'

उसने उत्तर दिया—'जैकी, नमस्कार।' यह कहते-कहते उसने अपने दफ़्तर का द्वार खोला और उसमें घुस गया।

लकड़ी की दीवार में से होती हुई जैकी की मन्द-मन्द आवाज़ आ रही थी।' हैमिलिन प्वांएट...हां...जांच कर लीजिये—'पहरेदारिनों के सन्देश आ रहे थे। उसे आवाज़ सुनाई दी—'सैरो गोर्डो।'...वह पीछे की ओर झुक गया। सामने की दीवार पर एक नक्शा लटक रहा था जो अभी-अभी तैयार होकर आया था। वह बड़े प्यार से इस महान नक्शे की ओर देखने लगा।

नक्शे पर उसने पौडेरोसा बन की रेखायें देखीं। भौगोलिक रूप से वे बेतुकी प्रतीत होती थीं। न तो उनमें भौतिक भूगोल की एक लयता थी न राजनीतिक भूगोल की। उसे विचार आया कि यह बन कृतृम रूप से बना है। दूर वाशिंगटन में बैठे-बैठे किसी राष्ट्रपति ने शती के प्रारम्भ में अपनें कलम से ही इसका निर्माण किया था। यह सियारा निवेदा की मेढ़ के साथ-साथ फैला हुआ था और कैलीफोरनिया की तीन काऊंटियों के

कुछ भाग को ढांपता था। इस बन का उत्तरी सिरा जल की धारा के साथ-साथ लहरिया सा बनाता था। परन्तु बाकी दिशाओं में इसकी सीमा जो हरी पट्टी के रूप में दिखाई गई थी किसी पुर की सीमा के समान सम कोण बनाती थी। जब उसकी सीमा रेखा उत्तर-पूर्व या उत्तर-पश्चिम की ओर झुकती थी तो आरी के दांतों के समान प्रतीत होती थी।

सरकारी तौर पर बन का क्षेत्र फल १०,९१,९०४ एकड़ था। इसका अभिप्राय था कि यह क्षेत्रफल १७०६.१ वर्ग मील है।

उसने टैलीफून उठाया और कहा, 'कृपया मुझे आर्न से मिला दीजिये।'

प्रेषक ने उत्तर दिया तो उसने कहा, 'आर्न, सुनाओ, कल के तूफान की क्या खबर है?'

'बिजली सात बार गिरी है। ये सब घटनाएँ बारलो और शेबा के जिलों में हुई हैं। अभी तक केवल एक स्थान पर आग लगी है। मिडल फोर्क के ऊपर की मेढ़ पर एक सूखे वृक्ष ने आग पकड़ ली थी जिसे शेबा के युवकों ने बुझा दिया। दूसरा स्थान सैरोगोरडो की चोटी से ज़रा नीचे है। यहां एक विशाल वृक्ष टुकड़े-टुकड़े होगया। आग की कोई वारदात नहीं हुई।

'बाकी पांच स्थान कौनसे हैं?'

'चार स्थान ऐसे हैं जहां पहरेदारिनें आसानी से दृष्टि डाल सकती हैं। अभी तक धुयें के कोई चिह्न दिखाई नहीं दिये। यदि धुआं उठने भी लगेगा तो हम जल्दी ही वहाँ पहुँच जायेंगे और आग बुझा सकेंगे। एक ऐसा स्थान है जहाँ बिजली का गिरना मुझे पसन्द नहीं। यह कहीं अनियन की खाड़ी के ऊपर है।'

'क्या तुमने इसका अता-पता नोट किया है?'

'हां, चार बजकर बारह मिनट पर सैरोगोरडो ने इसका स्थान ६९ दर्जे बताया है, हौर्स माऊन्टेन ने ३२० दर्जे।

'ये तो गोल-मोल अंक प्रतीत होते हैं ।'

'हां, उन्होंने सूचना दी है कि यह स्थान 'डेफिनिट और डीयरहाऊंड' के आसपास की रेखा के साथ-साथ खाड़ी के उत्तर में स्थित मेढ़ के ऊपर है।

निरीक्षक कुछ देर के लिये विचारमग्न हो गया ।

उसने पूछा—'यह अन्ध प्रदेश है । क्यों, क्या मेरा अनुमान ठीक है ?'

'हां—पारिभाषिक रूप से ऐसा ही है परन्तु सम्भव यही है कि बिजली मेढ़ की चोटी के निकट गिरी है । यदि यह बात ठीक हुई तो सैरो-गोरडो की पहरेदारिन इसकी जांच पड़ताल कर सकती है ।'

'कुछ भी हो इसका निरीक्षण हवाई जहाज़ द्वारा करना होगा ।'

'हां, जल्दी ही मैं इसका प्रबन्ध करूँगा । टेहो पर कहीं अधिक तेज़ बिजली गिरी है । वे आज हवाई जहाज़ का प्रयोग कर रहे हैं ।'

'भविष्य के विषय में क्या विचार है ?'

'नित्य से कोई बुरा तो नहीं । तूफान की सम्भावना दिखाई नहीं देती । हलकी-हल्की दक्षिणी हवा की संभावना है । ताप में और आक्लेदन में कोई अन्तर आता दिखाई नहीं देता ।'

निरीक्षक ने कहा, 'बहुत धन्यवाद ।' इसके पश्चात् उसने टैलीफून रख दिया ।

अमियन की खाड़ी के ऊपर वाली मेढ़ पर आग रात-रात में ही दब गई । प्रातः के समय वह धीरे-धीरे ठंढी हो गई थी । कहीं-कहीं उसमें थोड़ी-थोड़ी जान थी । ठंड के कारण हवा का आक्लेदन बढ़ गया था और वह ओस-बिन्दु तक पहुँच गया था । यदि थोड़ी-सी भी ओस पड़ने लगती तो आग की अन्तिम चिंगारियां भी बुझ जातीं ।

परन्तु जैसे सर्दी बढ़ने लगी मेढ़ के ऊपर की हवा बड़े वेग से ठंढी होने लगी । नीचे की हवा इतने वेग से ठंडी न हो सकी । इस प्रकार ऊपर की हवा अधिक भारी हो गई । यह धीरे-धीरे ढलान के साथ नीचे को चलने लगी । हवा के झोंके ने बुझती हुई चिंगारियों में पुनः जान

डाल दी। साथ ही यह हवा अधिक खुश्क थी। इसलिये ओस केवल उसी स्थान पर बन पाई जहां मेढ़ के निचले हिस्से पर खाड़ी से उठते हुये पानी के छींटों ने हवा का आर्द्रता बढ़ा दिया था। इसलिये आग धीरे-धीरे चमकती गई।

सूर्य उदय होने के पश्चात् आग प्रचण्ड हो गई। हवा खुश्क और गरम थी। चीड़ की पतली-पतली पत्तियों को खुश्क करने के लिये अब अग्नि के ताप की आवश्यकता न थी।

सूर्य और भी ऊपर चढ़ आया। उसने दर्रे के निचले भाग की हवा को अधिक वेग से गर्मी पहुँचाई। हवा गरम होकर ऊपर को चढ़ने लगी। दर्रे का झुकाव उत्तर-पूर्व की ओर था, इसलिये हवा का यह झोंका दक्षिणी हवा से जा मिला और उसके वेग को बढ़ाने में सहायक हुआ।

हवा पाकर आग भड़क उठी। एक-एक करके चीड़ की पत्तियां जलने लगीं। यत्र-तत्र धुएँ के बादल हवा में विलय होने से पूर्व आधा फुट या उससे भी ऊँचे उठने लगे।

हवा चली तो किन्तु विश्वास घातिनी सिद्ध हुई, आग आगे न बढ़ रही थी। अब उसका रुख अन्दर की ओर था, जहां भूमि की एक टुकड़ी पर सब कुछ जल चुका था।

इसलिये दस मिनट पश्चात् आग की चिंगारियां बुझ गईं और वह केवल सुंधकती रह गई। इसके पास आधा इंच मोटी एक सूखी लकड़ी पड़ी थी जिसका एक सिरा पांच इंच तक ऐसे स्थान पर था जो आग के प्रहार से बचा हुआ था। इस लकड़ी में से बड़े वेग से धुआं निकल रहा था। ऐसा प्रतीत होता था कि आग की समस्त शक्ति इसी लकड़ी पर लग रही है।

डैविड हैलीडे फिड्रेल बिल्डिंग की सबसे उपर की मंज़िल के बरामदे में चला जा रहा था। उसने भूरे रंग की कमीज़ पहन रखी थी जो प्रायः जलसेना में पहनी जाती है। उसका कदम भी नाविकों के समान झूम कर

उठता था। ये दोनों बातें न होतीं तो किसी को उसके नाविक होने का गुमान भी न होता। उसके सम्मुख कांच के द्वार पर लिखा था 'पूर्वानुमान कार्यालय'। इसे देख कर उसके मन में एक कसक उठी और उसे पहली बार यह अनुभव हुआ कि वह युद्ध क्षेत्र से घर लौट आया है।

उसने द्वार खोल दिया। सामने मेज़ पर अधिष्ठाता बैठा था। अधिष्ठाता का मुखड़ा इस प्रकार खिल उठा जैसे उसने आगंतुक को पहिचान लिया हो।

अधिष्ठाता ने कहा—'सुनाओ, तुम तो मुद्दतों बाद लौटे हो? तुम एक साधारण नायक भरती होकर गए थे और अब लैफ्टीनेन्ट कमांडर बन कर लौटे हो। यह तो निश्चय है कि यहां तुम्हें २००० प्रति वर्ष से अधिक वेतन मिलेगा। क्यों? क्या आरम्भ में तुम्हें सेना में यही वेतन न मिलता था?'

'इस समय मुझे केवल यही चिन्ता है कि आप मुझे मौसम सम्बन्धी कार्यालय के किस भाग में नियुक्त करेंगे।'

'यदि मेरे बस की बात हो तो मैं तुम्हें यहीं सानफ्रान्सिस्को में नियुक्त कर दूँ। परन्तु इस समय मेरे पास तुम्हारे लिए एक अस्थाई असामी खाली है। इसका सम्बन्ध जंगल की आग से है। पोंडेरोसा के जंगल में सफ्फोक के स्थान पर हमारे कार्यालय में आदमियों की कमी है। तुम्हें इसका अध्यक्ष नियुक्त किया जायगा। तुम्हें आग लगने के विषय में विशेष पूर्वानुमान लगाने का काम करना पड़ेगा।'

'धन्यवाद, मुझे याद आ गया। यदि कहीं भारी आग लग जाय तो मुझे वहां जाना भी पड़ेगा।'

'हां, कई प्रकार का पेचीदा काम है। स्थानीय परिस्थितियां हैं। विशेष प्रकार का भूमि तल है, दर्रे से उठने वाली हवायें हैं। ध्रुव प्रदेश की सीमा के साथ-साथ जो क्रियाएँ होती रहती हैं उनका तुम्हें पूर्ण ज्ञान नहीं हो सकता।'

'हां, हां ! मैं यह सब जानता हूँ। यदि जहाज़ के तख्ते पर कोई घायल योद्धा आ जाय तो आपको आज के मामूली झोंके की चिन्ता होती है, कल आने वाले तूफान की नहीं।'

'अच्छी बात, तो आप आज ही रवाना हो जायं। जो व्यक्ति इस समय वहां काम कर रहा है वह इस काम के योग्य नहीं।'

जौन बार्टले बीस साल से बारलो जिले में रेंजर था। जिस समय वह वहां आया उसकी आयु तीस वर्ष की थी।

बारलो ज़िला जंगल के एक तिहाई भाग से भी बड़ा था। वह सफ्फोक और रैबिट ब्रश से भी अधिक फैला हुआ था और फौकविल्ले और शेबा मिल कर भी उस जितने बड़े न थे। वास्तव में उसका विस्तार अत्याधिक था। साऊथ फोर्क इस प्रदेश में से होकर बहती थी और उसके कारण यह एक भौगोलिक एकाई था। निरीक्षक ने इसे तोड़ने की योजना बनाई थी, परन्तु इस योजना को बार्ट के निवृत होने तक स्थगित कर दिया गया था। बार्ट के होते हुये इस ज़िले के टुकड़े करने का अभिप्राय बार्ट का दिल तोड़ना था। वह इसके चप्पे-चप्पे से परिचित था और इसकी देखभाल सुगमता से कर सकता था। यदि कोई नया आदमी होता तो वह काम के भार से दब ही जाता।

वह अपने दफ्तर में बैठा था। उसमें होयल माऊंटेन से आई हुई चीड़ की सीधी और बिना गांठ की लकड़ी के तख्ते लगे थे। बाहर के दफ्तर में टैलीफून की घंटी बजी। फिर उसे अपने पास पड़े टैलीफून की बज़-बज़ सुनाई दी। उसे विचार आया कि यह टैलीफून मुख्य कार्यालय से आया है।

उसने कहा—'मैं बार्टले बोल रहा हूँ।'

'हां, बार्ट मैं जोन्ज़ बोल रहा हूँ।'

'हैलो, निरीक्षक।'

'कहो—क्या तुम्हें पराह्न में कुछ अवकाश होगा?'

'हां ! हां ! यदि आप को मेरी आवश्यकता है तो ज़रूर अवकाश होगा।'

'मेरा विचार है कि में तुम्हारे साथ उपत्यका जाऊं। वहां बहुत सी लकड़ी पक गई है। शायद हम उसका कुछ प्रयोग कर सकें।'

बार्ट के चेहरे पर तनाव आ गया, परन्तु निरीक्षक कह रहा था :

'इडलहर्स्ट के स्थान पर एक मिल के लिये बहुत अच्छी जगह है। समस्या केवल उस ऊंची सड़क की है जो स्ट्राबरी की खाड़ी के साथ-साथ ऊपर को जाती है।'

बार्ट बीच में ही बोल उठा—'आप जानते हैं कि यह कितना सुन्दर प्रदेश है। कैलीफोर्निया के परिपक्व जंगलों में इसका विशेष स्थान है।'

टैलीफ़ून पर काफ़ी देर खामोशी रही, जिससे प्रतीत होता था कि बार्ट की बात का प्रभाव पड़ा है। निरीक्षक ने इस पर कोई भी बहस न की।

'यदि हम ग्यारह बजे चलें और दोपहर का भोजन मार्ग में ही करें तो कैसा रहेगा ?'

'अच्छा रहेगा। परन्तु क्या आप सैरोगोरडो तक चल सकेंगे ? वहां की पहरेदारिन नई-नई है और शायद उसे प्रोत्साहन देने की आवश्यकता है।'

'हम वहां पहुँचने का प्रयास करेंगे।'

टैलीफून बन्द होते ही बार्ट अपनी कुर्सी से उठ खड़ा हुआ। वह खिड़की तक जाता और वापिस आ जाता। उसकी एड़ियां ज़ोर-ज़ोर से पड़ रही थीं। उसका हलक सूख रहा था।

यह व्यक्ति जोन्ज़ जो 'निरीक्षक' है उपत्यका में लकड़ी की मिल लगाने की सोच रहा है।' उसके मन में एक भयानक विचार आया। कोई भी निरीक्षक या अन्य व्यक्ति जो केवल डेढ़ साल हुये आया है, अपने पुराने रेंजर के सहयोग के बिना अधिक समय तक नहीं रह सकता।

दफ्तर में निरीक्षक के विषय में बात-चीत हुई थी। अन्त में जैरीबैरेट ने अपने ढंग से उसका चित्रण इस प्रकार किया था :

'निरीक्षक को यहां आये अब एक साल हो गया है। मैं उसके विषय में तीन बातें कह सकता हूँ। एक बात तो यह है कि उसे बन-शास्त्र का ज्ञान है। दूसरे वह अपने वचन का पालन करता है और तीसरे यदि कोई उसके साथ छेड़-छाड़ करे तो वह बहुत ख़तरनाक आदमी है।'

बैनरोच ने कहा—'जैरी, निरीक्षक से इसके अतिरिक्त कोई क्या प्रत्याशा कर सकता है ?'

इस बात पर वे सब हंस दिये थे। परन्तु बार्ट जानता था (और वह यह भी जानता था कि दूसरों को भी इसका बोध है) कि यदि कोई कठिन समय आ पड़े तो निरीक्षक से अन्य गुणों की भी प्रत्याशा की जाती है।

सैरोगोरडो की पहरेदारिन का समय बड़ी शान्ति से व्यतीत हो रहा था। कल जो तूफान आया था और जो एक घण्टा भर चलता रहा, उससे पहले सब प्रकार शान्ति ही रही थी। उसे अब काम का अभ्यास हो चला था। प्रतिदिन के काम से उसके व्यथित मन को बहुत सान्त्वना मिलती थी।

यदि किसी लड़की का प्रेम असफल रहे तो उसके पश्चात् वह किसी अन्य व्यक्ति से शीघ्र ही प्रेम करने लगती है, परन्तु इस लड़की के मन की प्रतिक्रिया किसी अन्य दिशा में हुई थी। उसे जीविका कमाने का अवसर मिला। उसके सम्मुख एक ऐसा पद था जो रसिक प्रतीत होता था यहां होते हुए उसे लोगों से मिलने और उनके साथ रहने की आवश्यकता न थी। यह पद ग्रीष्म ऋतु के कुछ सप्ताह के लिये था। उसने सोचा था कि ग्रीष्म ऋतु का शेष भाग मज़े से गुज़रेगा। इसलिये उसने झट यह पद स्वीकार कर लिया था।

फिर भी कभी-कभी उसे अकेलापन महसूस होता था।

सूर्य पश्चिम की ओर जा रहा था। दिन का उत्ताप समाप्त हो गया था। दर्रे से ढलान के साथ-साथ ऊपर को उठती हुई हवा ठण्डी थी।

उसने संकीर्ण पैड़ का एक चक्कर लगाया। दूसरा चक्कर लगाने लगी थी कि उसे घूँ-घूँ की आवाज़ सुनाई दी।

यह केवल टैलीफून की आवाज़ थी। परन्तु सांझ के शान्त वातावरण में यह भी एक गर्जन के समान प्रतीत हुई। दीर्घ, लघु, लघु, लघु। उसने टैलीफून का रिसीवर उठा लिया।

'मैं सैरीगोरडो से बोल रही हूँ।'

'मैं बार्ट बोल रहा हूँ। कल तुम्हारे पास कुछ मेहमान आयेंगे। मैं और निरीक्षक। जहां बिजली गिरी थी उस स्थान को क्या तुम ध्यान-पूर्वक देखती रहती हो?'

'हां, हां, उस पर सदैव मेरी दृष्टि रहती है।'

'क्या कोई खास बात दिखाई दी?'

'नहीं, कुछ भी नहीं।'

'बहुत ठीक। उस स्थान पर नज़र रखना।'

'परन्तु इस बात को तो २४ घंटे बीत गये हैं। यदि आग लगी होती तो क्या इतने समय में दिखाई न दे जाती? इस पर कितनी देर और नज़र रखनी पड़ेगी?'

'कुछ नहीं कहा जा सकता। कुछ लोगों का विचार है कि आग शीत ऋतु भर बर्फ के नीचे-नीचे सुलगती रहती है। सप्ताह भर तो आग प्रायः धीरे-धीरे सुलगती ही रहती है और दिखाई नहीं देती।'

'अच्छी बात। मैं ६५ दर्जे पर नज़र रखूँगी।'

'हां, परन्तु अन्य ३२६ बिन्दुओं का भी ध्यान रखना। चिन्ता की कोई बात नहीं। मुझे मालूम है कि तुम सावधानी से अपना कर्तव्य पालन करोगी।'

जहां वह खड़ी थी वहीं से उसने सैरोगोरडो की लीकदार ढलान पर दृष्टि डाली। उसकी निगाह बैक्स क्रीक, कर्रन क्रीक और अन्य छोटी-छोटी सहायक नदियों पर पड़ी। परन्तु उसे उनके मार्ग की केवल रेखायें

ही दिखाई दीं। वे घाटियों में इतने नीचे बह रही थीं कि कहीं भी उसे पानी दिखाई न दिया।

रिबर्स रिज के पूर्व में उसने उन दो दरारों को देखा जहाँ से अनियन क्रीक की साऊथ फोर्क नार्थ फोर्क की ओर बहती थी। परन्तु उसे नदी कहीं भी दिखाई न दी। उस जंगली भूलभुलइयां में उसे एक के बाद एक मेड़ उठती हुई दिखाई दी। कठोर परछाइयों के कारण ये मेड़ें और भी स्पष्ट दिखाई देती थीं।

पौंडेरोसा के जंगल में दस मचानें और थीं। उनमें से छः उसे दिखाई देती थीं। इन छः में उसकी साथिन पहरेदारिनें बैठी थीं। नार्थ फोर्क के मुहाने के ऊपर शीयर राक पर स्थित उत्तर पूर्व में दूर एक बुर्ज खड़ा था। पूर्व की ओर मुड़ कर उसने अपनी दूरबीन उठाई। बत्तीस मील की दूरी पर बट्टी के सबसे ऊँचे शिखिर पर स्थित उसे छोटा सा मकान एक सफेद चट्टान के समान दिखाई दिया। दक्षिण की ओर से घूमते हुये दूरबीन की सहायता के बिना ही हौर्स माऊंटेन दिखाई दे रहा था। उसके पश्चात् लवर्स लीप और फिर दक्षिण पश्चिम की ओर हैमलिन प्वाएंट। वह फिर उत्तर की ओर आ गई और बड़े चाव से उसने हम्बर्ग प्वाएंट पर दृष्टि डाली। दो मेड़ों के पार यह स्थान केवल आठ मील की दूरी पर था और इस प्रकार इसकी पहरेदारिन उसकी निकटतम पड़ौसिन थी।

परन्तु अन्धेरा छाये जा रहा था। जब उसने फिर नज़र उठाई तो उसे शीयर राक दिखाई न दी। द्वार बन्द कर, उसे आगल लगा वह रात की तैयारियां करने लगी।

तीसरा दिन :

प्रेषक आर्नल्ड सोरन्सन ने रिसीवर रख दिया और अपनी कुर्सी पर पीछे की ओर झुक कर वह योजनायें बनाने लगा।

वह सोच रहा था—'हमारी उड़ान तीन बजे शुरू होगी। इस प्रकार

हमें सूर्य का प्रकाश काफ़ी देर तक प्राप्त होता रहेगा। साथ ही यह ऐसा समय है जब सुलगती हुई आग से अपेक्षाकृत अधिक धुआं निकलता है। ज़रा उस स्थान को, जहां बिजली गिरी थी, फिर देख लूं।

वह उठा और अपनी मेज़ के पीछे लगे मानचित्र को देखने लगा। मानचित्र प्लाईवुड पर टंका हुआ था और उसमें ११ पिन गड़े थे जिनके ऊपर कांच की घुंडियां थीं। ये पौंडेरोसा के जंगल में स्थित ग्यारह मचानों को दर्शाते थे। प्रत्येक सूराख के गिर्द एक-एक घेरा था जिस पर ३६० अक्षांश के निशान लगे थे। प्रेक्षक ने सैरोगोरडो के स्थान से पिन उखाड़ा। पिन के साथ एक धागा बंधा था जो एक स्प्रिंग के द्वारा लकड़ी से जुड़ा था। जैसे ही उसने पिन उखाड़ा, धागा लटकता हुआ बाहर आ गया। उसे याद था कि बिजली उत्तर से ६५ दर्जे पूर्व की ओर गिरी थी परन्तु अपनी याद पर भरोसा न करके उसने अपने स्मृतिलेख से इसका मिलान किया। फिर धागे को उस लकीर पर जमाया जो ६५ दर्जे के बिन्दु से गुज़रती थी। उसने पिन पुनः अपने स्थान पर लगा दिया। यदि सैरोगोरडो की पहरेदारिन का निरीक्षण ठीक था तो बिजली कहीं इसी लकीर के साथ गिरी थी।

उसके पश्चात् उसने हौर्स माऊण्टेन का पिन उखाड़ा। उसी प्रकार सावधानी से काम लेते हुए उसने उसे ३२० दर्जे के बिन्दु पर रखा। इस प्रकार मानचित्र पर उसे उस स्थान का, जहां बिजली गिरी थी, बोध हो गया। जहां दोनों धागे एक-दूसरे को काटते हुए गुज़रते थे वहां मानचित्र पर उसने सावधानी से दृष्टि डाली। वह चाहता था कि उड़ते समय उसे उस स्थान का पूरा-पूरा बोध रहे।

यह स्पष्ट था कि काटा विलसन क्रीक और अनियन क्रीक के बीच की मेढ़ पर स्थित किसी स्थान को दर्शाता है। उसे विचार आया कि यदि इस स्थान पर आग लग जाये तो वह भयानक रूप धारण कर लेगी। यह दुर्गम स्थाग था। साथ ही उसे भय था कि दक्षिण से चलती हुई

प्रभावशाली हवा आग की ज्वाला को पहाड़ के ऊपर की ओर ले जायगी। यदि ज्वाला ऊपर को बढ़ने लगी तो वह, पूर्व इसके कि उसे काबू किया जाय, होवल माऊंटेन तक पहुँच जायगी। इस स्थान पर सड़कें भी न थीं। अनियन क्रीक के दक्षिणी पक्ष से घोड़ों का एक अच्छा मार्ग अवश्य गुज़रता था।

आग के विषय में सूचना देने वाली लड़की आ गई।

उसने कहा—'नमस्कार, कहो, क्या समाचार है ?'

'एक दर्जा नीचे।'

'इस कृपा के लिये धन्यवाद।'

वह चाप के पास गई। चाप पर ऊपर की ओर नीला रंग था। फिर चारों ओर उस पर इन्द्र धनुष के से रंग थे। नीले रंग के साथ लिखा था 'निम्न।' हरे रंग के साथ लिखा था—'साधारण।' पीले रंग के साथ लिखा था—'उच्च।' नारंजी के साथ—'अति उच्च' और लाल के साथ 'असीम'। जब चाप की सुई बिल्कुल सीधी ऊपर की ओर होती थी तो वह नीले रंग की पट्टी की ओर संकेत करती थी। घड़ी की सुई के समान घुमा कर इस सुई को पुनः उदग्र स्थिति में लाने से वह लाल रंग की पट्टी की ओर संकेत करती थी।

इस समय सुई नारंजी रंग के शक्ल के बीच में थी। लड़की ने सुई को थोड़ा-सा घुमाया किन्तु उसकी स्थिति में कोई विशेष अन्तर प्रतीत न होता था।

लड़की ने कहा—'हो सकता है कुछ सप्ताह में वर्षा हो जाय।'

'यह भी हो सकता है कुछ सप्ताह में हमें किसी भारी आपत्ति का सामना करना पड़े।'

'इस साल अब तक पौंडेरोसा में कितनी बार आग लगी है ?'

'मेरा विचार है कि अब तक १६२ बार आग लग चुकी है। यदि इस समय कहीं अन्य स्थान पर आग लगी हो तो कह नहीं सकता।'

'कहीं अधिक हानि तो नहीं पहुँची ? इस साल पौंडेरोसा का जंगल आग का घर बना रहा है।'

वह चली गई परन्तु उसके शब्द प्रेपक के मन में चुभ गये। लड़की को इसका विचार भी न आया था कि उसके शब्दों का इतना प्रभाव पड़ेगा। क्या बन सचमुच आग का घर था या इसमें विधाता का हाथ था ? यह सौभाग्य की बात प्रतीत होती थी कि एक सौ साठ से अधिक वार आग लगी और औसतन प्रत्येक आग में केवल दो एकड़ जंगल विध्वंस हुआ। विध्वंस हुए कुल जंगल का परिमाण २९७ एकड़ था। उनके प्रादेशिक दफ़्तर के निर्देशानुसार यह मात्रा बहुत कम थी। राष्ट्रीय उद्देश्य के अनुसार एक प्रतिशत का दसवां भाग जंगल विध्वंस होना कोई बड़ी बात न थी। यह मात्रा इससे भी बहुत कम थी।

इसलिये अभी तक ठीक ठाक ही रहा था। परन्तु अभी आग का मौसम समाप्त न हुआ था। उसे विचार आया कि कहीं ऐसे स्थान तो नहीं जहाँ आग लगने की सम्भावना हो। यदि ऐसे स्थान हों तो उसे पहले से ही सावधानी बर्तनी चाहिये।

अनियन क्रीक के उत्तर में दर्रे के उदग्र भाग पर अधबीच में अधगली टहनियों और चीड़ की पत्तियों के बिछौने में आग अभी भी सुलग रही थी। हवा की दिशा के साथ इसका भी रुख बदलता रहा। दाह्य सामग्री मिली तो वह अधिक वेग से आगे बढ़ गई। कहीं रुक गई और बुझ गई। रात की सर्दी और नमी के कारण मन्द पड़ गई, दिन में धूप और गर्मी के कारण भड़क उठी। उसका रुख स्वाभाविकतः पहाड़ के ऊपर की ओर था। आग ने अब तक चार फीट लम्बी और दो फीट चौड़ी टुकड़ी को विध्वंस कर दिया था।

आग के सुलगते रहने का यह तीसरा दिन था। दोपहर के समय वह चीड़ के एक सूखे शंकु के निकट पहुँच गई। आग का उत्ताप बढ़ने से उसमें से बड़े वेग से धुआं निकलने लगा। कुछ देर तक धुँआ देकर वह

दहक उठा और एक फुट या उससे अधिक ज्वाला उत्पन्न हुई। चटकने की आवाज़ भी आ रही थी।

जिन कांटों पर शंकु खड़ा था वे पहले जल गये और शंकु नीचे को लुढ़क पड़ा। उसका अन्दर का भाग धीरे-धीरे जल रहा था। नीचे जाते जाते शंकु एक स्थान पर रुक गया। दस मिनट पश्चात् वह कर जल कर समाप्त हो गया। केवल उसका भीतरी भाग धुआं देता रहा। आग पुनः शान्त हो गई।

बार्ट ने मोटर कार की आवाज़ सुनी और बाहर झांका। यह निरीक्षक था।

उसने कहा—'हैलो बार्ट! यह स्थान तो बहुत सुन्दर प्रतीत होता है।'

'धन्यवाद, हां, यह अच्छा स्थान है। यहां सफ्फोक की अपेक्षा दृश्य भी अधिक सुन्दर है।'

निरीक्षक ने पीठ मोड़ी और दर्रे के दूसरे पक्ष पर, जो दो सहस्र फीट ऊँचा था, दृष्टि डाली।

उसने कहा—'सचमुच वहां की अपेक्षा दृश्य अधिक सुन्दर है। परन्तु यह तो बताओ कि उस ढलान से लकड़ी कब काटी गई थी?'

'लगभग १६०२ ई० में। यह उस समय की बात है जब इस जंगल का प्रबन्ध जंगल विभाग के सुपुर्द न हुआ था।'

'इसने पुनः सुन्दर रूप धारण कर लिया है। इस जंगल के वृक्ष पक गये हैं और बहुत भले मालूम होते हैं। इसमें प्रति वर्ष हज़ारों फीट लकड़ी तैयार होती होगी।'

बार्ट ने संक्षेप में उत्तर दिया—'हां, अच्छा सुन्दर बन है।' फिर बात का रुख बदलने की चेष्टा करते हुये उसने कहा—'वह देखो उधर आग दस्ता बुझाने वाला है।'

निरीक्षक की दृष्टि आधी दर्जन लड़कों पर पड़ी जिनकी आयु सत्रह अठारह साल के लगभग थी और जो घास फूस उखाड़ने और कंटकारी की कांट-छांट करने में लगे थे।

बार्ट ने फिर कहा—'यह ठीक है कि इधर काम करना अरोचक है परन्तु इस मौसम में मुझे उनका यहां काम करना अच्छा लगता है। यदि कहीं आग लग जाय तो ये तुरन्त उस ओर भागते हैं।'

'यह अच्छी बात है।'

'अच्छा, तो क्या अब हम प्रस्थान करें ?'

वे स्ट्राबरी क्रीक की उदग्र ढलान पर चढ़े जा रहे थे कि बार्ट ने गाड़ी को निचले गीयर में डाल दिया। बातों-बातों में यह तय पाया कि यदि लकड़ी ढोने वाली गाड़ियां इधर से गुज़रेंगी तो सड़क किसी अन्य स्थान पर बनानी पड़ेगी। वे स्वेबैक रिज के ऊपर उसके दक्षिणी छोर की ओर मुड़े और उस स्थान पर पहुँचे जो स्वेबैक और सैरोगोरडो को मिलाता था। यहां वे ठहर गये और इधर-उधर दृष्टि डालने लगे।

उत्तर में चार मील की दूरी पर रिवर्सरिज का शैलेय मुख कैली क्रीक के कुंडली दार मार्ग के साथ-साथ नीचे की ओर नज़र डालने से साफ़ दिखाई देता था।

बार्ट ने कहा—'वह देखो, कितना सुन्दर स्थान है!'

निरीक्षक ने इसका समर्थन करते हुये कहा, 'हां! परन्तु वह इस स्थान को अधिक ध्यानपूर्वक देख रहा था। दायीं ओर निरर्थक झाड़ियों के दो एक झुंड थे। शेष भाग जो सैरोगोरडो का पूर्वी मुख था कौनीफर के मिले-जुले सुन्दर और अपक्व जंगल से ढका था।

उसने कहा—'यहां से अच्छी लकड़ी प्राप्त हो सकती है। किन्तु लकड़ी का काम करने वाली कम्पनी देवदार के वृक्षों की इतनी मात्रा को अच्छा न समझेगी।

उसने एक क्षण उत्तर की प्रतीक्षा की और मुँह फेर लिया। उसे आभास हो रहा था कि बार्ट के मन में आतति और क्रोध भरा है।

उसने सदभावना से कहा, 'बार्ट, बोलते क्यों नहीं? वृक्ष कटने के लिये ही तो उगते हैं। क्या तुम इससे सहमत नहीं?'

'वृक्षों का यह झुंड बहुत सुन्दर है। मैं इसे बीस साल से देख रहा हूं। कितना अच्छा हो यदि यह जंगल इसी प्रकार खड़ा रहे और लोग इसे देख-देख कर आनन्द प्राप्त करते रहें।

'ये वृक्ष चिल्ला-चिल्ला कर कह रहे हैं कि काट कर हमें मकान बनाने में प्रयुक्त करो। यूँ खड़े तो ये आग को निमन्त्रण दे रहे हैं। ज़रा उस लकड़ी का विचार करो जो इनसे प्राप्त हो सकती है।'

'हां, ठीक है। उनमें कहीं-कहीं सूखे वृक्ष भी हैं।'

'यह कितनी अजीब बात है! इसकी विलक्षणता यह है कि बहुत से लोग तुमसे सहमत हैं। मेरा अभिप्राय यह है कि जब लोग मनुष्यों की प्रशंसा करते हैं तो वे बलिष्ट युवकों और रसीली युवतियों की सराहना करते हैं। इसका प्रमाण किसी भी पत्रिका में दिये हुये चित्रों से मिल जायगा। परन्तु जब वे वृक्षों की ओर दृष्टि डालते हैं तो पुराने वृक्षों की प्रशंसा करते हैं। यदि मेरा बस चले तो मैं उधर का जंगल तुम्हारे क्षेत्र से निकाल दूँ।'

थोड़ी दूर चलकर ही सड़क समाप्त हो गई। सैरोगोरडो की मचान पर पहुँचने के लिये उन्हें सौ गज़ का फासला पैदल तै करना पड़ा। मार्ग एक चट्टान से होकर जाता था। जब वे यहां पहुँचे तो उन्हें बुर्ज दिखाई दिया। पहरेदारिन ने बुर्ज से ही उनका अभिवादन किया।

वे बुर्ज पर पहुँचे। बार्ट ने अभिवादन किया। और कहा, 'जूडिथ, आप हैं हमारे निरीक्षक, श्री जोन्ज़।'

लड़की ने कहा, 'आपने पहरेदारिन को सम्मानित किया है।' उसके पश्चात् वह और बार्ट आपस में बात-चीत और छेड़-छाड़ करने लगे।

निरीक्षक उनकी बातचीत में कोई भाग न ले रहा था। उसे बार्ट से ईर्षा हो रही थी। बार्ट के मन में वृक्षों और मनुष्यों के प्रति स्नेह भरे भाव थे। उसके इन भावों के कारण, जो भी उससे मिलता था, प्रसन्न हो जाता था।

अतिथि सत्कार का दायित्व जूडिथ गोडोए पर था। उसने निरीक्षक की ओर पर्याप्त विनम्रता का प्रदर्शन नहीं किया था। अपनी भूल को छिपाने के लिये उसने कहा, 'मुझे सैरोगोरडो बहुत पसन्द है।' साथ ही उसके ओठों पर एक मुस्कान खेल गई।

निरीक्षक ने केवल इतना कहा, 'यह बहुत अच्छी बात है।' परन्तु उसके ओठों पर भी मुस्कान थी। उसे मुस्कराते देखा तो पहरेदारिन को विश्वास हो गया कि वह चिड़-चिड़े मिज़ाज का व्यक्ति नहीं है। उसकी मुस्कान मधुर थी।

'मैंने कुछ कॉफ़ी बना रखी है। परन्तु मैं चाहती हूँ कि इससे पहले आप दोनों पूर्वी पैड़ पर चल कर देखें। मुझे इधर कहीं धुआं दिखाई नहीं देता। आप भी ज़रा देखिये। आपके यहां आने का मैं कुछ लाभ उठाना चाहती हूँ।'

तीनों पूर्वी पैड़ के जंगले पर झुक कर देखने लगे। उन्होंने मेड़ों के ऊपर से दृष्टि डाली और कुछ देर वे चुपचाप खड़े रहे।

उसके पश्चात् निरीक्षक ने कहा, 'नहीं, मुझे तो कहीं भी धुआं दिखाई नहीं देता।'

बार्ट ने कहा, 'धुआं तो मुझे भी कहीं दिखाई नहीं देता।'

वे चुप हुये तो उन्हें हवाई जहाज़ की घूं घूं की आवाज आई।

हवाई जहाज़ मेढ़ के ऊपर निम्न तल पर उड़ रहा था। हवा कभी चलती थी कभी बन्द हो जाती थी। सामने दायीं ओर उसी तल पर सैरोगोरडो का बुर्ज था।

कर्णधार की आवाज़ इतनी तीक्ष्ण थी कि वह इन्जन के शोर में भी सुनाई देती थी।

'कहो, जिम, क्या कहते हो?'

'आर्न, क्या तुम हवाई जहाज़ की 'भीं भीं' से पहरेदारिन को डराना चाहते हो? सुना है वह एक युवति है।'

प्रेषक ने कहा, 'अच्छी बात।' उसके शब्दों में हास्य था परन्तु मन में संकोच। वास्तव में वह लड़की को डराना न चाहता था। जिम पी० ५१ का कर्णधार था। जब वह किसी पहरेदारिन को डराता तो प्रेषक के दिल में खुद खुद होने लगती। उसकी स्नायु पर भी इसका बुरा प्रभाव पड़ता। परन्तु फिर भी वह यह न चाहता था कि जिम को उसकी इस दुर्बलता का बोध हो।

हवाई जहाज़ आवश्यकता से अधिक मुड़ा तो पृथ्वी घूमती हुई प्रतीत हुई। उसकी उड़ान की दिशा में थोड़ा ही अन्तर आया था, परन्तु जिम चार सवारी के हवाई जहाज़ को चलाने का अधिक से अधिक आनन्द लेना चाहता था।

अब ऐसा प्रतीत हुआ जैसे हवाई जहाज सैरोगोरडो की उदग्र ढलान से जा टकरायगा।

जिम ने कहा, 'देखो, उसके पास कोई अतिथि आये हैं।'

प्रेषक ने कहा, 'हां, उनमें से एक निरीक्षक है। बेहतर यह है कि उसके होते हुये लड़की को डराने का प्रयास मत करो।'

'अच्छी बात। परन्तु ज़रा निकट से उड़ने में तो कोई हरज नहीं। क्यों, क्या कहते हो?'

'इसमें तो कोई हरज नहीं।'

निरीक्षक, बार्ट और पहरेदारिन तीनों बुर्ज में थे। हवाई जहाज़ पेड़ के तल के साथ-साथ बुर्ज के पास से उड़ता हुआ आया। इन तीनों ने हाथ हिलाकर अभिवादन किया। जिम ने हवाई जहाज़ के पंखों को डुलाया और फिर ज़ूं ज़ूं करते हुये हवाई जहाज ने एक उछाल ली।

अब वे सैरोगोरडो की हल्की पूर्वी ढलान को जो जंगल से ढकी थी, पीछे छोड़े जा रहे थे।

इन्जन का बहुत शोर था। फिर भी जिम ने बड़े ज़ोर से कहा, 'यह पहरेदारिन बुरी नहीं। जंगल विभाग के अधिकारियों को सुन्दर युवतियां भरती करने का विचार कब से आया है?'

'युद्ध के कारण जैसे अन्य विभागों में युवतियां आ गई हैं वैसे ही यहां भी हुआ है। मेरा विचार है कि ५ प्रदेश में आधी से अधिक मचानों पर लड़कियां अथवा स्त्रियां काम करती हैं।'

हवाई जहाज़ फिर एकाएक मुड़ गया। एक क्षण पश्चात् हवाई जहाज़ रिवर्स रिज के दक्षिणी मुख पर उड़ने लगा। यह मुख सीधा दीवार के समान खड़ा था और खुश्क था। इस पर पौंडेरोसा चीड़ के कुछ थोड़े से ऐसे पेड़ थे जो धूप में पनपते हैं। मेढ़ की चोटी पर से वृक्ष काट दिये गये थे। उत्तरी ढलान से रिवर्स क्रीक की ओर कई नदियां बहती थीं। पानी की बहुतायत होने के कारण उस पर छायादार डगलस तालीश के वृक्षों का घना जंगल था। सामने बायीं ओर एक शाद्वल था जिसमें झाड़ियां उगीं थीं। उसमें छोटे-छोटे घने पौदों के बीच ऊँचे-ऊँचे ठूंठ खड़े थे। ब्रश के मैदान के दायीं ओर रिवर्स मैडो का शाद्वल था जो हरे की अपेक्षा धूसर प्रतीत होता था।

प्रेषक ने दरार के मुख की ओर जहां विलसन क्रीक चपटे स्थान पर आजाती है, संकेत किया। जिम हवाई जहाज़ को ज़रा ऊपर ले गया और उसका तल भूमि से ५१०० फीट ऊँचा हो गया।

वह यहां इसी अभिप्राय से आया था। जैसे वे उड़े जा रहे थे प्रेषक ने मेढ़ की उत्तरी ढलान पर दृष्टि डाली। हवाई जहाज़ द्वारा निरीक्षण जितना उत्तम प्रतीत होता है, वह वास्तव में उतना उत्तम नहीं। बहुत सा क्षेत्र एक दम दृष्टिगोचर होता है और निम्न तल पर उड़ते हुये हवाई जहाज़ की गति इतनी अधिक होती है कि किसी स्थान को ध्यान पूर्वक नहीं देखा जा सकता।

वे पहाड़ के निकट पहुँचे। जिम ने जहाज़ मोड़ लिया। वह मेढ़ के साथ-साथ नीचे को जाने लगा। सम्भवतः बिजली यहीं गिरी थी, इस लिये वे वृक्षों की चोटियों के साथ-साथ उड़ते रहे।

प्रेषक ऐसे स्थान की खोज में था जहां से धुँआ उठ रहा हो परन्तु न तो

उसे कहीं धुँआ उठता दिखाई दिया न ही ऐसा वृक्ष जिस पर बिजली का आघात हुआ हो। वे मेढ़ की थूथुंनी से होकर जहां वह तीक्ष्ण होकर शार्दूल की ओर झुक जाती थी पहुँचे तो वे भूमितल से ४६०० फीट से ऊपर थे। हवाई जहाज़ ने एक चक्कर लगाया और वह फिर ५१०० पर पहुँच गया। इस बार वे अनियन क्रीक के ऊपर उड़ रहे थे। प्रेषक जिम के पीछे की सीट पर जा बैठा। उसने अपने बायीं ओर मेढ़ की दक्षिणी ढलान पर दृष्टि डाली। यह स्थान भी बिल्कुल हवाई जहाज़ के नीचे था।

जिम सहसा बोल उठा—'यदि मेरे पास मेरा पुराना पी० ५१ जहाज़ होता तो मैं इन दर्रों के ऊपर और नीचे बड़ी आसानी से उड़ कर शिखर पर पहुँच जाता।'

'हवाई जहाज़ की गति इस समय भी बहुत तेज़ है। यदि तुम्हारे पास पी० ५१ जहाज़ होता तो हम इतनी तेजी से उड़ते कि चीड़ के वृक्ष तृणों के समान प्रतीत होते।'

वह चाहता था कि जिम चुप रहे। उत्तर देने में एक क्षण के लिये उसका ध्यान उचट गया था। हवाई जहाज़ इतनी गति से उड़ रहा था कि इस क्षण में एक एकड़ भूमि उसकी नज़र से ओझल रह गई थी और सम्भव था कि धुँआ कहीं इसी एक एकड़ में उठ रहा हो।

हवाई जहाज़ ने फिर मोड़ खाया। अब वे पहाड़ के पार्श्व के साथ-साथ उड़ रहे थे। वे उसके इतने निकट थे कि उन्हें घबराहट हो रही थी। इस बार वे अनियन क्रीक के दक्षिण की ओर वाली मेढ़ से नीचे की ओर चले।

इसके पश्चात् उन्होंने पुनः देखभाल करने के लिये चार चक्कर और लगाये परन्तु उन्हें कुछ भी दिखाई न दिया।

प्रेषक ने कहा—'चलो, अब घर की ओर चलें।'

'कहीं भी धुँआं दिखाई नहीं दिया?'

प्रेषक ने उसके कथन में संशोधन करते हुये कहा—'मुझे कहीं भी

धुँआ दिखाई नहीं दिया। परन्तु आधे से ज़्यादा ऐसे स्थानहैं जो वृक्षों के नीचे हैं और ऊपर से दिखाई नहीं देते। इसके अतिरिक्त नीचे भी घनी झाड़ियां और छोटे छोटे वृक्ष हैं।'

फिर आप किसी आदमी को पैदल क्यों नहीं भेज देते?'

'हमें यह मालूम नहीं कि बिजली ठीक किस स्थान पर गिरी है इतनी भूमि के निरीक्षण में जितनी इस पराह्न हमारी नज़र से गुज़री है एक आदमी को एक महीना लगेगा।

चौथा दिन

आग शान्तिपूर्वक और स्थिरता से जले जा रही थी। दिन में वह घास-फूस के बिछौने में कोई बारह फीट आगे बढ़ गई थी। यदा-कदा जब वह किसी शंकू तक पहुँच जाती या किसी बड़ी टहनी को लपेट में ले लेती तो ज़रा भड़क उठती। सूर्य अस्त होने के पश्चात् वह आगे न बढ़ सकी और जहां तक पहुँची थी वहीं तक सीमित रही। परन्तु पिछली रात की अपेक्षा आज रात वह अधिक तीक्ष्ण थी। इसका अग्र भाग जो दस फीट लम्बा था लहरिया था और सब का सब पूरी तरह सुलग रहा था। आग के तीक्ष्ण होने के कई कारण थे। वह ऊपर की ओर बढ़ आई थी और वृक्षों के आधार से हट कर एक ऐसे स्थान पर पहुँच गई थी जहां घास फूस का बिछौना अधिक मोटा था। उसमें यह एक इंच नीचे तक पहुँच गई थी। इसके ऊपर राख का रल्लक छा गया था जो रात की नमी से इसकी रक्षा करता रहा था।

जैसे-जैसे आग की गर्मी बढ़ती गई सर्दी और नमी का प्रभाव कम होता गया। इसमें से छोटी-छोटी ज्वाला उठती और अधिक से अधिक ईंधन को अपनी लपेट में ले लेती।

यह आग अपने जीवन के अनिश्चित दिनों को व्यतीत कर आई थी और नीचे पहुँच कर स्थाई रूप धारण कर चुकी थी। इसमें एक विलक्षण शक्ति आ गई थी। ऐसा प्रतीत होता था कि यह अब बुझने वाली नहीं।

एक समय ऐसा था कि यह ऊपर-ऊपर ही लगी थी और जीवन की साधारण शक्तियां ही इसे समाप्त कर सकती थीं। यह एक व्याधि के समान थी जो अब शरीर के अंग-अंग में घुस गई थीं। यह किसी ऐसे अवसर की खोज में थी जो इसका सहायक हो और यह समस्त शरीर में फैल जाय।

हवा का एक झोंका दर्रे से ऊपर उठा। भूमि तल से बहुत ऊपर चीड़ और तालीश की ऊपरली टहनियां इधर उधर झूमने लगीं। भूमि के साथ साथ हवा का वेग अधिक न था। फिर भी आग की चमक बढ़ गई और लाल की अपेक्षा अब उसका रंग नारंजी हो गया जो अनिष्ट का सूचक था। एक क्षण के लिये आग का रंग पीला-पीला प्रतीत हुआ। नन्हीं-नन्हीं ज्वालाएँ आगे की ओर लपकीं। ऊपरली टहनियों ने झूमना बन्द किया और आग का रंग फिर लाल हो गया।

डावे हैलीडे एक ऊँची तिपाई पर एक ऊँची मेज के साथ बैठा था। वह मौसम के मान चित्र पर अन्तिम इन्दराज कर रहा था।

यह वीरवार का दिन था। मौसम की जांच से उसका एक साल से सम्पर्क न रहा था, इसलिये परिणाम पर पहुँचने से पहले उसने सोमवार तक के आंकड़ों का निरीक्षण किया। मान-चित्र के समुद्री भाग पर प्रशान्त महासागर का भारी दबाव दर्शाया गया था। इस दबाव की रेखा महाद्वीप में भी पहुँच गई थी, जो ब्रिटिश कोलम्बिया और मौनटेना से गुज़रती थी। इस भारी दबाव के उत्तर में अलासका और मैनीटोबा में हल्के तूफान का संकेत था। निकटतर मैक्सीको के पठार से आगे बढ़ते हुए दूर तक कम दबाव का क्षेत्र था, जिसमें केलीफोर्निया का इलाका शामिल था। उसने बारीकी से देखा। सियारा निवेदा के कुछ स्थानों पर तूफान के चिन्ह थे। इन तूफानों का कारण मैक्सीको की खाड़ी से उठती हुई हवा के अन्तिम झोंके थे। मानचित्र पर बने आईसोबार यह दर्शाते थे कि नमीदार आवर्तित हवा रायोग्रेंडी की घाटी से गुज़रती हुई न्यू मैक्सीको और एरीजोना के पहाड़ों से टकराई थी और उसी से बिजली चमकी

और कड़की थी। इन पहाड़ों से बच कर जो हवा ऊपर को गई उसमें अधिक शक्ति न रही थी इसलिये जब वह सियारा निवेदा के उत्तर की ओर पहुँची तो अशक्त हो चुकी थी। कहीं-कहीं बिजली की कड़क हुई जिसके कारण इस जंगल में काम करने वाले घबरा गये। उसका विचार था कि उन्हें आवश्यकता से अधिक घबराहट हुई थी परन्तु फिर विचार आया कि वह इस काम पर नया-नया आया है इसलिये उसे इसके विषय में अपना मत प्रकट नहीं करना चाहिये।

यह सोमवार के मौसम की बात थी। मंगलवार और बुद्धवार को मान चित्र के अनुसार तूफान का कोई संकेत न था। जिस प्रदेश में उसकी दिलचस्पी थी उसके मौसम में इन दिनों में कोई अन्तर न आया था। सोमवार को जो दो तूफान आये थे वे पूर्व की ओर मुड़ गये थे। कैलीफोर्निया के ऊपर हवा के अल्प दबाव का प्रभाव कम हो गया।

अब वह आज अर्थात् वीरवार के विषय में सोचने लगा। यह अजीब बात थी कि आज भी मौसम का हाल सोमवार की भांति था। कैलीफोर्निया के ऊपर हवा का दबाव फिर कम होने की संभावना थी। समुद्र पर हवा का दबाव अधिक था और उत्तर की ओर तूफान आते प्रतीत होते थे। मैनीटोबा का आज का तूफान वही था जो सोमवार को अलासका में आया था। अलासका का आज का तूफान नया था।

उसने जरा ध्यान से देखा तो उसे आज के मौसम में अन्तर दिखाई दिया। अलास्का के नये तूफान में यह अन्तर विशेष रूप से प्रकट होता था। इसका केन्द्र पहले तूफान के केन्द्र से २०० मील दक्षिण की ओर था। यह तूफान अलासका की अपेक्षा अलासका की खाड़ी पर दिखाई देता था। इस तूफान का वेग भी अधिक था। हवा का दबाव पहले से कम था। वेग अधिक। आईसोबारों के मोड़ों से पता चलता था कि वह कहां कहां दक्षिण पश्चिमी दिशा में मुड़ेगा और प्रशान्त महासागर के ऊँचे दबाव वाले भाग में पहुंच जायगा। उसे यह निश्चय हो गया कि

इस तूफान की जाँच पड़ताल करनी होगी। यह भी सम्भव था कि इसके साथ वर्षा भी हो। लोग बड़ी उत्सुकता से वर्षा की प्रतीक्षा कर रहे थे।

यह स्पष्ट था कि गर्मी अभी एक दिन और रहेगी। उसने एक स्थानीय पूर्वानुमान लगाया जिसकी अभिव्यक्ति दो शब्दों में हो सकती थी : 'कोई परिवर्तन नहीं।'

बेजर हिल की पहरेदारिन को ११ : ३२ पर राज्यपथ के निकट धुआं उठता दिखाई। एक मिनट पश्चात उसने इसकी सूचना भेज दी।

सफ्फोक के रेंजर स्टेशन पर आग बुझाने वाले कारुक के अधिपुरुष ने कहा—'इधर आओ। राज्य पथ पर किसी निकम्मे आदमी ने खिड़की से बाहर जलती हुई सिग्रेट फेंक दी है।' वे टैंकर लेने दौड़े।

प्रेषक ने अपना टैलीफून बारलो रेंजर स्टेशन से मिला रखा था। उसने कहा—'बार्ट, जितनी जल्दी हो सके पहुँचो। यह आग बहुत बुरी मालूम होती है।' उसने टैलीफून हाथ में उठाये-उठाये ही बन्द कर दिया और कहा, 'मुझे शेबा से मिला दीजिये।' उसने सायरेन की आवाज सुनी। और मनमें कहा—'बहुत जल्दी काम शुरू हो गया है' उसने किनखियों से देखा और उसकी दृष्टि लाल रंग के भारी भरकम टैंकर पर पड़ी जो गरजता हुआ राज्यपथ पर जा रहा था। कारुक अपने स्थानों पर बैठे थे और पेटियों द्वारा सीटों के साथ जकड़े हुये थे। जैसे टैंकर घूम कर राज्य-पथ पर पहुँचा वे भी भूल गये।

सफ्फोक, शेबा और बारलो जिलों में जो भी आदमी काम कर रहे थे उन सभों ने अपने औजार डाल दिये। जो बातें कर रहे थे उन्होंने अपनी बात को अधूरा छोड़ दिया। वे गाड़ियां लेने भाग रहे थे और इन्जन चलाने लग रहे थे। जिन लोगों को टैलीफून द्वारा सूचना न पहुँच सकती थी उन्हें रेडियो द्वारा सूचना पहुँचाई जा रही थी। नेवा का लकड़ी का मिल भी धूतू बजा रहा था। सभी कह रहे थे, 'हाय राम, आग?' दूर जंगलों में लकड़ी काटने वालों ने अपने कुल्हाड़े और आरे हाथों से छोड़ दिये।

निरीक्षक ने अपनी गाड़ी रोक ली और प्रेषक के दफ्तर का रुख किया। प्रेषक अभी टैलीफून कर ही रहा था कि वह उसके पास जा पहुंचा।

'आर्न, आग कहां लगी है ?'

'गैबरो में। राज्यपथ के बिल्कुल निकट।'

'अच्छी बात। मैं वहां चलता हूँ।'

चंद मिनटों में ही सब मचानों पर आग की सूचना पहुँच गई। उन में से जो भी देख सकते थे सब धुएं को देखने लगे।

सैरोगोरडो से धुआं २१२ दर्जे की ओर था परन्तु मार्ग में एक ऊँची और चपटी मेढ़ थी इसलिये वहां से धुआं दिखाई न देता था। परन्तु थोड़ी देर में ही धुआं बुलन्द हो गया और मेढ़ के ऊपर से दिखाई देने लगा। पहरेदारिन का दिल उछलने लगा। इस बात से उसे बहुत विस्मय हुआ।

आग बढ़ी चली आरही थी।

आग के विषय में उसे जो बोध देखकर हुआ उससे कहीं अधिक रेडियो द्वारा हो गया। उन्हें आदेश मिला था कि टैलीफून पर अधिक भार न पड़े, इसलिये उन्हें रेडियो द्वारा समाचार प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिये। वह खड़ी रेडियो सुन रही थी। नाना प्रकार की आवाजें उसके कान में पड़ रही थीं।

उसका बहुत सा समय रेडियो के पास व्यतीत हो रहा था परन्तु फिर भी वह पैड़ पर घूमती रही और उस स्थान की ओर देखती रही जहां बिजली गिरी थी। आग डैडमैन कौरनर में लगी थी। इसका अभिप्राय यह न था कि उपत्यका में आग नहीं लग सकती।

निरीक्षक उस स्थान पर जहां आग लगी थी १२.११ पर पहुँच गया। सफ्फोक का रेंजर वहां मौजूद था और अपना काम ठीक विधि से कर रहा था। निरीक्षक ने निश्चय किया कि वह आग की जांच पड़ताल स्वयं करेगा। जिस स्थान पर आग लगी थी उसने उसका चक्कर

लगाया। उसके करने योग्य कोई विशेष काम न था। उसका मन चाहता था कि वह भी बेलचा या फावड़ा संभाले और खोदने लगे परन्तु इससे कार्यकर्ताओं के आत्मविश्वास को क्षति पहुँचने का डर था। यदि उन्होंने उसे बेलचा चलाते देख लिया तो वे समझेंगे कि स्थिति बहुत बिगड़ चुकी है। वह उस स्थान पर एक फालतू पहिये के समान था। रेंजर आग पर काबू पाने का पूरा-पूरा प्रयास कर रहा था और उसकी वहां आवश्यकता न थी। वह यही देख रहा था कि बाकी लोग अपना काम ठीक-ठाक कर रहे हैं या नहीं।

बार्ट बारलो से चलकर वहां १२-४२ पर पहुँच गया।

उसने कहा, 'निरीक्षक, ऐसा प्रतीत होता है कि तुमने पहले ही आग पर काबू पा लिया है। मुझे मालूम होता तो मैं आने में इतनी त्वरा से काम न लेता।'

दम लिये बिना ही बार्ट उस स्थान पर पहुँच गया जहां आग बहुत तीक्ष्ण थी, उसने एक भाग की अध्यक्षता संभाल ली। यह भाग बहुत लम्बा था और इसमें कई दरार थे। उसे आगे पीछे जाना पड़ता था। धूप बहुत तेज थी और धुआं नीचे की ओर आ रहा था। दो बजे तक वह कालक से स्याह हो गया और थक कर चूर हो गया।

मौसम का विशेषज्ञ डावे उस स्थान पर ढाई बजे के करीब पहुँचा। उसके लिये भी कोई विशेष काम न था। प्रेषक ने उसे वहां इसलिये भेजा था कि वह निकट जाकर देख सके कि आग किस प्रकार लगती है। डावे को यह दृश्य बहुत रोचक प्रतीत हुआ। वह बहुत देर तक उसे देखता रहा। धुएं के बादल कभी लच्छे बन-बन कर ऊपर उठते थे कभी लहरों के रूप में। यह दृश्य अति रोचक था परन्तु उसकी दिलचस्पी इस में थी कि इस आग का स्थानीय हवाओं पर क्या प्रभाव पड़ता है। पूर्वानुमान का शायद यह अधिक व्यावहारिक और तत्क्षणीय विषय सिद्ध हो।

प्रेषक आर्नल्ड सोरसन उस स्थान पर जहां आग लगी थी बिल्कुल नहीं गया। वह सफ्फोक के स्थान पर अपने दफ्तर में बैठा थी। उसका

मन चाहता था कि वह भी उस स्थान पर जाये और शारीरिक श्रम द्वारा अपने स्नायु तनाव को कम करे। प्रायः ऐसा होता है कि आग को देख कर इतना भय उत्पन्न नहीं होता जितना उसके विषय में कल्पना करने से। परन्तु पहले ही इस आग ने जो झाड़ियों और छोटे-छोटे वृक्षों में फैल रही थी कम से-कम तीन सौ एकड़ जंगल को ध्वस्त कर दिया था। बेपरवाही से फेंके हुये सिगरेट के टुकड़े ने जो हानि पहुँचाई थी वैसी उस सारे साल में भी न पहुँची थी।

इस समय तक प्रेक्षक ने समस्त जंगल को एक युद्ध क्षेत्र का रूप दे दिया था। बहुत से लोग और बहुत सा सामान पहले ही उस स्थान पर पहुँच गया था जहां आग लगी थी। उससे कहीं अधिक लोग अभी सड़क पर थे जिनका काम रात को शुरू होना था। उसने सान फ्रांसिस्को में स्थित मुख्य कार्यालय से बात की थी और प्रादेशिक कार्यालय से आस-पास के जंगल में चेतावनी दे दी गई थी। एक बार टैलीफून करने मात्र से अब वह टैहो-प्लूमाज़ और मैन्डोसीनो से एक दम आदमी भिजवा सकता था। दक्षिण की ओर पांच सौ मील की दूरी पर बरबैंक के हवाई अड्डे पर एक हवाई जहाज़ तैयार खड़ा था कि आवश्यकता पड़े तो एन्ज़-लीस से आग बुझाने वाले कारुक को उत्तर दिशा में उड़ा कर ले जाये।

तब अकस्मात आग पर काबू पा लिया गया। यह काम इतनी सुगमता से हुआ था कि कोई इसका अनुमान भी न कर सकता था। ३-३६ पर निरीक्षक ने स्वयं टैलीफून किया, 'हमने आग के गिर्द घेरा डाल दिया है, हो सकता है कि अब यह आगे न बढ़ने पाये।'

दर्रे के पार्श्व पर बिजली के आघात से उत्पन्न हुई थोड़ी सी आग चीड़ की पत्तियों के बिछौने में आगे बढ़ी जा रही थी।

आग ढलान के ऊपर की ओर बढ़ रही थी। परन्तु दर्रे से जो हवा उठती थी उसका भी उस पर प्रभाव पड़ता था और वह ढलान के इधर-उधर भी फैल रही थी। इन दोनों शक्तियों के परिणाम-स्वरूप आग फैलती और ऊपर को चढ़ती जाती थी।

आग अब वृक्ष की जड़ों से बीस फीट आगे बढ़ आई थी और ऐसे स्थान पर पहुँच गई थी जहां वृक्ष की टहनियों की पत्तियां भूमि पर गिरती थीं। यहां पत्तियों का बिछौना अधिक मोटा था। थोड़ा आगे बढ़ कर सूखी टहनियां बिखरी पड़ीं थीं जो और भी उत्तम ईंधन सिद्ध हो सकती थीं।

उससे भी आगे एक वृक्ष का तना गिरा पड़ा था। यह कुछ-कुछ गल गया था और इसका सिरा दीमक ने खा लिया था।

इस सूखे तने से आगे कुछ खुली जगह थी और उससे आगे वृक्षों के ठूँठ थे जिनमें से कुछ छोटे थे परन्तु कुछ दस फीट ऊँचे। वे बहुत घने थे और एक दूसरे में उलझे हुये थे। कई स्थानों पर उनकी निचली टहनियां जो प्रायः सूखी थीं आपस में जकड़ी हुई थीं।

पाँचवाँ दिन

बढ़ते-बढ़ते आग अधगले वृक्ष के सिरे तक आ पहुँची। इस लट्ठे का सारा सिरा धुआं देने लगा। लकड़ी गली हुई थी फिर भी ज्वाला उत्पन्न होने लगी। अब बीच के हिस्से से भारी धुआं उठने लगा। यह धुआं फैलता और क्षीण होता हुआ ऊपर को चढ़ गया और वृक्षों की चोटियों के ऊपर पहुँच कर दूसरी आग के धुएं से जो दूर दक्षिण पश्चिम की ओर लगी हुई थी मिल गया।

दफ्तर का द्वार खुला था परन्तु किसी ने आकर उसे खटखटाया। प्रेषक ने गर्दन ऊपर उठाई तो मौसम के विशेषज्ञ डावे हैलीडे को खड़ा पाया। उसने कहा—'डावे, अन्दर आ जाओ।'

'मुझे बताया गया है कि आप मुझे बुला रहे थे।'

'हां, मैं तुम से बात-चीत करना चाहता था। मैं मालूम करना चाहता था कि तुम हार्ट क्रीक नाम की आग को बुझाने में हमारी क्या सहायता कर सकते हो।'

'अच्छा, तो आप आग को भी विभिन्न नामों से पुकारते हैं। जब हम जलसेना में थे तो हम तूफानों को इसी प्रकार नामों से पुकारा करते थे।

परन्तु यहां तो इतनी आगें लगती हैं कि उन्हें अंकों से पुकारना अधिक उचित प्रतीत होता है।'

'न जाने कब से हम इस विभाग में आगों को नाम देते आये हैं। इससे उनका विवरण तैयार करने में सुगमता रहती है। यदि बहुत से स्थानों पर बिजली गिरने से आग लग जाये तो आदेश देने में आसानी रहती है। कई बार तो एक साथ तीस-तीस स्थानों पर आग लग जाती है। यदि उनके लिए नाम नियत न किये जायें तो पहरेदारों को उन्हें खोजने में बहुत कठिनाई का सामना करना पड़े। अब वे मानचित्र पर ही उस स्थान को देख सकते हैं और सूचना दे सकते हैं कि आग ऐक्टोप्लेज्म है, कैवलबरी है या बाईनियल।'

'अच्छे प्यारे नाम हैं।'

'मैंने ही ये नाम रखे हैं इसलिये मेरी प्रशंसा न कीजिए। इन नामों का एक क्रम है। यदि हम 'ऐड्डर' कहते हैं तो इसका अभिप्राय यह होता है कि जंगल के उत्तरी किनारे के साथ-साथ नगर 'ऐ' पंक्ति में है और पश्चिमी किनारे से 'द' भाग में चौथा है। मैंने यह भी ध्यान, रखा है कि नाम ऐसे हों जिनके विषय में सुनने वाले को भ्रम न हो।'

'अच्छा, जरा आप मौसम का हाल तो बतायें।'

'अभी तक कोई परिवर्तन नहीं। ब्रिटिश कोलम्बिया से परे एक भारी तूफान की आशंका है परन्तु वह कैसा होगा यह मैं अभी नहीं बता सकता।'

'आप गप तो नहीं लगा रहे हैं?'

नवयुवक ने दृष्टि ऊपर उठाई और उसके होंठों पर हल्की सी मुस्कान खेल गई। 'शायद आप मेरी परीक्षा ले रहे हैं।'

'मुझे इस पद पर होते हुये कई लोगों का परीक्षण करना पड़ता है। किसी ने कहा था कि आदमी ऐसा औज़ार है जो अन्य औज़ारों की अपेक्षा बहुत जल्दी खराब हो जाता है। हो सकता है कि एक बेलचा अथवा कुल्हाड़ा या टैंकर अथवा बुलडोज़र टुकड़े-टुकड़े हो जाये, परन्तु साधारण

रूप से आप यह अनुमान लगा सकते हैं कि वह कितना काम दे सकता है। किसी आदमी के विषय में ऐसा अनुमान लगाना कठिन है। आदमी बदलता रहता है। हो सकता है कि वह पिछले साल की अपेक्षा इस साल बिल्कुल ही बदल गया हो।'

पौंडेरोसा में 'स्लग्गर ओ नील' आग बुझाने वाले कारुक का अग्रजन था। उस साल महाविद्यालय से आये हुये पांच लड़के उसके सुपुर्द थे। किसी विशेष योजना के अनुसार उन्हें अधिक काल तक कैरीबो की झीलों के पास रखा गया था। उनका नित्य का काम मार्ग साफ़ करना था, परन्तु उनका विशेष कर्तव्य यह था कि यदि वहां अलग-अलग इलाके में आग लग जाये तो वे तुरन्त ही उसे बुझाने के लिये वहां पहुँच जायें।

ये लड़के बड़े आनन्द से रह रहे थे। उन्हें कई बार आग बुझाने के लिये भेजा गया था। आग अधिक तीक्ष्ण न होती थी। इससे उत्तेजना पाकर वे बहुत प्रसन्न होते थे। वे अपने तीस साला मुखिया की उसके शारीरिक बल के लिए बहुत प्रशंसा करते थे।

व्यवसायिक क्षेत्र में स्लग्गर का जो जीवन बीता था उसके लिये उसे स्थानीय प्रशंसा प्राप्त थी। उसका उपनाम उसके गुणों का सूचक था।

उस दिन स्लग्गर और ये लड़के पगडंडी से जा रहे थे। जो लड़का आगे-आगे जा रहा था वह ब्रश की झाड़ी के एक मोटे ठूंठ के पास जाकर रुक गया।

उसने कहा, 'इसके गिर्द से होकर जाने के लिये कौनसा मार्ग सबसे अच्छा है ?'

स्लग्गर जो पीछे-पीछे आ रहा था बोला, 'इसके गिर्द से होकर जाने की आवश्यकता नहीं। इस झाड़ी के बीच से ही गुज़रना होगा।'

स्लग्गर बड़े वेग से झाड़ी में घुस गया। उसके चलने से टहनियां मुड़ गईं और टूटने लगीं। आवेश के नाद लगाते लड़के भी उसके पीछे-पीछे हो लिये। वे उसके पीछे-पीछे कहीं भी जाने को तैयार थे।

बार्ले जूलिक जो जल सेना से मुक्त होकर आया था एक 'कैट

स्किनर' था। यह व्यवसाय बड़ा विचित्र था। यह शब्द कहां से निकला था यह बात भी दिलचस्पी से खाली नहीं। सीमान्त प्रदेश में प्राचीन काल में 'बुल स्किनर' हुआ करते थे। ये वे लोग थे जो बैलों की टोलियों को हांका करते थे और इस प्रकार सेंटा चलाते थे कि बैलों की खाल उधड़ जाती थी। उसके पश्चात् बैलों का स्थान खच्चरों ने ले लिया और अब ये लोग 'म्यूल स्किनर' कहलाने लगे। समय के साथ-साथ खच्चरें भी गायब हो गईं और उनका स्थान 'कैटरपिल्लर-ट्रैक्टरों' ने ले लिया। संक्षेप में इन्हें 'कैट' अर्थात् बिल्ली कहने लगे। अब उन लोगों को जो इस प्रकार के ट्रैक्टर चलाते थे 'कैट-स्किनर' अर्थात् बिल्ली की खाल उधेड़ने वाले कहा जाने लगा। यह शाब्दिक व्यंग और पर्यायवाचन का एक उदाहरण था।

बार्ले को जंगल में काम करते देखो तो ऐसा प्रतीत होता था मानो वह सत्ता प्राप्त करने और हिंसा करने की लालसा की पूर्ति कर रहा है। वह इस प्रकार बढ़ता था कि झाड़ियां और तीस-तीस फीट ऊँचे वृक्षों को कुचल डालता था। वह ऐसी ढलानों के ऊपर चढ़ जाता और उनसे नीचे उतर जाता जिन पर चढ़ना और जिनसे उतरना असम्भव प्रतीत होता था। कच्ची चट्टानों पर अथवा बाहर निकली हुई चट्टानों पर गड़-गड़ करता हुआ चढ़ जाता था।

एक लकड़ी चीरने वाला अपने आरे पर झुक गया और प्रशंसनीय रूप से कहने लगा, 'इसमें कोई सन्देह नहीं कि बार्ले बहुत कठोर है। उसका शरीर रबर की ठोस गेंद के समान गठीला है।'

एक अन्य व्यक्ति ने कहा, 'परन्तु वह तीन चौथाई मूर्ख है। कई बार वह इस प्रकार चलता है मानो लुढ़क जायेगा।'

सैकरेमैन्टो की दूसरी गली में 'बो फौक्स' का शब्द प्रयुक्त होता था। यह एक शराबी का नाम था जो कच्ची-से कच्ची और सस्ती-से सस्ती देशी शराब पीता था। जंगल में काम करने वालों की भाषा में 'बो फौक्स' 'पोगी' को कहते थे। इस शब्द का प्रयोग कब और कैसे आरम्भ हुआ

यह कोई नहीं कह सकता परन्तु इसका अभिप्राय ऐसा व्यक्ति था जो जंगल में कभी-कभी काम करता था और जो कोई हुनर न जानता था। यह उन लोगों की श्रेणी का होता था जो भारी संख्या में आग बुझाने के लिये सामयिक रूप से भरती किये जाते थे। जिस व्यक्ति का यह नाम था वह, जैसे उसके नाम से विदित होता है, छोटे कद का महत्वहीन व्यक्ति था। उसका आगे को बढ़ा हुआ चेहरा लोमड़ के समान था और उसे सदैव यह भय रहता था कि कोई उसका पीछा कर रहा है। लड़कपन से ही उसका तिरस्कार होता रहा था और अब उसके मन में नाना प्रकार के डर बैठ गये थे। उसे पुलिस के सन्तरी से डर लगता था। उसे भय रहता था कि कोई उस पर प्रहार न कर दे और उसे बुरे-बुरे सपनों का भय रहता था। परन्तु सबसे ज्यादा उसे भय यह था कि कहीं कोई उसे बन्द न कर दे। यदि उसे सामने कोई साफ़ दीवार दिखाई देती थी या पीछे द्वार बन्द होने की ध्वनि सुनाई देती थी तो वह भयभीत होजाता था।

साढ़े पांच बजे हार्ट क्रीक पर बिल्कुल शान्ति छा गई। आदमियों की पंक्तियां हाजरी लगाने वालों के सामने से गुजर रही थीं जो उनकी गिनती किये जा रहे थे। निरीक्षक उस स्थान पर गया जहां मुख्य कार्यालय के कर्मचारी खड़े थे और बार्ट से कहने लगा—

'बार्ट, मैं सफ्फोक वापिस जाने का विचार कर रहा हूँ।'

'हां, हां, आप जा सकते हैं। हम यहां की देखभाल अच्छी तरह कर सकते हैं।'

'बार्ट, तुम भी जल्दी ही वापिस आ जाना। तुम बहुत थके-थके मालूम पड़ते हो।'

बार्ट ने कहा—'मैं ठीकठाक हूँ, रात को सो नहीं पाया परन्तु मुझ जैसा धुँआखोर इन बातों का आदी होता है।'

निरीक्षक चला गया तो बार्ट की बैन रोच से बातचीत हुई। वह शेबा ज़िले का रेंजर था और उसका बहुत पुराना मित्र। उसने कहा—

'मैं सचमुच थक गया हूँ। परन्तु मैं निरीक्षक के सम्मुख यह बात स्वीकार करने को तैयार नहीं।'

छठा दिन

लट्ठे का सिरा जल कर राख का ढेर बन गया था। लट्ठे का बीच का हिस्सा भी जल चुका था। परन्तु प्रातः के झुट-पुटे में उस के आगे की नोक अभी भी जल रही थी।

रात की परिस्थितियां पहले से अधिक अनुकूल न रही थीं परन्तु आग बहुत फैल चुकी थी और प्रचण्ड हो चुकी थी। अब उसकी गर्मी से ही पत्तियां और टहनियां जलने लगती थीं। जब एक टहनी जलती तो उसकी गर्मी से उससे अगली टहनी को आग लग जाती। हवा के अभाव से आग को संचित होने का अवसर मिल गया।

अब आग लट्ठे से दस फीट आगे बढ़ गई थी। इसका अग्रभाग ३० फीट चौड़ा था।

इसका अगला सिरा तरुण वृक्षों के एक झुण्ड के पास पहुँच गया। एक छोटे पौधे के नीचे पड़ी पत्तियां जलने लगीं। गर्मी की निकटता ने इस पौधे की पत्तियों को पहले ही सुखा दिया था। जैसे आग उसकी जड़ों की ओर जाने लगी उसने वृक्ष की गूँद और तेल को वाष्प का रूप दे दिया। हवा के साथ मिलकर इस वाष्प ने एक विस्फोटक मिश्रण उत्पन्न कर दिया। गर्मी की तेजी से इस मिश्रण ने आग पकड़ ली और पांच सैकेण्ड तक समस्त वृक्ष जलता रहा। उसके पश्चात् ज्वाला जितनी शीघ्रता से उत्पन्न हुई थी उसी शीघ्रता से बुझ गई।

इस ज्वाला के सहसा भड़क उठने से आग की अगली लपट एक फुट आगे सरक गई। अब उसने तरुण वृक्षों के एक झुण्ड को लपेट में ले लिया और ज्वाला ऊँचे उठने लगी। आपस में जकड़ी हुई सूखी टहनियों में चटकने की ध्वनि उत्पन्न होने लगी। एक क्षण और गुजरा था कि सारा झुण्ड का झुण्ड आग का बगूला बन गया। उसमें से नारंजी

रंग की ज्वाला उठने लगी। धुएं का एक धूसर गुबार स्तम्भ के रूप में वृक्षों के शिखर से ऊपर उठने लगा। आकाश में अभी अन्धेरा छाया था।

साढ़े पांच बजे। क्या सचमुच इस समय साढ़े पांच बजे हैं? जूडिथ गोडोए की आंखों में निन्द्रा छाई थी परन्तु उसने एक आंख खोलकर दृष्टि मचान के चारों ओर दौड़ाई। वह अभी कम्बलों में लिपटी पड़ी थी। उसने कम्बल उतार कर एक ओर फेंक दिये, खड़े होकर एक अंगड़ाई ली और पूर्व दिशा में नज़र डाली। उसका मुंह खुले का खुला रह गया। जिस वातावरण को देखने का उसे अभ्यास था वह लोप हो चुका था। उसने ज़रा आंख झपकी।

रिवर्स रिज के ऊपर उत्तर पूर्व की दिशा में होवल माऊंटेन की पृष्ठ भूमि पर हलके धूसर रंग का स्तम्भ सा उठता दिखाई दिया जो उसने इससे पूर्व कभी न देखा था।

वह दौड़ी हुई पैड़ पर पहुँची। दूरबीन से देखने पर वह स्तम्भ निकट आता दिखाई दिया। यह वास्तव में धुआं प्रतीत होता था।

वह भाग कर वापिस आई। उसने ऐलीडेड को घुमाया और सूराख में से झांक कर क्षितिज चाप को देखा। ६६'५ दर्जे। जहां उसने बिजली को गिरते देखा था वहां से केवल १'५ दर्जे उधर को। हो सकता है यह अन्तर धुएँ के उड़ने के कारण उत्पन्न हुआ हो।

दीर्घ, लघु, दीर्घ...जैसे कोई व्यक्ति गहरे पानी में गोता लगाकर बाहर निकलता है वैसे ही वह नींद की गहराइयों से बाहर आया :

दीर्घ, लघु, दर्घ—अधूरी चेतना। बिस्तर से बाहर आना, कमरे में टटोलते हुये चलना : दीर्घ, लघु...

उसने झटके से रिसीवर उठाया और पूर्ण रूप से जागृत हो तीक्ष्ण शब्दों में कहा—

'बारलो स्टेशन। मैं रेंजर बार्टले बोल रहा हूँ।'

'बार्ट, मुझे धुआं उठता दिखाई दिया है। मैं सैरोगोरडो से बोल रही हूँ। मुझे ६६'५ दर्जे पर धुआं दिखाई दिया है।'

'अच्छी बात ! जूडिथ, घबराओो मत । ज़रा ठहरो मैं लिख लूं ६६'५ दर्जे और समय है ५.३१।'

'हां, ठीक है।'

'उदग्र कोण ?'

'वार्ड, मुझे यह बात भूल गई। अभी मैं फिर देखती हूँ।'

'नहीं, ठहरो। यह रिवर्स माऊंटेन के पीछे है। तुम्हें धुएं का निचला सिरा ज़रूर दिखाई दिया होगा। तुम्हारा क्या विचार है ? क्या यह बिजली गिरने की करतूत है ?'

'जहां बिजली गिरती दिखाई दी थी उससे १'५ दर्जे परे।'

'अच्छी बात। अब सुनो, जूडिथ, घबराने की कोई बात नहीं। उस पर नज़र रखो ! यदि इसके स्थान में कोई अन्तर आये या कोई और विशेष बात हो तो मुझे सूचना दो। यदि कोई विशेष बात न हो तो टैलीफून करने की आवश्यकता नहीं। नमस्कार।'

वार्ड ने पहरेदारिन को बड़ी शान्ति से आदेश दिया परन्तु उसकी अपनी सांस तेजी से चल रही थी। इस लड़की के लिये यह पहली आग थी। उसने स्वयं इस प्रकार की हज़ारों आगें देखी थीं। परन्तु इतना होते हुये भी उसने दो बार लम्बी सांस ली। फिर उसने रसोई घर में बर्तन खड़कने की आवाज़ सुनी। उसकी पत्नी कॉफ़ी तैयार कर रही थी। उसके पश्चात् हौर्स माऊंटेन की मचान से सन्देश आया। वही दीर्घ, लघु, दीर्घ।

'३२० दर्जे पर धुआं दिखाई दिया है। सोमवार को बिजली भी इसी स्थान पर गिरी थी। आग का निचला भाग दिखाई नहीं देता। पूर्व की दिशा में थोड़ा-थोड़ा धुआं उठ रहा है। साउथ फोर्क की नौर्थ फोर्क के उत्तर की मेढ़ से आगे। अनुमानित फासला १० मील के लगभग होगा। होवल माऊंटेन का दक्षिणपूर्वी पार्श्व है। सम्भव है यह डियर हाऊंड में १२ वें भाग में है या...'

'अच्छी बात । सैरोगोरडो से इस बात के विषय में पहले ही सूचना मिल चुकी है ।'

ऐसा प्रतीत होता था जैसे बोलने वाले को निराशा हुई है । उसने जल्दी से टैलीफून रख दिया ।

बार्ट ने भी रिसीवर रख दिया । उसने जल्दी से स्लिपर पहने और नहाने के कपड़े ओढ़े ही दफ्तर का रुख किया । वह भागा जा रहा था । भागते-भागते ही उसकी दृष्टि आकाश की ओर गई । मौसम में कोई अन्तर न आया था । यह बुरी बात थी । परन्तु इतनी बुरी नहीं ।

वह कन्ट्रोल रूम जा पहुँचा, और उसने रेडियो का स्विच घुमाया । रेडियो को गरमाने में कुछ समय व्यतीत हुआ । इस बीच में उसने दीवार पर लटके मान चित्र पर जिसमें प्रत्येक मचान के लिये एक-एक पिन गड़ा था ध्यान दिया । उसने दो धागों को मानचित्र पर लगा कर देखा एक सैरोगोरडो से ६६.५ दर्जे उत्तर पूर्व की ओर जाता था और हौर्स माऊंटेन से ३२० दर्जे उत्तर पश्चिम की ओर । धागे एक दूसरे को अनियन क्रीक के उत्तर में स्थित मेढ़ की ढलान पर काट रहे थे । आदेश देने से पहले वह चाहता था कि एक और मचान से उसे सूचना प्राप्त हो जाये ।

उसने माईक्रोफोन में बात की । ज़ैड १७ ज़ैड १४२ को बुला रहा है । ज़ैड १४२ आओ । ज़ैड १४२ आओ । उत्तर की प्रतीक्षा में वह थोड़ी देर के लिये चुप हो गया । स्लग्गर ओ नील कोई बुद्धिमान व्यक्ति न था । परन्तु इतने अलग-अलग स्थान पर स्थित कारक के अधिपुरुष के लिये ज़रूरी था कि वह प्रातः के इस समय रेडियो सुन रहा हो । बार्ट ने फिर कहा—'ज़ैड १७ ज़ैड १४२ को बुला रहा है । ज़ैड १७ ज़ैड १४२ को बुला रहा है । ज़ैड १४२ आओ ।' उसे घबराहट होने लगी । वह सोचने लगा कि रेडियो में क्या त्रुटि उत्पन्न हो सकती है । जो जो त्रुटियां उत्पन्न हो सकती हैं वे सभी एक-एक करके उसके मस्तिष्क में आईं । तब सहसा एक स्पष्ट आवाज़ सुनाई दी और उसने झट पहचान लिया कि यह स्लग्गर ओ नील की आवाज़ है जो २५ मील की दूरी से दर्रों और मेढ़ों पर से होकर आ रही है ।'

'ज़ैड १४२ ज़ैड १७ से, ज़ैड १४२ ज़ैड १७ से। हां-हां, बात करो। ज़ैड १७, बात करो।'

बार्ट ने ज़ाहिर दारी को छोड़ कर बात शुरू की :

'स्लग्गर, मैं बार्ट बोल रहा हूँ। अनियन क्रीक के ऊपर धुआं दिखाई दिया है। सुनो, अनियन क्रीक के ऊपर धुआं दिखाई दिया है। तुम्हारा कारुक इस के निकटतम है। अपने आदमियों को वहां एक दम भेज दो। अपने आदमियों को भेज दो, क्या तुम्हें मेरी बात सुनाई दी?

'मैं तुम्हारी बात समझ गई हूँ, बार्ट।'

'अच्छी बात। तैयार हो जाओ और रेडियो सुनते रहो। मैं हैमलिन प्वाइंट से भी सूचना प्राप्त करना चाहता हूँ। फिर एक मिनट बाद में तुम्हें आदेश दूंगा। एक मिनट में वापिस आकर मैं तुम्हें आदेश दूंगा। ज़ैड १७ ने अपनी बात समाप्त कर दी है। जैड १७ ने अपनी बात समाप्त कर दी है।'

युवक उसके गिर्द खड़े चिल्ला रहे थे। 'स्लग्गर, क्या बात है? यह कौन था? क्या कहीं आग लगी है?'

रेडियो से हट कर जब वह सीधा खड़ा हो गया तो वे चुप हो गये।

'आओ—जवानो, हमें चेतावनी मिली है। एक कुल्हाड़ा, तीन बेलचे, दो गैंतियां, भोजन का सामान साथ चलेगा। प्रत्येक दो दो समय का भोजन साथ ले ले। एक रेडियो सैट भी लेना होगा। मैं आदेश की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।'

कारुक को तैयारी का आदेश देकर बार्ट ने चैन की सांस ली। पांच उत्साही नवयुवकों का कारुक था और उनका अधिपुरुष अभ्यस्त व्यक्ति था। आशा थी कि वे शीघ्र ही उस स्थान पर पहुँच जायेंगे जहाँ आग लगी है और पूर्व इसके कि पराह्न की गर्मी और हवा उसे तीक्ष्ण कर दे वे उस पर काबू पा लेंगे। परन्तु उन्हें बीच में अवकाश भी अवश्य मिलना चाहिये और साथ ही यह बात भी थी कि अवकाश देने से आग के प्रचण्ड होने का भय था।

वह घबराया हुआ उठा और फर्श पर अपने स्लीपर घिसराता हुआ चला। आग ऐसे अलग-थलग स्थान पर लगी थी कि उसके पास कोई अन्य ऐसा कारुक न था जिसे वह तुरन्त भेज सकता। स्लग्गर में यद्यपि बहुत से गुण थे परन्तु योजना बनाने की योग्यता उसमें न थी।

जिस आग के कारण समस्त बारलो ज़िले में तहलका मच गया था वास्तव में अभी तक भयावह रूप धारण न कर पाई थी। वृक्षों के झुंड को हड़प करने के लिये वह कुछ देर के लिये प्रचण्ड हो गई थी। उषा काल से पहले दर्रे के नीचे की ओर हवा के कुछ झोंके चले। आग ने इन झोंकों का पूरा लाभ उठाया। जिस दिशा में वह पहले बढ़ रही थी हवा के कारण अब उसका बढ़ाव उस दिशा में हो गया जो इसके साथ समकोण बनाती थी। अग्र भाग के कुछ हिस्से में आग ऊपर की ओर कोई पचास गज़ आगे बढ़ गई थी। वह घास-फूस के बिछौने को, झाड़ियों को और छोटे-छोटे वृक्षों के झुंडों को जलाए जा रही थी।

१-१३ पर एक फुरतीला व्यक्ति बेलचे द्वारा पत्तियां साफ करके आग के बढ़ाव को रोक सकता था। धीरे-धीरे वह आग के गिर्द घेरा डाल कर उस पर काबू पा सकता था। आग उसी स्थान पर जल-जल कर समाप्त हो जाती। स्लग्गर और उसका कारुक आग से उस समय इतनी दूर थे कि वे उसके पास आध घण्टे में पहुँच सकते थे। इस समय यह अनुमान लगाया जा सकता था कि आग पर काबू पा लिया जायेगा और वह बढ़ने न पायेगी परन्तु उसी क्षण एक ऐसी घटना हुई कि उसने स्थिति को बिल्कुल ही बदल दिया। इस प्रकार हज़ारों घटनाएँ हो सकती थीं परन्तु उनमें से एक ही हुई थी।

यह घटना क्या थी ? दर्रे के नीचे की ओर जब हवा चलने लगी उससे पूर्व ही आग चीड़ के एक ऐसे शंकू के पास पहुँच गई थी जो एक सूखी टहनी के साथ अटका हुआ था। थोड़ी देर में ही टहनी और शंकु दोनों जलने लगे। कुछ मिनट के पश्चात् टहनी उस स्थान से टूट गई जहां शंकू उसके साथ अटका हुआ था।

सहारा हट जाने से शकूं नीचे की ओर लुढ़क पड़ा। वह दो फीट नीचे गया था कि कुछ देर के लिये रुक गया परन्तु वह पुनः लुढ़कने लगा और एक फुट और नीचे चला गया। यहां पहुँच कर उसकी गति में वेग आ गया और वह तेजी से नीचे की ओर लुढ़कता गया। वह दर्रे के पार्श्व पर नीचे को ओर लुढ़कता चला जा रहा था। जहां-जहां से गुज़रता था वहीं-वहीं चिंगारियां छोड़ता जाता था। आखिर वह एक लट्ठे के पास जाकर रुक गया। वह सौ गज़ नीचे लुढ़क आया था।

१०० गज़ भूमि पर धुआं उठने लगा। जहां कहीं सूखी टहनियां पड़ी थीं वहां जोर की आग भड़क उठी। कई स्थानों पर ज्वाला उत्पन्न हो रही थी। थोड़ी देर में ये स्थान मिल कर एक हो गये। जिस लट्ठे के पास आकर शकू रुका था उसमें से तेज़ी के साथ धुआं निकलने लगा। यत्र-तत्र कोई छोटा वृक्ष जल उठा। झाड़ियों से आग के चटकने की आवाज़ आने लगी। इतनी गर्मी हो गई कि हवा ऊपर को उठने लगी। नीचे की ओर से हवा आई और उसने ज्वाला को भड़का दिया।

इस प्रकार थोड़ी ही देर में आग कई गुना अधिक खतरनाक हो गई थी। इसके परिमाप में तो अधिक अन्तर न आया था परन्तु नीचे की ओर इसका बढ़ाव होने से इसके गिर्द जो रेखा तैयार करनी थी उसका परिमाप अब चार गुना हो गया था।

परन्तु अभी भी आग ने स्थाई रूप धारण न किया था, यदि शंक के लुढ़कने से पूर्व इस पर एक व्यक्ति काबू पा सकता था तो अब छः व्यक्ति इस काम को कर सकते थे।

रुलग्गर का कारुक मेढ़ पर पहुँचा। चढ़ाई में उनकी गति मंद रही थी परन्तु अब वे अनियन क्रीक के मुहाने पर थे और उनका मार्ग उतराई का था।

रुलग्गर आगे-आगे था। वे एक मोड़ पर मुड़े।

वह रुक गया और चिल्लाकर बोला, "वह देखो, उधर आग लगी है," लड़कों ने उसके पीछे आकर झुंड बना लिया। वे भी देखने लगे।

दर्रे के पेंदे से ऊपर लगभग मध्य में धुएं की एक मन्द सी लकीर दिखाई दी। ऊपर जाकर धुआं गहरा और एक स्तम्भ के रूप में दिखाई देता था।

उनमें से एक ने कहा, "आग आगे नहीं बढ़ रही है, हम उस पर अवश्य काबू पा लेंगे।"

दूसरे ने कहा, "इसका अग्रभाग बहुत फैला हुआ है। यदि दर्रे से हवा उठने लगे, तो बहुत कठिनाई का सामना होगा।" वह सबसे छोटा था और उसे 'शौर्टी' कहकर पुकारते थे। वह चलते-चलते थक गया था और पसीने से तर था।

वे बहुत थोड़ी देर रुके थे। स्लग्गर ने गरज कर कहा—'चलो।' यह कहते-कहते वह झाड़ियों और वृक्षों को पार करता हुआ तीक्ष्ण ढलान से नीचे की ओर बढ़ा। आवेश में आकर लड़के भी उसके पीछे पीछे चिल्लाते हुए दौड़े। सबसे छोटा लड़का थोड़ी देर के लिये हिच-किचाया। वह थक गया था। उसने यह भी महसूस किया कि यदि पग डण्डी पर कुछ और आगे बढ़कर वृक्षों और झाड़ियों में घुसा जायेगा तो आग के पास सुगमता से और जल्दी पहुँचने की सम्भावना होगी। परन्तु वह भी बाकियों के पीछे पीछे हो लिया। वह कभी फिसलता, कभी हाथों के बल चलता। वह औरों से पचास फीट पीछे रह गया।

दस मिनट पश्चात् वे हांपते हुये दूसरी ओर पहुँच गये जहां लट्टे के ऊपरले सिरे से धुआं निकल रहा था। स्लग्गर उस स्थान से कोई बीस फीट पर जाकर रुक गया। वह भी हांप रहा था।

उसने हांपते हुये ही कहा, 'सुनो, तुम सब लोग दर्रे के निचले पार्श्व के साथ-साथ फैल जाओ। किन्तु बताओ तुम में से कौन गायब है?'

'शौर्टी नहीं आया। एक चट्टान को पार करते हुये वह फिसल गया और उसके घुटने पर चोट आगई। वह धीरे-धीरे आ रहा है।'

'हाय राम, आजकल के नौजवान चट्टान को भी पार नहीं कर सकते! अच्छी बात, तुम चार तो काम पर लगो।'

जिस लड़के ने रेडियो उठाया हुआ था वह बोला, 'रेडियो का क्या करना है ?'

'मुझे बार्ट से बात करनी है। परन्तु इसमें दस मिनट लग जायेंगे। मैं पहले आग का निरीक्षण कर लूं। मैं देखना चाहता हूँ कि हमें क्या करना है। तुम इतनी देर में उस ओर रेखा तैयार करो।'

जंगल की आग का मुकाबला करने की विधि बहुत सरल है। उसे बुझाने का तो कोई उपाय हो ही नहीं सकता। इसलिये आग के गिर्द एक रेखा बना दी जाती है जिससे आग फैल नहीं पाती। वह घेरे के अन्दर ही जल कर समाप्त हो जाती है। यह रेखा साधारणतः एक फुट या दो फुट चौड़ी होती है। रेखा में से समस्त घास-फूस हटा दिया जाता है, जिससे भूमि के साथ-साथ चलने वाली आग को ईंधन प्राप्त नहीं होता और वह बुझ जाती है। भूमि के ऊपर जो टहनियां लटकती हैं उन्हें भी काट देना होता है। झाड़ियों को साफ़ कर देना होता है। बड़े वृक्षों की उँची-ऊँची टहनियां वैसे ही छोड़ दी जाती हैं क्योंकि उन्हें आग लगने की सम्भावना नहीं होती। यदि इन टहनियों को आग लग जाये तो भारी आपत्ति आ जाती है और आग एक भयानक रूप धारण कर लेती है। इसे तब शिखर-अग्नि का नाम दिया जाता है। शिखर-अग्नि की ज्वाला ऊँचे-से-ऊँचे वृक्ष से भी ऊपर तक जाती है। वह एक वृक्ष से दूसरे पर पहुँच जाती है और रेखा इस सूरत में कोई काम नहीं देती। यदि हवा का वेग अधिक न हो और आग शिखर-अग्नि का रूप धारण न करे तो रेखा आग बुझाने का अति उत्तम उपाय है। यह एक चमत्कार ही प्रतीत होता है। इस चत्मकार का कारण यह है कि आग की गर्मी ऊपर को जाती है और इधर-उधर नहीं फैलती।

कहने को तो छः आदमियों के कारुक के साथ स्लग्गार ओ नील आग के पास ६ : २३ पर पहुँच गया था। वास्तव में उनमें से एक का घुटना टूट गया था और अभी तक वह उस स्थान पर न पहुँचा था। बाकी में से

भी स्लग्गार कुल्हाड़ा लेकर आग का निरीक्षण करने चल पड़ा था। उसका ऐसा करना उचित और ठीक ही था।

इसलिये रेखा तैयार करने के लिये चार आदमी रह गये थे। उनके पास तीन बेलचे और एक गैंती थी। दो मील की भाग-दौड़ के पश्चात् और दर्रे को पार करने में वे थक कर चूर हो गये थे। जिस समय उन्हें पूरे आवेश से काम करना चाहिये था उस समय उन्हें आराम की आवश्यकता महसूस हो रही थी।

अकस्मात औज़ारों की समस्या भी साथ ही खड़ी हो गई। स्लग्गार ने आदेश दिया था, 'एक कुल्हाड़ा, तीन बेलचे और दो गैंतियां, परन्तु दर्रे के पथरीले पार्श्व पर बेलचे काम न दे सकते थे। गैंती जिसके एक ओर एक फुट चौड़ा कुदाल था और दूसरी ओर एक प्रकार का चौड़े दांतों का हेंगा था, इस स्थान से घास-फूस हटाने और मिट्टी की तह तक पहुँचने के लिये सबसे अधिक उपयोगी औज़ार था। उन्हें कुल्हाड़े की भी आवश्यकता थी परन्तु कुल्हाड़ा स्लग्गार ले गया था।

जिस आदमी ने गैंती सम्भाली थी वह जल्दी-जल्दी भूमि साफ़ करता हुआ आगे को बढ़ रहा था। वह एक संकीर्ण रेखा बनाता जाता था जो तत्पश्चात् चौड़ी की जा सकती थी। उसके पीछे-पीछे एक आदमी बेलचा लिये आ रहा था और अपनी सामर्थ्य के अनुसार जो कर सकता था कर रहा था। आशा थी कि इस रेखा से आग कुछ न कुछ रुक जायेगी।

दो आदमी जो बेलचे लिये हुये थे उस लट्ठे पर पिल पड़े, जिससे धुआं निकल रहा था। यह लट्ठा छः फीट लम्बा था और इसके गिर्द रेखा बनाना सुगम प्रतीत न होता था। इसलिये वे उस स्थान पर बेलचे चलाने लगे, जहां लट्ठे को आग लगी थी। परन्तु उनकी चेष्टा का कोई लाभ न हुआ। कुछ मिनट पश्चात् छठा आदमी गैंती लिये लंगड़ाता हुआ आया। वह जलती हुई घास-फूस हटाने में लग गया, परन्तु कुछ देर में ही उसकी गैंती इतनी तप गई कि उसका बहुत सा ताव जाता रहा। उसका काम भी निष्फल रहा। बेलचे वाले आदमियों ने पथरीली ज़मीन से मिट्टी

खोद खोद कर आग पर डालनी शुरू की। इससे आग बुझी तो नहीं किन्तु कुछ समय के लिये शान्त हो गई।

इतनी देर में स्लग्गर आग का चक्कर पूरा कर उसके दूसरी ओर पहुँच गया। तीन आदमी लट्ठे पर पिल रहे थे जब कि आग के दस में से नो भाग अभी काबू में न आये थे। वह उन्हें फटकारने लगा। उसने उनमें से दो को आग के ऊपरले सिरे की ओर भेज दिया। जो आदमी लंगड़ा रहा था, उसे उसने बेलचा दिया और नीचे की रेखा पर लगा दिया। उसका काम यह था कि किसी लुढ़कते हुए शंकू को आगे न जाने दे।

स्वयं वह आग के अग्र भाग पर लग गया और झाड़ियों और पौधों को, जहां कहीं आवश्यकता थी, साफ करने लगा। अपना अधिकार जमाये रखने की इच्छा में उसे रेडियो लगाना और सूचना देना भूल गया।

बार्ट सवा सात बजे नाश्ता कर और कपड़े पहन दफ्तर में आ गया। वह काफ़ी देर वहां बैठा रहा, जिससे उसे घबराहट होने लगी। इस समय तक स्लग्गर को चाहिये था कि वह कोई सूचना देता और बताता कि आग कैसी है और क्या वह अपने छः आदमियों के कारुक से उस पर काबू पा सकता है? वर्तमान दशा में किसी सूचना का न होना कुछ भी ज़ाहिर न करता था। दशा बुरी भी हो सकती थी और अच्छी भी। परन्तु सूचना के अभाव ने बार्ट को परेशान कर दिया था। मचानों से सूचना आई थी कि कुछ देर धुआं बढ़ता गया और फिर समाप्त हो गया। इसका अभिप्राय यह था कि स्लग्गर के आदमियों ने कुछ काम किया है।

बारलो का आग बुझाने वाला कारुक भी रवाना हो चुका था परन्तु उसे आदेश दिया गया था कि अनियन फ्लैट पर सड़क के सिरे पर रेडियो लगाये और पगडंडी पर पांव रखने से पहले आदेश की प्रतीक्षा करे। बार्ट इस समय यही कुछ कर सकता था, उसने सफ्फोक में स्थित प्रेषक से बात करने का निश्चय किया। यदि वे इस आपत्ति के विषय में आपस में मिल कर परामर्श करेंगे तो इसमें कोई हरज की बात न थी।

प्रेषक को कोई घबराहट न थी। उसने टेलीफून पर कहा, 'कहो भाई, मैंने सुना है कि तुम्हें किसी मामूली सी कठिनाई का सामना करना पड़ गया है।'

'भगवान करे कठिनाई मामूली हो। स्लग्गर ने अभी तक कोई सूचना नहीं भेजी।'

'आप कारुक के एक अधिपुरुष से सब बात की आशा नहीं कर सकते। मैं दावे से कह सकता हूँ कि वह कुल्हाड़ा चलाने में लगा है और रेडियो पर बात करने में समय गंवाना नहीं चाहता। सैरोगोरडो से जो समाचार आया है, उससे प्रतीत होता है कि वह घण्टे भर में आग पर काबू पा लेगा।'

'मुझे विशेष घबराहट तो नहीं, परन्तु वहां सहायता पहुँचाना बहुत कठिन है।'

प्रेषक चैन से बात कर रहा था। अब वह गम्भीर होकर बोला, 'बार्ट, मैं हवाई जहाज़ की तैयारी का आदेश दे रहा हूँ। मैं स्वयं वहां जाना चाहता हूँ। हो सकता है मैं वहां दस बजे तक पहुँच जाऊँ। क्या वहां कोई ऐसा स्थान है जिस पर हवाई जहाज़ से छतरी द्वारा कूदा जा सके? क्या मैं कूदने वालों को तैयार कर लूँ?'

'मुझे मालूम नहीं। रिवर्स मैडो है परन्तु वह इतना निकट नहीं। मेड़ के साथ-साथ एक दो स्थान हैं परन्तु मैं यह न चाहूँगा कि कोई वहां हवाई जहाज़ से छलांग लगाये।'

'कुछ भी हो, मैं उन्हें तैयार किये देता हूँ। यह तो बताओ इस आग का क्या नाम है?

'स्पिट कैट, नाक कटी...'

'स्पिट कैट काफ़ी है। अच्छी बात। भगवान भला करे।'

प्रेषक ने रिसीवर रख दिया और व्यावहारिक रूप से रजिस्टर में लिखा, 'स्पिटकैट'। इस साल पौंडेरोसा के जंगल में १६३ बार आग लग चुकी थी। यह केवल १६४वीं आग थी।

मौसम के विशेषज्ञ डावे हैलीडे ने आग देखी, पर वह उन सबसे दूर बैठा था। उसकी दृष्टि में आग १०११ और १०१४ आईसोबारों के बीच में, प्रशान्त महासागर के तूफान के बढ़ते हुये सर्द मुख से पूर्व की ओर लगभग दो सौ मील की दूरी पर थी। परिणाम-स्वरूप तूफान के मध्य की ओर चलती हुई हलकी दक्षिणी हवा पोंडेरोसा के जंगल पर छाई रहेगी और दोपहर बाद उसका वेग बढ़ने लगेगा। रात को वर्षा की सम्भावना थी। उसने यही पूर्वानुमान किया था। इस मौसम का आग पर क्या प्रभाव पड़ेगा, यह जानना उन लोगों का काम था जिन पर आग बुझाने का दायित्व था।

निरीक्षक को आग की सूचना मिली परन्तु जहां तक उसका सम्बन्ध था, यह एक स्थानीय मामला था। उसे विश्वास था कि प्रेषक और रेंजर मिलकर उस पर काबू पा लेंगे। परन्तु उसे बार-बार यह विचार आता रहा कि एक ऐसी आग जल रही है जिस पर अभी तक काबू नहीं पाया गया था। सितम्बर के महीने में···

प्रेषक ने भी आग को काफी अन्तर से देखा था। यह इस साल की १६४वीं आग थी। वह प्रत्येक आग के विषय में चिन्ता किया करता था परन्तु इतनी बार आग लगी थी कि अब उसमें चिन्ता करने की क्षमता न रही थी। 'स्पिटकैट' कोई विशेष खतरनाक आग न थी। वह बढ़ न रही थी। बस एक ही कठिनाई थी कि यह एक अलग-थलग स्थान पर लगी थी। निकटतम सड़क से यह सात मील के अन्तर पर थी और मार्ग कच्चा था।

बार्ट को आग की चिन्ता खाये जा रही थी। उसे मालूम न था कि क्या हो रहा है। वह क्षण-क्षण बेचैन हुआ जाता था। आग जिधर को भी बढ़ती, वह एक सुन्दरवृक्ष को विध्वंस कर देती। बार्ट को वृक्ष अपने बच्चों के समान प्यारे थे।

सैरोगोरडो की मचान से जूडिथ गौडोए ने वास्तव में धुआं उठता देखा था, परन्तु उसके लिये भी यह आग बहुत मामूली और दूर की

चीज़ थी। कभी धुआं बढ़ जाता, कभी दब जाता। परन्तु यह क्षितिज पर शिविर की आग के धुएं के समान ही प्रतीत होता था।

जंगल में जितने लोग थे उन सब में से स्लग्गर ओ नील और उसके पांच आदमी ही ऐसे थे जो आग के इतने निकट थे कि उन्हें उसकी गर्मी का आभास हुआ था और उसके धुएं ने उनका गला बन्द कर दिया था।

वह एक घंटे से काम में लगे थे। ढलान पर बहुत तेज़ धूप पड़ रही थी। हवा बंद हो चुकी थी। दर्रे के पार्श्व पर सुबह की टिकी हुई गर्मी पड़ रही थी। प्रारम्भिक जोश बहुत देर हुए समाप्त हो चुका था। वे सोच रहे थे कि मार्ग साफ़ करने का काम कितना अच्छा था, उनका मन वापिस जाने को चाह रहा था।

फिर भी वे तन-मन लगाकर काम कर रहे थे। अभी भी उनका दिल उठा हुआ था। कुछ प्रगति भी हुई थी। दर्रे के नीचे की ओर के पल पर और आग के अग्र भाग के सामने उन्होंने रेखा तैयार कर दी थी। उन्हें आशा थी कि एक घंटा और लगायें तो आग के चारों ओर रेखा बन जायेगी। उसके पश्चात् केवल इतना काम रह जायेगा कि वे साव-धानी से खड़े देखते रहें कि आग किस प्रकार जल कर समाप्त होती है।

स्लग्गर और उसके आदमी काम में जुटे हुये थे परन्तु स्थिति बदल रही थी। सूर्य का उत्ताप बढ़ रहा था। दर्रे में नीचे से हवा के झोंके उठने लगे। तूफ़ान का अग्रभाग भी वहां आ पहुँचा था और उसके कारण दक्खिणी हवा का वेग बढ़ गया था।

पहले पहल हवा का हलका सा झोंका आया, फिर एक लम्बा झोंका, और ऐसा प्रतीत हुआ जैसे कोई विशालकाय पशु सांस ले रहा हो। छोटी-छोटी टहनियां आहिसता-आहिस्ता झूमने लगीं। ज्वाला में भी हरकत हुई और उसमें कुण्डलियां बनने लगीं। उसके पश्चात् वह पीछे की ओर झुक गई और जलती रही।

आग बुझाने वालों ने जल्दी से एक दूसरे पर दृष्टि डाली। जहां

वे काम कर रहे थे, वहां हवा का रुख दूसरी ओर हो गया था और एक क्षण के लिये उन्हें विचार आया कि हवा उनकी सहायता कर रही है, और ज्वाला को उस स्थान पर धकेल रही है जो पहले ही विध्वंस हो चुका है ताज़ा हवा चलने लगी थी और उनके मुँह पर, जो पसीने से तर था, ठंडक उत्पन्न कर रही थी। उन्होंने इस धुआं रहित हवा में बड़े चैन की सांस ली। तब उन्हें आग के दूसरे पक्ष की याद आई।

आग का अग्रभाग अब सहसा पिछवाड़ा बन गया था। अब आग उधर को न बढ़ रही थी जिधर इन लड़कों ने बड़े परिश्रम से रेखा तैयार की थी। अब आग ने अपना रुख बदल लिया था और इसके झुकाव में समकोण से भी अधिक का अन्तर आ गया था। अब वह दर्रे से ऊपर जा रही थी।

जिस समय हवा का रुख बदला आग का आकार एक नाली दार लम्बी पिस्तौल के समान था, जिसका रुख पहाड़ से नीचे की ओर और दस्ते का रुख दर्रे के नीचे की ओर था। नाली के साथ-साथ और दस्ते के साथ-साथ कुछ अंश तक रेखा तैयार हो चुकी थी। दक्षिणी हवा ने ज्वाला को भड़का दिया और नाली के ऊपर के भाग से आग आगे को बढ़ने लगी। यदि आदमी की गति से इसका मुकालबा करें तो कह सकते हैं कि यह कोई अधिक तेज़ी से न बढ़ रही थी। परन्तु इसे रोकने वाले छः ऐसे आदमी थे जो थक कर चूर हो चुके थे। इसलिये इसकी गति अनिष्ट की सूचक थी।

जब इन लड़कों ने एक दूसरे पर दृष्टि डाली तो उनकी आंखों में घबराहट और भय के चिह्न थे।

अपनी हार को छिपाने के लिये स्लग्गर ज़ोर-ज़ोर से गालियाँ देने लगा। एक क्षण के लिए वह रुक गया और सोचने लगा कि आग को बांधने के क्या-क्या उपाय हो सकते हैं। या तो आग से आगे बढ़ कर दर्रे के ऊपरले भाग में रेखा बनाई जा सकती थी जिससे आग की रोक-

थाम हो सकती थी या उसी स्थान से जहां वे थे धीरे-धीरे आगे बढ़कर आग को घेरा डाला जा सकता था। इस प्रकार उसके अग्रभाग को दबोचा जा सकता था।

प्रातः का समय होता तो स्लग्गर दिलेरी का कदम उठाता। इस समय ऐसा कदम उठाने की आवश्यकता थी जिसमें जोखिम न हो। उसने कहा, 'हम इसे घेरा डाल सकेंगे और इस पर काबू पा सकेंगे।' उसने पहली बार झूठ-मूठ उनका उत्साह बढ़ाने का प्रयास किया था। उसने कहा—'यह हवा शीघ्र ही बन्द हो जायेगी।' उसकी दशा एक ऐसे कमाण्डर के समान थी जो घेरे में आ गया हो। उसके समान ही उसने कहा—'हमें जल्दी ही कुमक पहुँचेगी।'

लड़कों ने कहा—'हां, हां, कुमक अवश्य पहुँचनी चाहिये। हमें वे कुमक क्यों नहीं भेजते? हम अकेले इस आग पर काबू न पा सकेंगे।'

जब हवा का रुख बदला तो स्लग्गर आग के बिल्कुल ऊपर के भाग के पास था। रेडियो उससे बहुत दूर था। यदि वह रेडियो उठाने जाता है तो उसे आने-जाने में कम से कम आधा घण्टा अवश्य लग जाता। यह सोचकर उसने निश्चय किया कि वह कुल्हाड़ा चलायेगा और समाचार भेजने के निरर्थक काम में समय न गंवायेगा।

बार्ट ने प्रेषक को पुनः टैलीफून किया।

'आर्न, मैं स्वयं जा रहा हूँ। स्लग्गर ने कोई सूचना नहीं दी। सैरोगोरडो से जूडिथ ने सन्देश दिया है कि धुआं बढ़ रहा है।'

'यह दक्षिणी हवा का परिणाम है। मौसम का विशेषज्ञ कहता है कि हवा का वेग और भी बढ़ेगा। हो सकता है आज रात को वर्षा आ जाये। तुम्हें चलना ही चाहिए। परन्तु मुझसे सम्बन्ध जोड़े रखना।'

'आपका विचार है कि मैं भी स्लग्गर ओ नील हूँ? मैं रेडियो को चलाये रखूंगा।'

बार्ट स्टेशन से विदा हुआ। उसने कौफी के तीन प्याले पिये थे।

फिर भी उसके मन पर सुस्ती छाई थी। उसे कुछ भ्रान्ति भी हो रही थी। जो व्यक्ति रात भर सो न पाया हो वह स्वाभाविक ही अगले दिन इस भ्रम में पड़ जाता है कि वह गत दिन है, आज का दिन है अथवा आगामी दिन है।

एक मील चलकर वह मुड़ गया। उसने साऊथ फोर्क का पुल पार किया और इडलहर्स्ट की सड़क पर हो लिया। वह बड़ी तेज़ी से गाड़ी चला रहा था। सड़क तंग और मोड़दार थी। उसका तल चिकना और साफ था और टेढ़े-मेढ़े मोड़ों का उसे बोध था। उसके रेडियो में बज़-ब्रज़ की आवाज़ सुनाई दी। उसने एक ऐसे स्टेशन का भी नाम सुना जो पौंडेरोसा में न था।

इडलहर्स्ट पहुँचने से पूर्व उसने जूडिथ गोडोए की आवाज़ सुनी जो ज़ेड ११२ को पुकार रही थी। यह उसकी गाड़ी का नम्बर था। उसने ट्रांसमिटर उठाया और गाड़ी को सड़क के एक ओर खड़ा कर दिया। यह एक छोटा सा सन्देश था जो प्रेषक की ओर से आया था। वह बार्ट को बताना चाहता था कि कुशल मालूम नहीं होती। वह अपनी ज़िम्मेदारी पर बारलो के आग बुझाने वाले कारुक को जो अनियन फ्लैट पर स्थित था, चलने की आज्ञा दे रहा था।

बार्ट ने कहा, 'अच्छी बात! धन्यवाद। आर्न से कह दो कि मैं इडलहर्स्ट पहुँच गया हूँ और बहुत तेज़ी से आगे बढ़ रहा हूँ।'

जब वह गार्ड स्टेशन पर पहुँचा तो टोनी पहले ही बैटी पर काठी डाले खड़ा था। एक मिनट में ही उन्होंने इस क्षिप्र चरण घोड़ी को घोड़ा-गाड़ी में जोत दिया।

इडलहर्स्ट से अनियन फ्लैट की सड़क के सिरे तक जो आठ मील का फासला था, उसे तय करने में बहुत देर लगी। परन्तु बार्ट ने हिचकोले खाने वाली इस घोड़ा-गाड़ी को जितना तेज़ वह चला सकता था चलाया।

अनियन फ्लैट पर एक खाली ट्रक खड़ा था। वह उसके पास पहुँचा और उसने अपना ट्रांसमिटर सम्भाला।

'ज़ैड ११२ ज़ैड १७ को पुकार रहा है, ज़ैड ११२ ज़ैड १७ को पुकार रहा है। ज़ैड १७ आओ।'

चेष्टा करने पर भी बारलो के साथ उसका सम्बन्ध स्थापित न हो सका वह शायद ऐसे स्थान पर था जहां आवाज़ जा ही नहीं सकती। उसने जैड ३ को पुकारा, और जूडिथ से बात की। जूडिथ ने बारलो से बात की स्खग्गर से अब भी कोई समाचार न आया था। प्रेषक हवाई जहाज़ द्वारा सफ्फोक से पौने दस बजे रवाना हो रहा था। धुआं कुछ अधिक उठ रहा था। वह अब लवर्स लीप की मचान से भी दिखाई देने लगा था। ये ही सन्देश थे जो बारलो से मिले थे।

बार्ट ने कहा, 'जूडिथ, अच्छी बात। यह सन्देश लिखलो और मुझे भिजवा दो। मैं अनियन फ्लैट पर हूँ और यहां से घोड़े पर रवाना हो रहा हूँ। मेरे पास ऊठाऊ रेडियो है। अवसर मिलेगा तो मैं फिर बात करूँगा। मेरा सन्देश ज़रा दोहरा दो।'

जूडिथ ने सन्देश दोहराया।

बार्ट ने बैटी की पीठ पर चढ़े-चढ़े ही खाड़ी को पार किया। संकीर्ण दरार के ऊपर उसने दृष्टि डाली। पहाड़ का एक सिरा सामने था इस लिये उसे धुआं उठता दिखाई न दिया। हवा के ज़ोर से धुआं उत्तर की ओर जा रहा था। घोड़ी खाड़ी के किनारे पर चढ़ गई, और पगडंडी पर चलने लगी। मार्ग बहुत लम्बा था।

आधे घंटे में वह आडदार पगडंडी के सिरे पर पहुँच गया। यहां उसे बारलो कारुक मिल गया। ये लोग लेटे-लेटे दम ले रहे थे। वह थोड़ी देर के लिये रुक गया। बैटी को भी वह आराम कराना चाहता था। बारलो कारुक के छः लड़के पसीने से तर थे, जिससे यह प्रतीत होता था कि वे बड़ी तेजी से चलते हुये आये हैं। उन्हें इस प्रकार लेटे और आराम करते देखकर उसने रोष प्रकट नहीं किया बल्कि कहा, 'इतना तेज़ मत चलो। आगे बहुत चढ़ाई है।''

वे बार्ट के मन की बात जानते थे, इसलिये वे खीस पड़े।

ऊपर जाकर दृश्य साफ़ दिखाई देने लगा। उसने चीड़ के दो महान वृक्षों के बीच से उस दर्रे पर दृष्टि डाली जिसे वह पार कर आया था। कई मील तक का दृश्य उसकी आंखों के सामने था। सहसा उसका दिल गद्-गद् हो उठा। जब कभी उसे ऐसा भव्य दृश्य दिखाई देता था, उसके मन की यही दशा होती थी।

यहां आकर पगडंडी हमवार हो गई थी और घूम कर खाड़ी के निकटतर आ गई थी। कुछ दूर तक वह बैटी को दौड़ाये चला। अब वह नीचे की ओर चलने लगा। उसने ब्रिज़ली क्रीक को पार किया और पग डंडी के साथ-साथ चीड़ के वृक्षों से ढकी पहाड़ी पर चढ़ने लगा। वह रिवर्स मैडो पहुँच गया, जहां खुला स्थान था। यहां से उसे पहली बार धुआं दिखाई दिया।

यहां पहुँकर उसने चैन की सांस ली। आग बहुत तेज़ न थी। वह बैटी से बातें करने लगा। बैटी तेज़ी से चलने लगी और घास के इस मैदान को छोड़कर दर्रे की ढलान पर चढ़ने लगी। आग अब उसके बिल्कुल सामने थी। बैटी कुछ ही दूर गई थी कि उसने कान खड़े कर लिये। बार्ट ने भी हवाई जहाज़ की आवाज़ सुनी।

उसने रेडियो सामने काठी पर रखा हुआ था। वह जल्दी से नीचे उतरा। टटोल कर उसने एक पत्थर उठा लिया, उसके गिर्द एरियल की तार लपेटी, उसे अपने एक अंग पर डाल दिया और जल्दी से रेडियो लगा कर उसका स्विच घुमा दिया। इतनी देर में जहाज़ भी सामने आगया।

बार्ट एक खुले स्थान पर खड़ा अपनी बाहें ऊपर नीचे हिला रहा था। हवाई जहाज़ बिल्कुल सिर के ऊपर आगया तो उसे उसके पंख डोलते दिखाई दिये। फिर उसने फ़ून पर कान लगाया।

हवाई जहाज़ अब आग के ऊपर चक्कर लगा रहा था। वह फिर धुएँ

में जा घुसा, उसके पश्चात् धुएँ से निकलकर दर्रे के नीचे पहुँच गया। रेडियो पर उसे आने की आवाज़ सुनाई दी। उसका सन्देश बिल्कुल साफ़ था।

'हालत कोई बहुत अच्छी नहीं है, बहुत बुरी भी नहीं है। रलगार वहां मौजूद है। उसने आग की एक ओर रेखा तैयार कर ली है परन्तु हवा का रुख बदल जाने से अब इसका कोई विशेष लाभ नहीं रहा। वह और कुछ अन्य लोग ऊपर से उसे रोकने का प्रयत्न कर रहे हैं परन्तु उसका अग्र भाग २०० गज़ चौड़ा है। दो स्थानों पर इसकी पैनी और लम्बी नोकें निकली हुई हैं। आग दस एकड़ भूमि पर छा गई है। जितनी जल्दी हो सके उस तक पहुँच जाओ। मैं आदमी उतार रहा हूँ।'

'क्या तुम्हारे साथ हमारा कोई आदमी है जो सेना-कर्णधार का निर्देशन कर सके।?'

'हां, निरीक्षक है।'

'कृपया दोहरा दीजिये।'

'मैं कहता हूँ निरीक्षक।'

'कैसे आया है ?'

उसे मालूम था कि हवाई जहाज़ जा रहा है। उसने कहा कि वह कभी ऐसे हवाई जहाज़ में सवार नहीं हुआ, जिससे आदमी छतरियों द्वारा नीचे उतारे जाते हैं। वह देखना चाहता था कि आदमी कैसे नीचे उतरते हैं। परन्तु मेरा विचार है कि वह हम सबके समान आग पर एक दृष्टि डालना चाहता था।'

जहां द्वार होना चाहिए था वहां इस हवाई जहाज़ में द्वार न था। निरीक्षक को यह बात पसंद न थी। जहां द्वार होना चाहिये था वह उसके दूसरी ओर बैठा था। दोनों हाथों से वह एक सलाख़ को पकड़े हुए था।

लैफ्टिनैंट जो खुले स्थान के निकट खड़ा सार्जैन्ट से बात कर रहा

था सलाख को एक ही हाथ से पकड़े था। जहाज़ टेढ़ा हो गया और जिस स्थान पर द्वार होना चाहिये था वह स्थान भी फर्श का भाग बनता प्रतीत हुआ। निरीक्षक को भय हुआ कि कहीं वह बाहर न जा पड़े, इसलिये घबराया हुआ सलाख को चिमट गया। उसने अपनी लम्बी टांगें सुकेड़ लीं। कौरपोरल जो पास ही बैठा था खीसने लगा।

'इंजन का शोर हो रहा था। निरीक्षक ने क्षमा याचना करते हुये कहा, 'मैं इसका अभ्यस्त नहीं हूं।'

'तो फिर आप किस लिये आये हैं?'

'मैं इस प्रदेश को जानता हूं। मैं बताऊंगा कि किस स्थान पर उतरना ठीक रहेगा।'

'आप का काम तो बहुत आसान है। आप हमें संकेत देते हैं और हम नीचे कूदते हैं।'

इसके पश्चात् हँसने की आवाज़ आई परन्तु इस हंसी में खुशी दिखाई न देती थी!

हवाई जहाज़ तेज़ी से नीचे की ओर गया। निरीक्षक ने उन दस आदमियों पर दृष्टि डाली जो भूमि पर उतरने वाले थे। जहाज़ के कमरे में एक सिरे से दूसरे सिरे तक धात का एक छोटा सा बैंच था जिस पर ये लोग बैठे थे। वे उस सामान से लेस थे जिसे लेकर उन्हें नीचे उतरना था। केवल उनके चेहरों पर अवगुण्ठन न लगे थे। फुटबाल के किसी महान खिलाड़ी की भांति उन्होंने गद्देदार वस्त्र धारण किये हुये थे। हर एक की पेटी के साथ रस्सी का एक-एक गुच्छा लटक रहा था। वे चुप-चाप बैठे थे और उनमें से बहुत से तम्बाकू पी रहे थे। वे प्रसन्न दिखाई न देते थे। कइयों के माथे से पसीने की बूंदें टपक रही थीं। हो सकता था कि गद्देदार वस्त्रों की गर्मी के कारण उन्हें पसीना आ रहा हो या किसी और कारण से। हवाई जहाज़ से ऊबड़-खाबड़ स्थान पर कूदना कोई मोदक बात न थी।

सार्जेण्ट ने सहसा बाहर की ओर संकेत किया। निरीक्षक खड़ा होकर द्वार से बाहर झांकने की चेष्टा करने लगा। हवाई जहाज़ की छत से लोहे की तार लटक रही थी। उसने उसे मज़बूती से पकड़ा हुआ था। अब हवाई जहाज़ बिल्कुल आग के ऊपर उड़ रहा था।

उसने सोचा—'मेरा यही काम है।' उसने जल्दी से आग पर दृष्टि डाली, किसी भी स्थान पर ऊँचे वृक्षों की ऊपरली टहनियों ने आग न पकड़ी थी। आग की जो दो नोकें बाहर को निकली हुई थीं उनमें से एक के सिरे पर एक ऐसा स्थान था जो बहुत गरम था। छोटे-छोटे वृक्षों का एक झुंड जल रहा था। उसे यहां से ज्वाला उठती दिखाई दी, एक कारुक पहले ही आग बुझाने पर लगा था। दस और आदमी नीचे उतरने वाले थे। एक कारुक और चला आ रहा था। इसके अतिरिक्त बार्ट इस अभियान का अधिपुरुष था। इसलिये उसे आशा न थी कि आग अधिक देर तक जीवित रहेगी।

आग से थोड़ा हट कर, जैसा हवाई जहाज़ से दिखाई दे रहा था, उसे वृक्षों में एक खुली जगह नज़र आई।

अपने रीते हाथ से उसने लैफटिनैंट को चोभ दी और उस स्थान की ओर संकेत किया। तुरन्त उसे यह आभास हुआ कि ज़रा से इशारे से उसने अपने आने का उद्देश्य पूरा कर दिया है। लैफटिनैंट और सार्जेण्ट दोनों ने उस ओर दृष्टि डाली उनके चेहरे को देख कर ही वह कह सकता था कि वे इस प्रकार के ऊबड़-खाबड़ स्थान पर कूदने को तैयार नहीं हैं। वह जानता था कि इसका क्या कारण है। इस छोटी सी जगह पर झाड़ियां उगी थीं। ऐसा प्रतीत होता था कि झाड़ियों के नीचे गड्ढे हैं। उसे इस विचार से कि किसी को ऐसे स्थान पर कूदना पड़े बहुत दुःख हुआ।

लैफटिनैंट ने तीक्ष्ण शब्दों में कहा—'यह स्थान तो खलिहान की छत से बड़ा नहीं और बेहद ढलवां है।' फिर सैनिकों की भांति वह

चमक कर बोला, 'सार्जैन्ट, कूदने का प्रबन्ध तुम अपने हाथ में लो। तीन-तीन-चार इस प्रकार कूदना चाहिये। फिर वह कर्णधार के पास आया कि उसे आदेश दे सके और उचित समय पर कूदने का संकेत दे सके।

हवाई जहाज़ इस खुली जगह के ऊपर से गुज़र गया था परन्तु वह पुनः चक्कर काट कर आया।

सार्जैंट ने हुक्म दिया 'पहले तीन, आगे आओ।'

कोरपोरल समेत तीन कूदने वाले खड़े हो गये। हर एक ने उस तार को थाम लिया जिसके सहारे निरीक्षक लटक रहा था। उन्होंने अपनी छतरियों को हटा कर देखा, कि क्या सब ठीक-ठाक है। उन्होंने अवगुण्ठ चेहरों पर लगा लिये थे। उनके चेहरे काले प्रतीत होते थे। परन्तु पारदर्शक प्लास्टिक में से उनकी आंखों की सफेदी चमक रही थी। वे इस वेश में मनुष्य मालूम न होते थे परन्तु उन्हें देख कर दया आती थी। उनकी आंखों से ऐसा प्रतीत होता था जैसे वे पिंजरे में बंद डरे हुये जानवर हों।

हवाई जहाज़ ने चक्कर काटने बन्द किये और वह सीधा हो गया। तीनों कूदने वाले और भी पास-पास आ गये। सहसा बज़-बज़ करती हुई एक घंटी बजी।

सार्जैंट ने चिल्लाकर कहा—'हो!' इस पर तीनों आदमी इतने निकट आ गये कि वे जुड़ कर एक ही आदमी प्रतीत होने लगे। तार के साथ तीन रस्सियां ऐसे लटक रही थीं जैसे कोई फांसी का फंदा उछाल दिया गया हो। हवाई जहाज़ थोड़ा सा मुड़ा तो निरीक्षक को एक हरी छतरी हवा में उड़ती दिखाई दी।

जब अगले तीन आदमियों ने छलांग लगाई तो दृश्य इतना बुरा प्रतीत नहीं हुआ। जैसे वे तीन बाहर आये निरीक्षक को भूमि पर उस छोटे से स्थान के बीच में एक छतरी दिखाई दी। उसके पास एक आदमी खड़ा हाथ हिला रहा था।

अब तीसरी टोली छलांग लगाने को तैयार हुई। यह आतति की

पड़ी थी। एक छतरी वृक्ष पर अटकी दिखाई दे रही थी। परन्तु तुरन्त ही एक रस्सी लटकती दिखाई दी और उस पर से होकर एक आदमी नीचे उतरता नज़र आया। छलांग लगाने वाले ७० फीट लम्बी रस्सी अपनी पेटियों के साथ इसलिये बांधे न फिरते थे कि वे सुन्दर प्रतीत हों।

तीसरी बार में चार आदमियों ने छलांग लगाई। उसके पश्चात् हवाई जहाज़ ने दो बार फिर चक्कर लगाया। सार्जेण्ट और एक सैनिक ने जो पीछे रह गया था औज़ार, भोजन और बिस्तर पीले रंग की छतरियों द्वारा भूमि पर फेंक दिये।

आखिरी पोटली फेंकने के पश्चात् हवाई जहाज़ ने एक चक्कर लगाया और घर की राह ली।

निरीक्षक को इससे बहुत चैन मिला। सब आदमी शान्तिपूर्वक नीचे उतर गये थे। वे जल्दी ही अपने भारी-भारी वस्त्र उतार कर और अपने औज़ार लेकर मेढ़ पर से होते हुए बार्ट के पास पहुँच जायेंगे, इस विचार ने उसके मन को बहुत शान्ति प्रदान की। दस ताज़ा-दम आदमी आग बुझाने के लिये पहुँचेंगे तो इससे स्थिति में बहुत अन्तर आयेगा। वे ऐसे समय वहां पहुँच गये थे कि दोपहर होते तक जब आग के प्रचंड होने की सम्भावना थी, उन्हें काम करने के लिये कुछ घण्टे मिल जायेंगे।

बार्ट आग के पास पहुँचा तो उसे आभास हो गया कि वह काबू से बाहर है। स्थिति बहुत शोचनीय थी परन्तु वह बेलचा उठाकर काम पर नहीं लग गया। उसका पहला काम यह था कि वह आग का निरीक्षण करे और विशेष रूप से उसके अग्रभाग को देखे और उस पर काबू पाने की योजना बनाये। उसने स्लग्गर और उसके आदमियों से कहा कि वे जिस काम में लगे हैं, उसी में लगे रहें। उनके काम से कोई हानि तो पहुँच न रही थी। वे कितनी भी चेष्टा करते आखिर वे थके हुए थे और आग पर काबू न पा सकते थे।

वह झाड़ियों में से गुज़र रहा था कि उसे ऊपर हवाई जहाज़ उड़ता

दिखाई दिया। उसके चक्कर काटने की आवाज़ आ रही थी। एक खुली जगह पर पहुँच कर उसने तीन हरे रंग की छतरियां हवाई जहाज़ के बिलकुल नीचे खुलती देखीं। जब हवाई जहाज़ घर की ओर चल पड़ा तो बार्ट ने आग का घेरा पूरा कर लिया था। वह उस स्थान का चित्र बनाने लगा जिस पर आग लगी थी। जिस कागज़ पर वह चित्र बना रहा,था वह छपा हुआ था और भूमि के एक टुकड़े को प्रदर्शित करता था जिसके चार भाग थे और जिस पर चालीस-चालीस दर्जे के निशान लगे थे।

पुर के ऊपर बिंदीदार लकीर के ऊपर उसने 'निश्चित' शब्द लिखा। चित्र के मध्य में उसने ७ का अंक लिखा। इसका अभिप्राय यह था कि आग 'निश्चित पुर' के सातवें भाग में लगी है। फिर उसने दक्षिण-पश्चिमी चालीसवें दर्जे पर पैंसिल रखी और वह उसे नीचे की ओर ले गया। उसने उत्तर की ओर पैंसिल घुमाई और उत्तर-पश्चिमी भाग में पहुँच गया। फिर उसी प्रकार वक्र रेखा बनाते हुए वह पैंसिल को वापिस ले आया।

अपने अनुमान के अनुसार उसने यह उस भूमि का चित्र बनाया था जो या तो जल चुकी थी या जिस पर अभी आग लगी हुई थी।

अब वह आग के फैलाव के क्षेत्र का अनुमान लगाने लगा। यह क्षेत्र चौथाई मील से अधिक लम्बा था। आग पर काबू पाने से पूर्व इस का आयाम बढ़ने की आशा थी। इसकी चौड़ाई भी काफी थी और कहीं-कहीं आग आगे बढ़ी हुई थी। इन सब बातों का विचार करते हुए उसने अनुमान लगाया कि जो काम स्लग्गर और उसके आदमी कर चुके हैं उसके अतिरिक्त दो मील लम्बी रेखा और बनानी पड़ेगी। उसकी रक्षा भी करनी होगी। इस काम को पूरा करने के लिये उसके पास स्लग्गर के छः थके-टूटे आदमी थे। १० आदमी जहाज़ से उतरे थे और आग बुझाने वाले छः अन्य आदमी लगभग एक घण्टे में वहां पहुँच रहे थे।

उसने तुरन्त ही योजना बनाई। आग का पिछवाड़ा पहले ही काबू में था। वहां स्लग्गर के दो आदमी काफ़ी थे। स्लग्गर और तीन व्यक्ति

ऊपर के भाग को सम्भालें और जब आग बुझाने वाला कारुक वहां पहुँच जाये तो वह उनकी सहायता करे। ये लोग पहले ही से वहां काम कर रहे थे। इस भाग से रेखा मेड़ के साथ-साथ जाती थी। वहां आग का ज़ोर कम था। वह जहाज़ से उतरने वालों को निचले हिस्से पर लगाना चाहता था।

इस योजना का अभिप्राय यह था कि आग का अगला भाग जहां वह आगे बढ़ रही है ऐसे ही छोड़ दिया जाये। आशा थी कि जहाज़ से उतरने वाले इतनी तेजी से काम करेंगे कि वे आग से आगे बढ़ जायेंगे और उस पर काबू पा लेंगे। यदि ऐसा न हुआ तो प्रेषक ने मिल के बीस आदमियों का प्रबन्ध किया था जो अन्धेरा होते ही वहां पहुँच जायेंगे। उस समय आग बुझ रही होगी और वे कमी को पूरा कर देंगे। उन्हें इसमें कोई कठिनाई न होगी।

सब बातें देखते हुए स्थिति आशाप्रद दिखाई देती थी। यदि काम योजना के अनुसार चलता रहा तो पराह्न के अन्तिम भाग में आग पर काबू पाया जा सकेगा। यदि कुछ गड़बड़ हो गई तो मिल के आदमियों के आने के दो एक घंटा पश्चात् तक अर्थात् दस बजे तक आग पर ज़रूर काबू पा लिया जायेगा।

जहाज़ से उतरने वाले मेड़ पर से शोर मचाते हुये आ रहे थे। उसने उन्हें आवाज़ दी और जब वे आगये तो उन्हें नियत स्थान पर लगा दिया। उसने कारपोरल को सब स्थिति समझा दी।

डावे हैलीडे अपने दोपहर बाद के नक्शे पर लगा, भिन्ना रहा था। पूर्वानुमान कठिन प्रतीत हो रहा था। उसने इसे टाईप कर प्रसारित करने के लिये दे दिया था। उसके पश्चात् वह प्रेषक के दफ़्तर में गया। आर्न भी वहां बैठा था।

डावे ने पूछा, 'कहो, तुम्हारी आग का क्या हाल है ?'

'बार्ट ने आधा घंटा हुये एक सन्देश भेजा था। उसके अपने समेत वहां अब २३ आदमी हैं। वह प्रसन्न है। वह जल्दी ही आग के गिर्द

घेरा डाल लेगा और रेखा तक आग पहुँचाने से पहले ही उसकी प्रति-अग्नियां जल जायेंगी। तुमने जिस वर्षा की हमें आशा दिलाई है वह काम आसान कर देगी। तुमने वर्षा के विषय में कहीं अपना विचार बदल तो नहीं दिया?'

'ना...।...।'

'तुम्हें शायद कुछ शंका है।'

'वर्षा होनी तो अवश्य चाहिये परन्तु मुझे कल की चिन्ता है। मैं स्पष्ट पूर्वानुमान नहीं लगा सका। मैं इसके विषय में तुम्हारे साथ परामर्श करना चाहता हूँ।'

'हां, हां, बोलो।'

'ज़रा देखिये। पूर्वी औरेगन में हवा का क्या दबाव है यही बात देखने वाली है। यदि वहां दबाव बढ़ जाये तो पठार पर सर्द हवा का 'एक बुर्ज सा बन जायेगा।'

'इससे क्या होगा?'

'तुमने पहाड़ी से पानी गिरते देखा है?'

'इसके विषय में कभी किसी पुस्तक में पढ़ा था।'

'ठंडी हवा पहाड़ी से उसी प्रकार चलती है। यदि पूर्वी औरेगन में इसकी बहुतायत हो जाये तो यह दर्रे में से होती हुई कैलीफोरनिया की बीच की वादी को इस प्रकार भर देगी जैसे पानी द्रोणिका को भर देता है। उसके पश्चात्...'

आर्न ने कहा, 'अच्छी बात। अब कुछ अधिक कहने की आवश्यकता नहीं। इससे आगे मैं इसके विषय में सब कुछ जानता हूँ। एंजलीस पर हम इसे 'संटा अना' कहा करते थे और स्टैमीस्लास पर 'मोनो'। यहां इतनी गर्मी नहीं पड़ती, बस केवल इतना ही अन्तर है। एक अन्तर यह हो सकता है कि आग पर काबू पाने से पूर्व ही यह हवा चलने लगे।'

'हो सकता है इस हवा की सम्भावना ही न हो। अभी निश्चय से कुछ नहीं कहा जा सकता।'

'हवा ज़रूर आयेगी । यह उसके आने का मौसम है । हमारी भलाई इसी में है कि हवा के आने से पहले हम इस 'स्पिटकैट' आग को बुझादें ।'

. 'आप जानते हैं कि वर्षा की भी सम्भावना है ।'

आर्न मुदित होकर बोल उठा, 'ठीक है ।'

जहाज़ से उतरने वाले पराह्न का सारा समय नीचे के हिस्से पर लगे रहे । जैफरे चीड़ के शंकु लुढ़कने में आफ़त का परकाला थे इसलिए रेखा की देखभाल करना ज़रूरी था । भूमि को खोदकर रेखा तैयार करना कोई आसान काम न था । वे लोग पराह्न भर आग के अग्र-भाग तक न पहुँच सके । इतना उन्होंने जरूर किया कि उसका फैलाव कुछ कम कर दिया और मेढ़ पर ऊपर को आड़ा चलने पर मजबूर कर दिया ।

बारलो का आग बुझाने वाला कारुक मेढ़ पर लगा रहा । वे थे तो केवल छः ही परन्तु उन्हें भूमि को खोदना न पड़ता था इसलिये वे जहाज़ से उतरने वालों के साथ-साथ ही रहे ।

जिस लड़के के घुटने पर चोट आई थी उसे बार्ट ने रेडियो के पास खड़ा किया और स्लग्गर और उसके बाकी आदमियों को रेखा पर पहरा देने का काम सौंप दिया ।

दिन ढलने के पश्चात् हवा जो दोपहर बाद से चल रही थी मन्द पड़ गई परन्तु अब भी वह दक्षिण की ओर से ही आरही थी । थोड़ी देर पश्चात् दोनों कारुक आग के प्रवाह से आगे निकल गये । बार्ट ने सोचा कि उस पर काबू पाने का समय आ गया है ।

जहाज़ से उतरने वाले थक गये थे परन्तु उनका कौरपोरल उनका हौसला बढ़ा रहा था । वे काम पर डटे रहे और उन्होंने अपनी रेखा का रुख बदल दिया और वे उसे सीधा ऊपर की ओर ले गये ।

आग के दो सिरों में २०० गज़ का अन्तर था । इस दरार को पूरा करना था । बार्ट ने कौरपोरल को साथ लिया और वह ढलान के ऊपर चढ़कर उसे दिखाने लगा कि किस स्थान पर रेखा बनाना उचित होगा । फिर उसने कौरपोरल को वापिस भेज दिया । वह जानता था कि प्रत्याग्नियां

मेढ़ पर से आरम्भ करनी होगी इसलिये वह आग बुझाने वाले कारुक के पास गया।

जब कारुक ने ५० गज़ का फासला तय कर लिया तो उसने अपनी जेब से आग जलाने वाला फलीता निकाला। उसने उसके सिरे पर दिया-सलाई लगाई। फलीते से चमकदार गुलाबी रंग की लौ उत्पन्न हुई। रेखा से अन्दर की ओर चार फीट के फासले पर कुछ सूखी टहनियां पड़ी थीं। उसने उन्हें आग लगा दीं और फिर रेखा के साथ-साथ आग जलाता चल पड़ा। 'आग का विरोध आग से करो' आग बुझाने का यही नियम है। हवा का रुख ऐसा था कि प्रत्याग्नियां रेखा की ओर बढ़ीं। कुछ ही दूर पहुँची थीं कि ईंधन के अभाव के कारण वह बुझ गई। परन्तु दूसरी ओर प्रत्याग्नियां हवा का विरोध करती हुई आगे की ओर बढ़ीं। वे धीरे-धीरे बढ़ रही थीं। उसके देखते-देखते वे आपस में मिल गईं और मिलकर एक हो गईं। अब पहली आग उसके निकट थी जो हवा को अपनी ओर खींच रही थी। इस हवा ने प्रत्याग्नियों को अपनी लपेट में ले लिया।

सहसा प्रत्याग्नियां प्रचण्ड हो उठीं और झाड़ियों में से गरजती हुईं पहली आग की ओर बढ़ीं। रेखा पर जहां बार्ट खड़ा था वहां से वे मुख्य अग्नि को लगभग सौ फीट की दूरी पर जा मिलीं। जैसे दो लहरें आपस में टकराती हैं वैसे ही इनके टकराने से ज्वाला एक टीले की भांति उठती हुई प्रतीत हुई।

बार्ट खड़ा देख रहा था। उसे भय था कि कहीं चिनगारियां कोई उपद्रव न करदें। चिनगारियां ऊपर उठती थीं। शिखर पर पहुँच कर उनका रंग काला पड़ जाता था। वे फैल न रही थीं। इस ओर आग के बढ़ने की कोई सम्भावना न थी।

जिस समय आग के अग्र-भाग के सामने रेखा बन कर तैयार हुई आग उसके बहुत निकट पहुँच चुकी थी और प्रत्याग्नि जलाना

सम्भव न था। उन्हें आशा थी कि रेखा ही आग को आगे बढ़ने से रोक देगी।

फिर सहसा पूर्णरूप से शान्ति छा गई। यह घटना इतनी अकस्मात हुई कि विलक्षण मालूम हुई। साथ ही अन्धेरा भी छा गया। सूर्य अस्त हो चुका था और आग के बुझ जाने से कहीं प्रकाश दिखाई न देता था।

सौभाग्य की बात कि दर्रे के पार से चिल्लाने की आवाज़ आई और रोशनी दिखाई दी। मिल के बीस आदमी जो ताज़ा दम थे आ पहुँचे थे। वे निश्चय ही रात भर काम कर सकते थे।

बार्ट ज़रा विश्राम के लिए जाना चाहता था कि उसे अत्यन्त थकावट का आभास हुआ। इतना लम्बा दिन था और वह दिन भर काम में लगा रहा था। उसे याद आया कि बुधवार की रात से 'वह ठीक तरह सो नहीं सका। उसका सिर चकरा रहा था। वह अपने आप को संभालने के लिये वहीं भूमि पर बैठ गया।

सातवाँ दिन

आधी रात के बाद अन्धेरी का चन्द्रमा उदय हुआ। उसकी इतनी रोशनी थी कि आदमी को अपनी फ्लैश लाइट से आगे की भूमि दिखाई देने लगी थी। बार्ट बिल्ली की नींद सोया था। जब भी वह सोने लगता रेडियो पर कोई सन्देश आ जाता या कोई व्यक्ति फट-फट करता आता और किसी चीज़ की मांग करता। यदि यह भी न होता तो जब भी उसे गहरी नींद आने लगती वह चौंक कर जाग पड़ता। वहां और कोई ऐसा अनुभवी व्यक्ति न था जो रात के काम का निरीक्षण कर सकता।

वह खड़ा हो गया और इधर-उधर दृष्टि डालने लगा। आग शान्त हो चुकी थी। परन्तु चन्द्रमा को देख कर बार्ट को विचार आया कि आग का एक चक्कर और लगाले।

बाह्य रूप से ऐसा प्रतीत होता था कि आग बुझ चुकी है परन्तु उसमें कहीं-कहीं चमक थी और कहीं कहीं छोटी लौ दिखाई देती थी।

इस प्रकार के दर्जनों स्थान थे इसलिये यह विचार आना स्वाभाविक था कि रेखा से घिरे हुये स्थान में हजारों जगहों पर इस प्रकार ज्वाला उत्पन्न हो सकती है।

बार्ट ढलवीं पगडंडी पर चढ़ने लगा। वह कभी-कभी दम लेने के लिये ठहर जाता। वह आखिर एक ऐसे स्थान पर आ पहुँचा जहां रेखा एक अर्ध वृत बनाती थी। इससे प्रतीत होता था कि जब आग उठ ही रही थी तो स्लग्गर के आदमियों ने उसे लगभग दबा दिया था। अर्ध वृत्त के सिरे पर एक गोला बना हुआ था जिससे विदित होता था कि जिस समय आग ने दर्रे के ऊपर का रुख किया उस समय उन्होंने आग की जीभ को काबू कर लिया था।

इससे कुछ आगे चल कर उसने देखा कि एक अलाव जल रहा है। उसके पास छः लट्ठहार लेटे पड़े थे। बार्ट इतने निकट आ गया कि इस आग की रोशनी में वह इन आदमियों को देख सकता था। उन्होंने आलस्य पूर्वक घूमकर या करवट लेकर उसका अभिवादन किया।

उसने उनसे पूछा कि आग का क्या हाल है? उनमें से एक ने उत्तर दिया कि सब शान्त है।

छः आदमी एक ही स्थान पर लेटे थे। इसका अभिप्राय यह था कि रेखा का बहुत सा भाग ऐसा है जहां कोई भी व्यक्ति पहरे पर नहीं। परन्तु बार्ट ने कुछ नहीं कहा। वास्तव में रात को खतरे की भी कोई बात न थी। वह लट्ठहारों के स्वभाव से भी परिचित था। समय आने पर वे राक्षसों के समान काम करते हैं। यदि स्थिति साधारण हो तो वे किसी आदेश का पालन करने से पूर्व उसके औचित्य को देखते हैं।

दो बजे थे कि उस भाग को देखता हुआ जो आग बुझाने वाले कारुक के सुपुर्द था और जहां उसने मेढ़ के साथ-साथ रेखा तैयार की थी वह आग के अग्र भाग पर पहुँच गया। वहां भी एक अलाव के पास आदमियों की एक टोली लेटी पड़ी थी। इसके एक आदमी ने कहा कि आग शान्त है।

यहां पहुँच कर उसने चित्र निकाला और वह उसमें संशोधन करने लगा। उसने अनुमान लगाया कि ४० एकड़ जमीन विध्वंस हो चुकी है। वन-विभाग इस आग को तीसरी श्रेणी की आग ठहरायेगा ऐसा इसका विचार था।

उसने चित्र अपनी जेब में रख लिया। वह पगडंडी से नीचे उतरता हुआ उस स्थान की ओर बढ़ा जहां उसने पहली प्रत्याग्नि जलाई थी। आधे रास्ते गया था कि उसे आग बुझाने वाले कारुक के छः आदमी दिखाई दिये। वे बड़ी दुखद दशा में लेटे पड़े थे। रेखा के अन्दर की ओर उन्होंने आग जला रखी थी और वे सोने का प्रयास कर रहे थे।

इस कारुक के अधिपुरुष ने कहा, "आग का अब क्या रूप है?"

'आग शान्त है। नमी ने उसे दबा दिया है। शायद किसी समय भी वर्षा हो जाये"

ये शब्द उसके मुँह से निकले ही थे कि बार्ट ने ऊपर पेड़ से आती हुई हिस की आवाज़ सुनी। उसने अपना सिर पीछे की ओर झुकाया और उसे लगा मानो एक नन्हीं सी बूंद उसकी नाक पर आ गिरी है।

"ए लो, वर्षा आगई! अब मैं चलता हूं।"

सहसा उसके मन को चैन का आभास हुआ। जिस आग को पहले ही दबा दिया गया था वह वर्षा को सहन न कर सकेगी। परन्तु जैसे वह आगे बढ़ा उसे वर्षा का कोई चिन्ह दिखाई न दिया। संभव था कि डेढ़ सौ फीट ऊँचे चीड़ के वृक्षों की ऊपरली टहनियों पर वर्षा हो रही हो परन्तु भूमि तल तक वर्षा न पहुँच रही थी। उसे उस अशुभ पूर्वानुमान का भी विचार आया। परन्तु आग का यह हाल देखकर उसके लिये भी चिन्ता का कोई कारण न था।

डावे हैलीडे अभी भी बिजली की रोशनी में जिस पर हरे रंग का छज्जा लगा था काम कर रहा था। दक्षिणपूर्वी ओरेगन को घेरते हुये उसने हाथ से ही एक वृत्त बनाया। उसने वृत्त के अन्दर 'उच्च' की मोहर लगाई और फिर पीछे की ओर झुक कर वह चित्र को देखने लगा। सफफोक के

उत्तर और पूर्व के स्थानों पर हवा का रुख प्रकट करने वाले तीर दक्षिण की ओर संकेत कर रहे थे । उन पर काफ़ी पंख दिखाये गये थे जिससे प्रतीत होता था कि हवा की गति दस से लेकर बीस मील प्रति घंटा तक होगी । वह इस मौसम का निर्माता न था । यह उसका पूर्वानुमान था जो सत्य सिद्ध होने जा रहा था ।

बाहर पूर्णरूप से दिन निकल आया था । खिड़की में से उसे लान के साथ-साथ सुन्दर रूप से लगाये गये 'प्लेन' के वृक्षों की पंक्ति दिखाई दी । उसे यह देख कर हैरानी हुई कि उनके पत्ते धीरे-धीरे हिल रहे हैं । इसका अभिप्राय यह था कि हवा अभी तक यहां नहीं पहुँची थी ।

अभी उसकी आंख भी न खुली थी कि आर्नल्ड सौरंसन का हाथ अपने आप ही टैलीफून पर जा पड़ा ।

नींद को भगाते हुये उसने तीक्ष्ण शब्दों में कहा, 'हैलो, प्रेषक, सौरनसन बोल रहा है ।'

डावे हैलीडे की आवाज़ आई, 'हां आपत्ति ज़रूर आई है । अभी तक यहां तो केवल हल्की-हल्की हवा चल रही है परन्तु रेनो के स्थान पर उत्तरपूर्वी हवा का वेग २० मील प्रतिघंटा है । मेरे नक्शे पर इस स्थान के और औरेगन के बीच में चार आईसोबार हैं ।'

'इसका अभिप्राय किस प्रकार की हवा है ?'

'दर्रे में बीस मील प्रति घंटे से भी अधिक वेग की । मैदों पर उसका वेग ४० मील प्रतिघंटा के लगभग होगा । वह इतनी खुश्क होगी कि तुम्हारे ओठों को आधे घंटे में फाड़ देगी ।'

मौसम का विशेषज्ञ इससे बुरा कोई सन्देश न दे सकता था इसलिये पूछने की और कोई बात बाकी न रही थी । उसने कहा, 'डावे, अच्छी बात ! बहुत धन्यवाद' इसके पश्चात् उसने टैलीफून रख दिया और वह बिस्तर से बाहर आकर कपड़े पहनने लगा ।

दफ़्तर पहुँच कर उसने रेडियो चलाया, रेडियो पर खड़े लड़के के साथ सम्बन्ध स्थापित किया और बार्ट को बुलाया ।

बार्ट ने कहा, 'मैं अभी-अभी आग का चक्कर लगा कर आया हूँ वह अत्यन्त शीतल मालूम होती है। वर्षा की बात तो मैं नहीं कह सकता किन्तु नमी ने ही उसे बिठा दिया है। मेरे पास यहां वृक्ष गिराने वाले दो कारुक हैं। मुझे उनके कुल्हाड़ों की आवाज़ आ रही है। आशा है वे जल्दी ही वृक्षों के ठूंठों को गिरा देंगे।'

'हवा के विषय में तुम्हारा क्या विचार है ?'

'दर्रे के नीचे की ओर हवा वैसे ही चल रही है। विशेष रूप से भयानक तो प्रतीत नहीं होती। ज़रा दिन चढ़ेगा तो दर्रे के ऊपर की ओर हवा चलने लगेगी और इसे रोक देगी।'

'मौसम के विशेषज्ञ का मत कुछ भिन्न है। उसका पूर्वानुमान है कि मेढ़ों पर हवा की गति ४० मील प्रति घंटा तक पहुँच जायेगी।'

'हो सकता है परन्तु उसे इस प्रदेश का इतना अनुभव नहीं जितना मुझे।

'बार्ट, एक मिनट ठहरे रहो। मुझे एक जरूरी काम याद आगया है।'

प्रेषक उठा और कमरे के चक्कर लगाने लगा। वह एक क्षण विचार करना चाहता था। बार्ट अच्छा आदमी था और उसकी गणना अति उत्तम व्यक्तियों में होती थी। परन्तु इस समय उसकी दशा ऐसी थी मानों गेंती का दांत मुड़ गया हो या रेडियो का कोई पेच ढीला हो गया हो। उसे एक रोग था जिसे 'थकावट' का रोग कहते थे। आग पर काबू पाते ही उसे विश्राम की सूझती थी। परन्तु हो सकता था कि बार्ट का विचार ठीक हो। हो सकता था आग सचमुच शान्त हो गई हो और डरने की कोई बात न हो। नवयुवक डावे हेलीडे की बात ग़लत हो सकती थी। परन्तु इस अवस्था में यही विचार करना ठीक था कि स्थिति अधिक-से अधिक बिगड़ सकती है।

उसने तीक्ष्ण शब्दों में कहा, 'बार्ट, सुनो, तुम जानते हो कि यदि आग उत्तर की ओर बढ़ने लगे तो क्या होगा ? आग का रुख ऐसे जंगल की ओर है जिसकी गणना कैलीफोरनिया के अति उत्तम जंगलों में होती है।

'आर्न, अच्छी बात। मुझसे जो भी हो सकेगा करूँगा।'

ऐसा प्रतीत हुआ जैसे बार्ट अभियाचना कर रहा हो और वह थका टूटा बैठा हो। 'आर्न, परन्तु यह बताओ कि यदि हवा ४० मील प्रति घण्टा की गति से चलने लगे और इस हवा में यह आग फैलने लगे तो मैं या कोई अन्य व्यक्ति क्या कर सकता है ?'

बात समाप्त हुई परन्तु प्रेषक पहले के समान ही असमंजस में पड़ा था। जिस आग की केवल सम्भावना ही थी उसे बुझाने के लिये वह ट्रकों, बुलडोज़रों और सैकड़ों आदमियों को कैसे भेजता।

उसने नाश्ता किया। उचित समय देखकर उसने सब रेंजरों से बात चीत की और फिर प्रादेशीय मुख्यालय से सम्बन्ध स्थापित किया। यदि वह सबको काम में न जोत सकता था तो कम-से-कम उन्हें चेतावनी तो दे सकता था। उसने अपने रजिस्टर में बड़ी सावधानी से वह समय लिख दिया जिस समय उसने किसी से बात की थी। यदि इसके पश्चात् बोर्ड आफ़ रिव्यु बैठा तो कम-से-कम उसका लेखा तो साफ़ होगा।

वह चिन्तित और घबराया हुआ था और खुश्क हवा के कारण उस पर आतति छाई थी। खिड़की में से उसने आलस्यपूर्वक झांका और अखबार का टुकड़ा उड़ता हुआ देखा। हवा ने उसे उठाया और गिरा दिया, वह फिर उड़ने और उलटने पलटने लगा। काग़ज़ का टुकड़ा उसकी नज़रों से ओझल हो गया। तब उसे आभास हुआ कि हवा चलने लगी है और उसी ने काग़ज़ के टुकड़े को इस प्रकार उड़ाया है। वह सोच ही रहा था कि निरीक्षक ने प्रवेश किया।

उसने कहा, 'हे आर्न, मैं जल्दी ही जाग गया हूँ। वास्तव में मैं सो ही नहीं सका, इस हवा ने मुझे परेशान कर दिया है। आग का क्या हाल है ?'

आर्न के उत्तर देने से पहले ही वह लड़की जो आग के भय का ब्योरा लिखती थी आगई। वह उस छोटे घेरे पर जिस पर इन्द्र धनुष के रंग बने थे निशान लगाने चली गई। प्रेषक जानता था कि इस प्रकार

की तेज़ हवा अनिष्ट की सूचक है। जब लड़की चली गई और उसे वृक्ष दिखाई दिया तो वह चौंक गया। सुई लाल रंग के शक्ल में थी जिसमें लिखा था 'अत्याधिक।'

रात को 'स्पिटफैट' मध्यम पड़ गई थी। परन्तु उसने इतना अधिक स्थान घेर लिया था कि प्रातः के समय वह इधर-उधर बिखरी हुई सैकड़ों जगहों पर जल रही थी। एक लट्ठे के निचले भाग से धुआं उठने लगा। भूमि के भीतर एक सूखी हुई जड़ सुलगने लगी। घास फूस ऊपर से सियाह दिखाई देती थी परन्तु भीतर-ही-भीतर उसमें आग आगे बढ़ी जा रही थी।

सूखे वृक्षों के ऊँचे-ऊँचे ठूंठ और भी खतरनाक थे। जब पहली बार आग उनके पास से गुज़री तो उनके नीचे की काई जल उठी थी। उभार की उत्तुङ्ग गति के कारण ज्वाला उनकी चोटियों तक पहुँच गई और कुछ देर वे बड़ी-बड़ी मसालों के समान जलते रहे। शीघ्र ही काई जल कर समाप्त हो गई। नीचे की आग आगे बढ़ गई और उत्ताप का वेग कम हो गया। इस कारण परिणाम यह हुआ कि अन्ततः इन सूखे वृक्षों के ठूंठों में लगी आग बुझ गई।

अन्धेरे में इन ठूंठों को गिराना खतरे से खाली न था। सवेरा हुआ। दो कारुक अपनी मुंगरियां और फन्नियां लिये उनकी ओर बढ़े। बीस मिनट पश्चात् पहली बार 'काष्ठ' की आवाज़ आई और दर्रे के पार्श्व के साथ गूँजती हुई चली गई। धड़ाम से पहला ठूंठ भूमि पर आ गिरा और उसके गिरने की प्रतिध्वनि दर्रे के दूसरे पार्श्व से आती हुई प्रतीत हुई।

कुछ ठूंठ अभी भी धुआं दे रहे थे। हवा बीस मील प्रति घंटे की गति से चल रही थी इसलिये यद्यपि स्थिति सम्भल गई थी फिर भी बार्ट बहुत चिन्तित था। जो कारुक रात को आराम करते रहे थे वे काम पर वापिस आ गये थे। अब उसके पास २८ आदमी ऐसे थे जो घास फूस

हटाने और पहरा देने का काम कर सकते थे। उत्तरपूर्वी हवा के आने सेदर्रे के नीचे की दिशा में आग फिर भयावह रूप धारण कर गई थी। विश्राम प्राप्त कारुकों को उसने दूसरी दिशा में लगा दिया। उनमें कुछ को उसने झाड़ियों में बखेर दिया कि जहां-कहीं आग उभरती दिखाई दे उसे बुझा दें। लट्ठे हार और मिल से आये हुये आदमियों को उसने शेष रेखा पर पहरा देने के लिये नियत किया। इनमें से कुछ अभी भी ठूंठ गिराने में लगे थे।

दक्षिण और पश्चिम की ओर निचान था जहां बहुत गर्मी थी। पहाड़ों की बिखरी हुई चोटियों में से होती हुई ठंडी हवा उसकी ओर जा रही थी। वह हवा पहले ही खुश्क थी। जब वह ढलान के नीचे की ओर गई तो और भी खुश्क हो गई। उसमें गर्मी भी आगई। 'बिट्टर ब्रश' और 'माऊंटेन लिलेक' के पत्ते झुलस गये। चीड़ के वृक्षों से तेल टपकने लगा। जंगल के भूमितल पर पत्तियां खुश्क होकर चटक रही थीं।

सहसा काम करने वालों को यह विचार आया कि वह एक हारी हुई बाज़ी खेल रहे हैं। आग के गिर्द एक साफ़ की हुई संकीर्ण रेखा थी। रेखा के अन्दर की ओर खुश्क हवा ने दबी हुई आग को पुनः जागृत कर दिया और अधिक-से-अधिक ज्वालायें दिखाई देने लगीं। एक ठूंठ में से जहां आग बुझ गई प्रतीत होती थी धुआं निकलने लगा। फिर इसकी चोटी प्रज्वलित हो उठी। हवा के वेग से ज्वाला बढ़ने लगी। चिंगारियां उड़ने लगीं। रेखा के पार घनी और सूखी झाड़ियां और चीड़ की सूखी पत्तियां मानो इस बात की प्रतीक्षा कर रही थीं कि उस हवा में जिससे तारपीन के तेल की गंध आ रही थी, कब आग लगती है।

आखिर वह घड़ी आ पहुँची। कहीं दूर हवा का दबाव बढ़ गया था और उसमें झञ्झा के चिह्न उत्पन्न हो चुके थे। उसके कारण हवा का एक बहुत तेज़ झोंका मेढ़ के किनारे के साथ-साथ गरजता हुआ आया। वह दिखाई न देता था परन्तु टहनियां बड़े ज़ोर-ज़ोर से हिलकर उसका पता

देती थीं। होवल माऊंटेन की ढलान से हवा का एक अन्य तेज़ झोंका नीचे की ओर चला। ये दोनों झोंके मेड़ पर आकर मिल गये और उन्होंने एक बगूले का रूप धारण कर लिया।

वृक्षों की चोटियां घास के तिनकों के समान मुड़ने लगीं। आग की उत्तेजना में ठूंठों की चोटियों पर जलती हुई ज्वाला ध्वजा के समान उत्तुङ्ग हो गई। आवर्तित हवा की तेज़ी में वृक्षों की छाल और गली लकड़ी टूट-टूट कर जलती हुई उड़ने लगी। ये टुकड़े एक क्षण के लिए ऊपर उठते और फिर उड़ कर दूर चले जाते।

कुछ टुकड़े गिरते-गिरते ठण्डे हो जाते। कुछ रेखा के भीतर जाकर जलने लगते। परन्तु कुछ जलते हुए रेखा को पार कर आते और खुश्क पत्तियों में जा पड़ते। एक सैकिंड के लिये आग चीड़ की पत्तियों के ऊपर से गुज़र गई। फिर झाड़ियों में पहुँचकर प्रज्वलित हो गई। आदमी उग्रता से काम करने और सहायता के लिये चिल्लाने लगे। परन्तु आदमियों की संख्या कम थी, आग कहीं अधिक स्थानों पर लगी थी। सहायता कहां से आती ?

सहसा इसने एक विस्तृत आपत्ति का रूप धारण कर लिया। बीस स्थानों पर एक दम आग लग गई और वह घास-फूस में तेज़ी से बढ़ने लगी। हर ओर धुआं ही धुआं दिखाई देने लगा। झाड़ियां भड़क उठीं।

बार्ट रेखा पर ही एक स्थान पर खड़ा था। हवा का झोंका आया तो वह नीचे की ओर दौड़ा गया। उसने देखा कि खेल खतम हो गया है।

उसने चिल्ला कर कहा, 'लोगो, हट जाओ। पीछे हट जाओ। वहां पहुँचो जहां आग पहले ही सब कुछ विध्वंस कर चुकी है।'

एक गौरवर्ण लड़का झाड़ियों में से अपनी आस्तीन पर पड़ी एक चिनगारी को बुझाता हुआ निकला। बार्ट गिनने लगा, एक, दो, तीन, चार, पांच और वह स्लगगर छः।'

वह आगे बढ़ा। जो लोग आगे थे उसने उन्हें पुकारा। अब उसे यह आभास हुआ कि जली हुई भूमि पर जाना भी सम्भव नहीं क्योंकि अकस्मात उसके पीछे चारों ओर आग फैल गई थी।

एक लड़का अपनी गैंती फेंके घबराया हुआ उस आग की ओर देख रहा था जो उसके सामने और उसके पीछे जल रही थी। बार्ट उसके पास गया और बोला, 'मेरे साथ आओ।' आग से कन्नी बचाता हुआ वह भागा जा रहा था।

पुरानी रेखा के समानान्तर उसे हवाई जहाज़ से कूदने वाले दो व्यक्ति मिले। दूर धुयें के गुबार में उसे उनमें से एक और व्यक्ति दिखाई दिया जो हरिण की भांति कलांचे भरता हुआ पहाड़ी के नीचे की ओर जा रहा था। उसे दो अन्य व्यक्ति मिले जो आग बुझाने वाले कारुक में से थे। उसके पश्चात् आदमियों की खोज का समय न रहा।

उसके पीछे-पीछे पांच आदमी दौड़े आ रहे थे। कोण काटता हुआ वह नीचे की ओर भागा जा रहा था। और आग से बचने का प्रयास कर रहा था परन्तु आगे भी आग जल रही थी। चारों ओर धुआं छाया हुआ था। हवा के वेग के साथ वह लेटवां उड़ा जा रहा था। उन्हें धसक उठने लगी और उनका गला रुंधने लगा। आंखों से पानी बहने लगा और उनमें जलन होने लगी। हवा भट्टी के समान तप रही थी।

एक लड़का घबराकर चिल्लाने लगा, 'हाय, मैं जल गया, हाय हम सब जल जायेंगे।'

बार्ट ने उसकी आवाज़ सुनी और पूरे ज़ोर से उसकी गाल पर चपत दी और कहा, 'चुप, मैं बीस साल से इस जंगल में रह रहा हूँ, मुझे भी तुम्हारे समान अपनी जान प्यारी है। मेरे साथ-साथ रहो।'

वे कुछ देर तक आगे बढ़ते रहे। लड़का सुंकारता रहा। धुयें ने सूर्य को ढांप दिया था। भूमि भी दिखाई न देती थी। ढलान के स्पर्श द्वारा ही बार्ट को दिशा का ज्ञान प्राप्त करना पड़ता था। धुयें से दम घुटा जा

रहा था इसलिये वे भूमि के साथ नाक लगाकर सांस ले रहे थे। उनकी दौड़ ने घिसटने का रूप धारण कर लिया था।

अकस्मात धुयें में से बिल्कुल सामने उन्हें एक झाड़ी जलती हुई दिखाई दी। उसकी टहनियां अंगारों के समान दहक रही थीं। एक लड़के ने ऐसे किलकारी मारी जैसे वह किसी फंदे में फस गया हो। परन्तु बार्ट को अब घबराहट फैलने का कोई भय न रहा था। वे घबराहट की मंजिल से गुज़र चुके थे। अब वे चाहते थे कि कोई आकर उन्हें बचाव का मार्ग सुझाये।

पीछे से चिनगारियां उड़ती हुई आ रही थीं और वह जानता था कि आग उनके पीछे-पीछे बढ़ी आ रही है। अब शीघ्र ही उनके भाग्य का निर्णय होने वाला था। परन्तु बार्ट उन्हें उस झाड़ी के बीच से ले गया जिसकी टहनियां दहक रही थीं।

यह स्थानीय आग थी। सम्भवत: इसका फैलाव अधिक न था। परन्तु इसका मुकाबला करना ज़रूरी था। जिधर वे थे हवा के रुख आग उसी ओर जल रही थी। बार्ट ने एक गहरी सांस ली, अपने हाथ सिर पर रख लिये और आग की सीध में वह तीर की तरह लपका। अन्य लोग उसके पीछे-पीछे हो लिये। उन्हें अपने कपड़ों पर पड़ी चिंगारियों को बुझाना पड़ता था। उनके जूते गरम हो चुके थे। परन्तु वे एक ऐसे स्थान पर पहुँच गये थे जो पहले ही विध्वंस हो चुका था और जो एक टापू की भांति आग से घिरा हुआ था। यह स्थान बहुत ही तंग था और उन्हें भय था कि यहां उत्ताप बहुत बढ़ जायेगा और हो सकता है हालत इससे भी खराब हो जाये। हवा बन्द हो जाये या इस प्रकार का कोई और चमत्कार हो जाये तब तो बचाव का कोई अन्य साधन भी हो सकता था परन्तु वर्तमान स्थिति में इससे बेहतर स्थान कोई न था।

भूमि तप रही थी परन्तु वे उस पर लेट गये। धुयें के नीचे ताज़ा हवा थी। वे उसी में सांस ले रहे थे।

मैरोगोरडो की पहरेदारिन उस प्रातः कमरे को अन्दर ही बैठी रही। ऐसा प्रतीत होता था मानो हवा समस्त बुर्ज को हिला रही है। वह संकीर्ण पैड़ पर खड़ी तक न रह सकती थी।

रिवर्स रिज से आगे ऊपर की ओर बहुत ही हल्का धुआं दिखाई दे रहा था। एक सैकेंड के लिये उसने दूसरी ओर दृष्टि डाली। उसे यह एक क्षण ही प्रतीत हुआ। उसके पश्चात् जब उसने फिर उधर नज़र उठाई तो धुएँ का एक स्तम्भ उठता दिखाई दिया। वह घबराई हुई उसकी ओर ताक ही रही थी कि उसका शिखर और भी ऊँचा हो गया। वह टैलीफून करने के लिये दौड़ी!

उसने टैलीफून की घंटी बजाई और उत्तर की प्रतीक्षा करने लगी। अब उसका मन शान्त था। अब वह अपने आप को एक अनुभवी पहरेदारिन समझती थी।

उसने कहा—'हैलो, आर्न, 'स्पिटकैट' बढ़ रही है। धुएँ का एक भारी गुबार ऊपर उठ रहा है और तेज़ी से बढ़ रहा है।'

प्रेषक आर्नल्ड सोरन्सन को यह समाचार प्राप्त हुआ। उसने एक बार विचार किया और कहा, 'अच्छा, तो फिर यह आ ही गई।' उसके पश्चात् वह तुरन्त काम में लग गया।

दूसरे कमरे में उसका नायब बैठा था। उसने कहा, 'उठो,'स्पिटकैट' फैल गई है। हमारे जितने रेंजर हैं उन्हें सूचना दो और कहो कि वे हमें जो भी संभव हो, सहायता दें। अनियन फलैट पर एक शिविर स्थापित होना चाहिये।'

उसने रिसीवर उठाया और चालक से कहा—'प्रादेशीय मुख्य कार्यालय से मिला दीजिये।'

उसे यह बात अजीब लग रही थी कि उसके मन में शान्ति थी, उतावला पन न था। यह आग हार्ट क्रीक की 'फलैश फायर' के समान न थी।

उस आग को बुझाने के प्रयास में यदि एक मिनट की देर हो जाती

तो पांच एकड़ जंगल की अपेक्षा पांच हज़ार एकड़ जंगल की हानि हो जाती। परन्तु यह कल की स्पिटकैट, के समान भी न थी जिसे दस आदमी छतरियों द्वारा भूमि पर उतर कर बुझा सकते थे। अब सेना का एक दस्ता भी काफ़ी न था। अभी लड़ाई लड़ने का समय न था बल्कि सेना एकत्रित करने का समय था। कल तक जो आग एक सीमांत घटना के समान थी आज उसने एक पूर्ण युद्ध का रूप धारण कर लिया था।

एक छोटी सी विध्वंसित टुकड़ी के चारों ओर आग जल रही थी। वे छहों इस भूमि पर लेटे पड़े थे। चार बाहर की ओर थे और अन्दर लेटे दो व्यक्तियों का संरक्षण कर रहे थे। उनमें से एक को जनून हो गया था। दूसरे ने उसे पकड़ रखा था कि कहीं वह कूद कर आग में न जा पड़े। उसने एक बार कूदने का प्रयत्न भी किया था। दो लड़के अपने साथ अपने बेलचे ले आये थे। अब वे इस टुकड़ी के मध्य भाग से मिट्टी, जली हुई पत्तियों और पत्थरों को खोद-खोद कर बाहर की ओर उनका ढेर लगा रहे थे। खुरच कर नीचे से जो मिट्टी निकलती थी वह कुछ ठण्डी थी। परन्तु इतने पत्थर थे कि वे अधिक भूमि को न खुरच सके। इस ढेर से केवल उनके चेहरों को परित्राण प्राप्त हो सका।

बार्ट ने सोचा कि अभी तक जो हुआ वह अच्छा ही हुआ। आग के पहले हल्ले में उनके आस-पास के वृक्षों की छाल झुलस गई थी और अब उसमें से धुआं निकल रहा था। यदि छाल जलने लगती तो वहां इतनी गर्मी हो जाती कि आदमी उसे सहन न कर सकता। या हो सकता था कि हवा की ऑक्सिजीन जल कर समाप्त हो जाती और धुएँ से उनका दम घुट जाता। यदि आग उठकर ऊँचे वृक्षों की चोटियों पर पहुँच जाती और शिखर—अग्नि का रूप धारण कर लेती तो वह गरजती हुई गुज़र जाती परन्तु जलती हुई पत्तियों और टहनियों की वर्षा होने लगती। चन्द ही मिन्टों में इसका निर्णय होने वाला था। जो हो रहा था, अच्छा ही हो रहा था।'

जब से हवा चलने लगी थी ''स्पिटकैट'' मेढ़ पर आधा मील

आगे बढ़ गई थी। स्थानीय आगें इससे भी आगे पहुँच गई थीं। आग एक ठोस दीवार के समान न बढ़ रही थी। बहुत सी स्थानीय आगें थीं, इसकी बहुत सी नोकें थीं जो आगे निकली हुई थीं। उनके सिरों पर हरे घास की टुकड़ियां बड़ी तेज़ी से जल रही थीं।

हवा का वेग कम हो गया था परन्तु आग पहले से भी अधिक प्रचंड थी। इसका अपना उत्ताप ही इतना अधिक था कि अब यह तेज़ी से जल सकती थी। हवा के प्रथम वेग ने आग को अपनी लपेट में लेकर आगे की ओर धकेल दिया था और इसकी गर्मी को नीचे की ओर। परन्तु अब बहुत सी हवा जिसे अत्यन्त गर्मी पहुँची थी, ऊपर की ओर उड़ने लगी। एक छोटे से पेड़ ने आग पकड़ ली। फिर धाँयें-धाँयें करता हुआ चीड़ का २०० फीट ऊँचा वृक्ष आग की भेंट हो गया। उससे ऐसी ज्वाला उत्पन्न हुई जो वृक्ष से भी सौ फीट ऊपर तक पहुँच गई।

अब राजसी-ठाठ के साथ जैसे उसे कोई जल्दी न हो, शिखर अग्नि एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर उछलती हुई मेढ़ के नीचे की ओर जा रही थी। ऐसा प्रतीत होता था मानो सृष्टि का अन्त निकट आ रहा है। जैसे प्रेअरी की आग में घास के तृण जलते हैं वैसे ही चीड़ और तालीश के पेड़ जल रहे थे। शोले सैकड़ों फीट की ऊँचाई तक जाते थे। हवा के वेग से बढ़ते हुये उत्ताप को रोकने के लिये वन-विभाग, प्रदेश और खित्ते की समस्त शक्ति चन्द चींटियों के समान थी जो भूमि पर रेंगती चलती हैं।

भूमि की उस टुकड़ी पर लेटे-लेटे बार्ट ने आग की शायें-शायें और गर्जन सुनी, जिससे साफ़ पता चलता था कि आग ने शिखर—अग्नि का रूप धारण कर लिया है। उसके ऊपर धुआं बुरी तरह छाया था। उसने धुएँ में ही ज़रा सिर उठाया और उसे इधर-उधर घुमाया। गज़ब की गर्मी थी। वह मालूम करना चाहता था कि आवाज़ किधर से आ रही है, जीवन और मृत्यु का प्रश्न था। प्रश्न यह था कि शिखर अग्नि हवा के रुख उनकी ओर बढ़ी आ रही है या मेढ़ के नीचे की ओर जा रही है। सहसा उसे विश्वास हो गया कि वह मेढ़ के नीचे की ओर जा रही है।

उसी क्षण ठण्डी और ताज़ा हवा का एक झोंका आया। उसमें धुआं न था और वह भूमि के साथ साथ-चल रहा था। यह झोंका उसके चेहरे को छूता हुआ निकल गया। तब अकस्मात उसे इसका बोध हुआ।

उसने चिल्लाने की चेष्टा की, "लड़कों, इसका समर्थन करो।" उसके मुँह में धुआं भरा था और उसका गला सूख रहा था। इसलिये केवल उसके ओंठ और ज़बान हिलती दिखाई दी परन्तु 'कुड़ कुड़' के अतिरिक्त एक भी शब्द उसकी ज़बान से न निकला।

ठण्डी हवा का उन्हें भी आभास हुआ था। उसका दूसरा झोंका आया तो उनमें से दो ने अपने सिर ऊपर उठाये। उन्होंने प्रश्न की दृष्टि से उसकी ओर देखा। परन्तु उसका चेहरा देख कर वे खीस पड़े।

निरीक्षक ने टाईप करना छोड़ दिया। वह रेडियो द्वारा आग का समाचार पाना चाहता था। उसने कहा, "मैं आ रहा हूँ। मोटरकार में किसको साथ लाऊं।?"

प्रेषक ने कहा, "राल्फ़ और दो लड़कियां हाज़री लगाने के लिये जा रहे हैं। उन्हें साथ लेते जाओ। आग का अधिपुरुष कौन है?"

"इसमें पूछने की क्या बात है? बार्ट है।"

"हां, हां, बार्ट।"

निरीक्षक ने इसके पश्चात् स्विच बन्द कर दिया।

एक मिनट पहले ऐसी स्थिति थी कि वे उत्ताप से झुलस जाते और धुएं से उनका दम घुट जाता। उनकी छोटी सी टुकड़ी के चारों ओर आग दहक रही थी। दूसरे क्षण वे बैठे ठंडी और ताज़ी हवा में सांस ले रहे थे।

बार्ट उठा और उसने अपने आप को संभाला। मेढ़ के नीचे की ओर से शिखर-अग्नि की 'धायें-धायें' की आवाज़ आरही थी। मेढ़ के ऊपर जिधर से वे आये थे कई स्थानों पर आग भड़क रही थी। परन्तु वे अलग

थलग पड़े थे। सामने की भूमि इतनी गरम प्रतीत न होती थी कि उस पर चला न जा सके।

सहसा उसे आभास हुआ कि वह केवल अपनी या अपने कारुक की ज़िंदगी बचाने वाला नेता नहीं है। वह बारलो जिले का रेंजर है। वह एक ऐसी आग को बुझाने का ज़िम्मेदार है जो काबू से बाहर होकर भड़कती जा रही है। वह एक महत्वपूर्ण व्यक्ति है। यदि वह आग बुझाने का काम अपने ऊपर नहीं लेता तो हो सकता है वहां कुछ भी न हो या सब काम गड़-बड़ हो जाये।

उसने कहा, "मैं जा रहा हूँ"। तुम चाहो तो मेरे साथ आ सकते हो, चाहो तो यहीं ठहरे रह सकते हो। अब खतरा दूर हो गया है।"

वह जानता था कि वे सब उसके पीछे-पीछे चल पड़ेंगे। ऐसा ही हुआ। उसे अन्य कोई व्यक्ति दिखाई न दिया। वह पगडंडी से नीचे की ओर बढ़ता और चिल्लाता जा रहा था। अब उससे दर्रे की दूसरी ओर से किसी के पुकारने की आवाज़ सुनाई दी। वह अपनी छोटी सी टोली को खाड़ी की ओर ले गया। उन्होंने खाड़ी पार की और वे दूसरे पक्ष पर चढ़ने लगे।

पहले दिन सवेरे जहां उसने बैटी को बांधा था, वहां बहुत से आदमी बैठे थे। उनमें से अधिकतर मिलके कारुक में से थे। वे नेताहीन थे। उनकी आत्मशक्ति क्षीण हो चुकी थी। वे आग की ओर ताक रहे थे, जैसे वे किसी दृश्य को देख रहे हों।

बार्ट के सम्मुख इतने काम थे कि वह क्षणभर के लिये यह न सोच सका कि पहले कौन सा काम आरंभ करे। फिर उसने पूछा कि क्या कोई व्यक्ति आगमें जल कर तो नहीं मर गया। उन्होंने अपने कंधे हिला दिये। उन्हें किसी ऐसे व्यक्ति का बोध न था जो मारा गया हो। फिर उसने कारुकों के अधिपुरुषों का पता पूछा। उन्हें इसका भी बोध न था। कुछ देर प्रश्न करने से ज्ञात हुआ कि स्लग्गर और एक अन्य अधिपुरुष दर्रे के नीचे की ओर हैं और वे स्थानीय आगों को बुझाने का प्रयास कर रहे

हैं। उनके साथ शायद और आदमी भी थे और वे सब ढलान के इस ओर थे। (यह पहला संकेत था जिससे यह ज्ञात हुआ कि सब किये-कराये पर पानी नहीं फिर गया है।)

बार्ट ने चार आदमियों को पुरानी रेखा का निरीक्षण करने और मिल के कारक के अधिपुरुष का पता लगाने के लिये भेजा और कहा कि यदि वहां औज़ार पड़े हों तो उन्हें उठा लायें। चार को उसने मेढ़ की चोटी पर भेज दिया। उनका काम था कि दूसरी ओर झांक कर देखें कि क्या होरहा है। बाकी आदमियों का पता लगायें और देखें कि किसी को प्रथम सहायता की आवश्यकता तो नहीं।

धीरे-धीरे उसने पुनः अनुशासन स्थापित किया। निर्जीव से व्यक्तियों में पुनः जीवन आ गया। बाकी आदमी उसने नीचे भिजवा दिये कि वे जाकर स्थानीय आगों को बुझाने में स्लग्गर और उसके साथियों की सहायता करें।

अब उसे उन ५ व्यक्तियों की ओर दृष्टि डालने का अवसर मिला जो इस भारी आग के अन्तर्गत उसके साथ रहे थे। जहाज़ से कूदने वाले दो आदमी ठीक-ठाक मालूम होते थे। वे गठीले प्रतीत होते थे। उसने दो बेलचे उन्हें दिये और उन्हें भी दर्रे के नीचे की ओर भेज दिया। जिस लड़के को जनून हो गया था, वह भी जाना चाहता था। परन्तु बार्ट जानता था कि अग्नि रेखा पर उसका विश्वास नहीं किया जा सकता। उसने उसे आराम करने को कहा। बाकियों में से एक का कुर्ता जल गया था। पांचवें का कुर्ता जल कर राख हो गया था। परन्तु वे बच गये। हो सकता था कि हालत इससे भी खराब हो जाती।

अब बार्ट के सम्मुख कोई विशेष काम न था। वह पगडंडी की धूल में ही बैठ गया। उसकी आंखों पर धूप पड़ रही थी। खुश्क हवा जो अब गरम हो गई थी, दर्रे की ओर जा रही थी। मेढ़ से एक मील नीचे आग ने शिखर अग्नि का रूप धारण कर लिया था।

किसी वृक्ष को आग लगती और उससे ज्वाला उत्पन्न होने लगती

तो बार्ट को ऐसा अनुभव होता, जैसे उसका कोई अपना अंग जाता रहा हो। वह इस प्रकार थक गया था कि अधिक समय तक एक विषय पर सोच भी न सकता था कि कितनी हानि पहुँच चुकी है। वहां बैठे-बैठे ही उसका सिर आगे की ओर झुक गया और उसे ऊँघ आ गई।

आग की गर्मी बहुत तेज़ थी। एकड़ भर की टुकड़ी पर ऑक्सीजन गैस बिलकुल जल चुकी थी। यह टुकड़ी अलग-थलग थी। वहां ताज़ा हवा न पहुँच रही थी। ऑक्सीजन के अभाव के कारण एक क्षण के लिये पत्तियां और टहनियां दहकने लगीं और लाल सुर्ख हो गईं जैसे बिजली के बल्ब की भीतरी तार चमकती है। फिर एक दम जैसे ही हवा दाखिल हुई इस एक एकड़ भूमि पर ऐसा विस्फोट हुआ जैसे धरती की छाती फट पड़ी हो। वृक्षों की चोटियों से २०० फीट ऊपर तक आग और धुंए के बगूले उठने लगे। इस गरम रौ के कारण छाल के टुकड़े और कहीं-कहीं पूरी टहनियां उड़ती दिखाई दीं। ये भी जल रही थीं। गर्मी की रवें बढ़ रही थीं। इनसे प्रभावित होकर हवाई जहाज़ कभी धुंए में खो जाता, कभी उससे बाहर निकल आता।

रविवार का दिन था। दक्षिण की ओर पांच सौ मील दूरी पर पैसाडीना के नगर में लोग गिर्जाघरों की ओर जा रहे थे। यातायात से सड़कें पटी पड़ी थीं। एकाएक सब गाड़ियां और सब लोग दुबक कर एक ओर हट गये। वन-विभाग की एक गाड़ी पूरे ज़ोर से धूतू बजाती चली आ रही थी। कोलोरेडो की सड़क जो पांच मील लम्बी थी, उसने पांच मिनट में तय कर ली। यह गाड़ी बरबंक के हवाई अड्डे को जा रही थी। स्टौकटन, रेनो और सैकरेमैन्टो के कटहरों पर लाऊड स्पीकर बोल रहे थे "जंगल की आग बुझाने के लिये आदमियों की आवश्यकता।"

दूर पश्चिम के सैनिक-शिविर से बहुत से लोग आज्ञापत्र लेकर बाहर चले गये थे। जो अभागे लोग वहां रह गये थे उन्हें सार्जेंट ने जा लिया।

"उठो, बाहर निकलो। आग लगी है···"

सभी स्थानों से आदमी आ रहे थे। क्लैमथ की जंगल से ढकी मेढ़ों से क्लीवलैंड की झाड़ियों से ढकी चोटियों से जो मैक्सीको के पहाड़ों से जा मिलती हैं, लौस पैड्रीस के दर्रों से जहां समुद्री धुंद लाल जंगलों में घूमती है, इनियो के रूक्ष ढलानों से जहां चीड़ के वृक्ष की पंक्ति मरुस्थल से जा मिली है—सभी स्थानों से झुण्ड के झुण्ड रवाना हो रहे थे।

सड़क के सिरे पर पहुँच शिविर गाड़ी मुड़ी और रुक गई। शिविर अधिपुरुष कूदकर बाहर आगया और उस स्थान का निरीक्षण करने लगा। शिविर के लिये यह एक अच्छा स्थान था। यहां वेक्स क्रीक और अनियन क्रीक के संगम् पर भूमि सपाट थी। त्रिभुज आकार का दस एकड़ का चीड़ के वृक्षों से ढका हुआ टुकड़ा शिविर के लिये बहुत ही उचित था। शिविर अधिपुरुष ने अपने मन में ही शिविर का नक्शा बनाया। अनियन क्रीक से होती हुई सपाट भूमि के दक्षिणी सिरे पर जो सड़क आती थी, उसके दोनों ओर गाड़ियों के ठहरने का स्थान होगा। उसके साथ ही हाजरी लगाने वाला बैठेगा। मोड़ पर भण्डार होगा। सड़क और अनियन क्रीक के बीच में यातायात, प्रथम सहायता, और मुख्यकार्यालय उसके सामने होंगे। खाड़ियों के कोण में आदमियों के बैठने के लिये स्थान छोड़कर रसोई घर बनेगा। वेक्स क्रीक के ऊपर की ओर सोने के लिये स्थान होगा। पाखाने के लिये पहाड़ की पहली ढलान पर स्थान बनाया जायेगा।

इस पहली गाड़ी के पश्चात् एक दूसरी गाड़ी सामान और पांच आदमियों के शिविर-कारुक को लेकर आई। आरम्भ में कुछ गड़बड़ मची। कभी-कभी किसी वांछित चीज़ को लेने के लिये कोई व्यक्ति इधर-उधर भागता दिखाई दिया। परन्तु तुरन्त ही मुगरियों के चलने की आवाज़ आने लगी और लोहे की सलाखें भूमि में गाड़ी जाने लगीं। फिर सलाखों के ऊपर जो छल्ले लगे थे उनमें से रस्सियां गुज़ार दी गईं। अब जंगल की इस सपाट भूमि का रूप बदल गया। इसमें अब आयतें

और वर्ग दिखाई देते थे, जिन्हें बहुत सफाई से इंगित किया गया था। यह स्थान एक गांव के समान प्रतीत होता था, जो निवासियों के आने की राह देख रहा हो। रसोइये ने आग जला दी। वह थोड़ी ही देर में सौ आदमियों के लिये दोपहर का भोजन तैयार कर देगा। सामान देने वाला क्षण भर में औज़ार दे सकता था। यातायात का प्रबन्धक आने-जाने वाली गाड़ियों की जांच के लिये लैस हो बैठा था।

सैकेंट स्ट्रीट में अभी भी लाऊड स्पीकर बोल रहा था, 'आग बुझाने के लिये आदमियों की आवश्यकता है।' बो फौक्स जिसे द्वार बन्द होने से भय लगता था, ड्रायवर के पास गया। वह बेकार था और उसके पास एक पैसा भी न था। उसके सामने खड़े एक आदमी ने किसी से कहा:

'हां, हां, क्यों नहीं? जाओ। वे तुम्हें भोजन देंगे। जंगल में जाकर तुम बहुत काम कर सकते हो।'

वे भरती होने के लिये चले। बो फौक्स भी उनके पीछे-पीछे हो लिया।

वह उनकी देखा-देखी चल पड़ा था। उसके अपने मनमें जाने की कोई इच्छा उत्पन्न न हुई थी।

'केट स्किन्नर, बार्न जूलिक पौकविल्ले के किसी शराब खाने में बैठा था कि अग्रजन उसकी खोज करता हुआ वहां आ पहुँचा।

'बार्न, उपत्यका में आग लगी है और तुम्हारी तथा तुम्हारे बल की आवश्यकता है।'

बार्न ने कहा, 'मेरी बला से। आज मेरी छुट्टी है।' उसके पश्चात् उसने कुछ अनाप सनाप बकना आरम्भ किया।

अग्रजन जानता था कि अब क्या कदम उठाया जाये

उसने कहा, बार्न, सुनो वन में जो लोग ट्रैक्टर चलाने का काम करते हैं वे सब हार बैठे हैं। वे जंगलों में काम करने योग्य सिद्ध नहीं हुये। वहां तुम्हारे जैसे दक्ष व्यक्तियों की आवश्यकता है।

बार्ने ने मदिरा बेचने वाले से कहा, 'मुझे एक प्याला और दो।' कारीगर के सामने जब कोई कर्तव्य पालन का समय आ जाता है तो उसके मन में बेचैनी हो जाती है। बार्ने के मन में भी यह बेचैनी उत्पन्न होने लगी। वह फिर अनाप-सनाप बोलने लगा परन्तु अन्त में उसने कहा, 'अच्छी बात। मैं जाऊँगा। मुझे धकेलने का प्रयास मत करो।' उसने जल्दी-जल्दी मदिरा का गिलास गटक लिया।

रविवार के दिन लोगों को भरती करना कठिन होता है परन्तु प्रेषक को आज इस काम से सन्तोष हो गया था। आदमी जा रहे थे। दर्जनों नहीं बल्कि सैकड़ों। वहां तक पहुँचना अब भी एक कठिन समस्या थी। ट्रैक्टरों को वहां तक पहुँचाने का एक ही उपाय था कि शेबा के पार फ्लैट तक उन्हें ट्रकों द्वारा ले जाया जाये। वहां उन्हें उतार लिया जाये और फिर वे रिवर्स क्रीक के ऊपर की किसी मेढ़ के साथ-साथ उस स्थान तक जायें जहां आग लगी थी। इसमें देर तो बहुत लगेगी परन्तु दक्षिण की ओर रिवर्स रिज के साथ की चट्टान और अनियन क्रीक की संकीर्ण खाड़ी को पार करना ट्रैक्टर के लिए असम्भव था, एक बात ज़रूर थी यदि वे आग तक न पहुँच सके, आग तो अवश्य ही उन तक पहुँच रही थी। वह अनियन फ्लैट पर स्थित सड़क के सिरे की ओर बढ़ी चली आ रही थी। आज सवेरे आग तक पहुँचने के लिये एक व्यक्ति को सात मील का फासला पगडण्डी द्वारा तय करना पड़ा था। कल सवेरे तक शायद इससे आधा फासला भी तय न करना पड़े।

अग्नि-शिविर को जाने के लिए निरीक्षक ने बहुत चैन से तैयारी की। उसके लिये उत्तेजित होना या जल्दी करना उचित भी न था। उसके साथ आगे मुख्य लिपिक था जो टाईम कीपर बन कर जा रहा था। पीछे दो उत्तेजित लड़कियां बैठी थीं जिन्होंने नीले रंग के वस्त्र पहने हुये थे। वे नायब बनकर जा रही थीं। वह दो बार रुका और रेडियो द्वारा प्रेषक से बातचीत करने लगा। उसे मालूम हुआ कि भरती बड़े ज़ोर-शोर से हो रही है।

टाईमकीपर और उसकी दो नायब लड़कियां अभी जाकर बैठे ही थे कि पहला कारुक आ गया। उसके पश्चात् वे दिन ढलने तक आते ही रहे।

इक्कीस (२१)—मैंग्ना के लट्ठेहार और मिल के आदमी।

पैंतीस (३५)—सफ्फोक के स्थानीय व्यक्ति, चरवाहे, मज़दूर और नगर के आवारह गिर्द लोग।

दस (१०)—बिजली और शक्ति का काम करने वाले जिनका अधिपुरुष जौनी बार्टले था।

पच्चीस (२५)—'ज़ोन हाट शाट क्रू' जो तेशावर सैनिक थे। ये पहलवानी करते थे और रात की लड़ाई के लिये उन्हें विशेष रूप से शिक्षण दिया गया था।

चवालीस (४४)—एक ऐसे कारुक के लोग जो 'बिलस्टर रस्ट कन्ट्रोल' पर बेर चुनने का काम करते थे।

तीन (३)—लट्ठेहार जिनके पास शक्ति से चलने वाला लकड़ी चीरने का आरा था।

पैंतालीस (४५)—रैनी से उठाये हुए व्यक्ति। ये आपसी लड़ाइयों से बचे खुचे व्यक्ति थे। किसी के दांत गायब थे तो किसी की नाक। किसी की कोई उँगली गायब थी और किसी की आंख के स्थान पर केवल एक गड्ढा था।

दिन ढलते तक ऐसे व्यक्ति भी आते रहे जिन्हें जंगल में काम करने का अनुभव था। उन्होंने चीड़ की लकड़ी के बिल्ले लगाये। वे कारुकों का नियंत्रण भलीभाँति कर सकते थे।

बार्ट ने बागें एक लड़के की ओर फेंक दीं और वह स्वयं मुख्य कार्यालय की ओर बढ़ा। उसका चेहरा धुयें से और कालक से सियाह हो रहा था। जहां कहीं उसने उसे अपनी आस्तीन से पोंछा था वहां धारियां बनी हुई थीं। उसकी आंखों में खून उतरा हुआ था और वे काले-काले चेहरे में खूब चमक रही थीं। झरीट लगने से उसके हाथ की पीठ पर लहु निकल

आया था। जो अब जम गया था। कमीज़ की एक आस्तीन फट कर चिथड़े हो गई थी। कमीज़ की पीठ तीन स्थानों पर जल गई थी। उसकी टोपी और कोट गायब थे। वह लंगड़ाता हुआ चल रहा था।

उसके आने से उस सपाट भूमि पर हल चल मच गई।

'वह देखो, रेंजर बार्ट आ रहा है। अब हम चलेंगे। कहो, बार्ट, परीक्षा का समय आ पहुँचा है। तुम तो इस भूमि के चप्पे-चप्पे से परिचित हो।'

बैनरोच उसकी पीठ पर थपकी दे रहा था। जैरी बैरेट ने उसकी बाज़ू थाम रखी थी।

बार्ट थक चुका था। परन्तु उसने अनुभव किया कि लोग उस पर कितना भरोसा करते हैं और उस पर स्नेह की वर्षा करते हैं। उसे मानो शारीरिक सहायता प्राप्त हो गई थी। वह मुख्य कार्यालय में पहुँचा और उसकी दृष्टि निरीक्षक पर पड़ी। उसका मन शीतल हो गया। फिर उसके मन में एक उबाल उठा। जब पहले पहल उसकी दृष्टि निरीक्षक पर पड़ी तो उसकी आंखों में उसे स्नेह की झलक दिखाई न दी। घृणा के चिन्ह भी उसकी आंखों में न थे। उसकी समतल आंखें मानो कुछ खोज रही थीं और पूछ रही थीं। 'यह रेंजर कैसा है? क्या वह अपना कर्तव्य पालन कर सकेगा?'

निरीक्षक का कद बार्ट से आठ इंच अधिक ऊँचा था। इस अन्तर के कारण उसकी आंखों में भी बड़प्पन आगया था। उसकी बांह भी लम्बी थी और हाथ भी। बांह और हाथ को फैलाते हुए उसने कहा।

'बार्ट, मालूम होता है, तुम थक गये हो।'

दस मिनट पहले बार्ट इतना थका हुआ था कि वह भूमि पर आ पड़ता। परन्तु अब जो उबाल उसे आ रहा था उसने उसके शरीर में नया जीवन डाल दिया। नई शक्ति का संचार होने लगा।

'निरीक्षक—हम पुराने खुर्राट सब सहन कर सकते हैं। एक पुराने धुआंभक्ष के लिये यह मामूली बात है।'

निरीक्षक ने दृष्टि ऊपर उठाई और इधर-उधर झांका। उसने एक भी शब्द नहीं कहा परन्तु उसकी दृष्टि ने ही सब रेंजरों को वहां से भगा दिया। अब बार्ट और वह दोनों अकेले थे।

उसने कहा, 'बार्ट, बताओ, आग कैसी है ?'

बहुत बुरा हाल है, परन्तु मेरा विचार है कि कल सवेरे तक हम उस रप काबू पा लेंगे।'

'तुम्हारा विचार है या तुम्हें आशा है ?'

'मैंने 'विचार' कहा है। क्यों नहीं ?'

'हां।'

कुछ देर दोनों चुप रहे। फिर निरीक्षक ने हिचकिचाते हुये कहा,

'बार्ट, सुनो। मैं हिसाब लगा रहा था। तुम्हें हार्टक्रीक की आग बुझाने के लिए वीरवार को बुलवाया गया था। आज रविवार की संध्या है। मुझे मालूम है कि तुम्हें जरा भी विश्राम प्राप्त नहीं हुआ। यदि तुम कुछ देर विश्राम कर लो और मैं बैन रोच को अधिपुरुष नियुक्त कर दूं तो कैसा रहे ?'

बार्ट के जबड़े अकड़ गये।

'निरीक्षक, तुम जो चाहो कर सकते हो। तुम चाहो तो मुझे निकाल कर फेंक सकते हो। परन्तु यह मेरा जिला है और आग इसी में लगी है। मेरे वृक्ष जल रहे हैं। मैं इस प्रदेश को खूब जानता हूँ।'

निरीक्षक बहुत देर तक सोचता रहा।

,अच्छी बात, यह तुम्हारी ही जिम्मेदारी है।'

बार्ट ने आग पर काबू पाने के लिये समस्त मानव शक्ति को तीन हिस्सों में बांटा। पहला हिस्सा उत्तरी पक्ष पर जो विल्सन क्रीक की ओर था नियुक्त किया गया। दूसरा अनियन क्रीक की ओर दक्षिणी पक्ष पर, तीसरा हिस्सा सामने की ओर। बार्ट ने ऐन्जलीस के एक आदमी को पहले भाग का अधिपुरुष नियुक्त किया। ट्रीनीटी के एक आदमी को

दूसरे भाग का और बैन रोच को जो उसका मित्र, इस क्षेत्र का पुराना योद्धा और पौंडेरोसा का खुर्राट था तीसरे भाग का अधिपुरुष बनाया। रबब्रीब्रश के जैरी बैरेट् को उसने कर्मचारियों का मुख्य अधिपति नियुक्त किया। इन भागों के अधिपुरुषों के नीचे शकल अधिपुरुष थे और उनके नीचे कारुक अधिपुरुष। कारुक अधिपुरुषों को उन बारह आदमियों के नाम दे दिये जाते थे जो उनके कारुक में सम्मिलित होते थे।

कारुक पंक्ति बना कर खड़े हो गये और उन्हें औजार, लैम्प और भोजन दे दिया गया। सूर्य अस्त के समय उन्होंने लट्ठों का पुल पार करना शुरू किया। वे उसके पश्चात् उस पगडंडी पर चढ़ने लगे जिस पर आग लगी हुई थी।

निरीक्षक मुख्य कार्यालय से बाहर चला गया। वह बार्ट के काम में बाधा डालना न चाहता था। रसोई घर का निरीक्षण करने के पश्चात् वह जाकर अपनी कार में बैठ गया।

बार्ट के विषय में उसने जो निश्चय किया था वह बहुत कठिन निश्चय था। वह उस पर पुनः विचार करने लगा और इस विषय के दोनों पक्षों की जांच करने लगा। बार्ट आग का मुकाबला करना जानता था। वह उस प्रदेश से भी अन्य लोगों की अपेक्षा अधिक परिचित था। उसके ये दो प्रमुख गुण थे। दूसरी ओर यह बात थी कि वह बहुत थक चुका था और इस प्रदेश के विषय में वह भावुक था। आग का मुकाबला करने के लिये स्पष्ट बुद्धि की आवश्यकता है। कल दस हज़ार वृक्ष बचाने के लिये कई बार आज एक हज़ार वृक्षों की बलि देनी पड़ जाती है।

पक्ष और विपक्ष का समतुलन करने के पश्चात् उसे ज्ञात हुआ कि समस्त जंगल में ही नहीं उस समस्त प्रदेश में लोग जौन बार्टले से परिचित थे और उसे पसन्द करते थे। वे उसे प्यार से बार्ट कहकर पुकारते थे। जब आदमियों को अपने नेताओं पर विश्वास होता है तभी वे पूर्ण रूप से तल्लीन होकर आग का मुकाबला करते हैं।

अन्धेरा होने के पश्चात् नक्शा नवीस जो शास्ता रेंजरों में से एक

था मुख्य कार्यालय में गैसोलीन के प्रकाश में अपनी मेज़ पर बैठा पहला नक्शा बना रहा था। आज जंगल का जो भाग जल गया था उसे दिखाते हुए उसके मन में शोकातुर विकृत प्रसन्नता उत्पन्न हुई। उसने बड़ी साव-धानी से उसे नक्शे पर इंगित किया और उसका हिसाब लगाया।

पुर के नक्शे में उसने वह भूमि दिखाई थी जो शनिवार को आग की लपेट में आई थी। यह बहुत तुच्छ प्रतीत होती थी। 'डैफीनेट' के सातवें भाग तक सीमित इस भूमि का क्षेत्रफल केवल चालीस एकड़ था। उसकी अपेक्षा आज जो जंगल विध्वंस हुआ था उसका परिमाण बहुत अधिक था। पुर की लकीर से होती हुई आग डियरहाऊंड के १२वें, १३वें और १४ वें भाग में फैल गई थी। यह अन्य भागों में भी पहुँच रही थी। दोनों खाड़ियों के बीच जो मेढ़ थी आग उसे पार कर आई थी। मेढ़ के सिरे पर उसने रिवर्स क्रीक को पार कर लिया था और अब वह रिवर्स फ्लैट में कई स्थानों पर जल रही थी। वह तीन मील लम्बी और लग-भग आधा मील चौड़ी भूमि को घेरे थी। उत्तर की ओर एक स्थानीय आग थी। यहाँ वह विल्सन क्रीक को पार करके आई थी। उसने नारंजी पैंसिल से इस क्षेत्र का रेखा चित्र बना दिया।

फिर उसने बड़ी सावधानी से हिसाब लगाया। उसने क्षेत्र का परि-माण १०८५ एकड़ अर्थात् दो वर्गमील से कुछ कम निकाला।

आठवाँ दिन

सैरोगोरडो की मचान पर आधी रात के समय भी पहरेदारिन पैड पर खड़ी थी। रिवर्स रिज से बहुत दूर आग ने क्षितिज को गहरे गुलाबी रंग से रँग दिया था।

नक्शे को, हवा की गति को और इस गुलाबी चमक को देखकर उसे बोध हो गया था कि आग सैरोगोरडो की ओर बढ़ी आ रही है। आरम्भ में वह बारह मील की दूरी पर थी अब केवल नौ मील की दूरी पर।

नौ मील का फासला बहुत होता है। चमक का अति उज्ज्वल भाग

जो ज्वाला की वास्तविक रेखा को दर्शाता था बहुत छोटा था। वह क्षितिज पर एक बिन्दु के समान था। दिन भर रेडियो पर उसे भरती का समाचार मिलता आ रहा था। ५ प्रदेश से ही हज़ारों व्यक्ति सिपटकैट पर काबू पाने के लिये जा रहे थे। संभव था कि आग पर काबू पा लिया गया हो या काबू पाने की तैयारियां हो रही हों।

वह स्वयं भी उन लोगों में से एक थी, यद्यपि वह बेलचा न चला रही थी। साथी पन के विचार से उसका मन उत्तेजित हो रहा था। कभी-कभी यह भाव इतना तीक्ष्ण होता कि उसका गला रुँधता सा प्रतीत होता था।

उस शाम को वह बहुत खुश थी। हां—आग के होते हुये भी उसके मन में प्रसन्नता थी और शायद उसकी प्रसन्नता का कारण आग ही थी। आग लगते ही वह पुनः संसार में आ गई थी। वह पहाड़ की चोटी पर अब एक अकेली लड़की न थी, जो उन कठिनाइयों से बचकर आई थी जिनका वह मुकाबला न कर सकी थी। अपने आप को वह पुन: मानव समाज का अंग समझने लगी थी।

प्रसन्नता के साथ-साथ उसे सूनापन महसूस हुआ। वह चाहती थी कि इस खुशी में कोई उस से हिस्सा बटाये।

रात होने के पश्चात् सैकरोमैंटो की घाटी में ठण्ड हो गई थी। पहाड़ की ढलान के साथ-साथ अब भी ठण्डी हवा की रौ फैलती आ रही थी परन्तु इसमें अब पहले का सा आवेश न था। अब यह नदी की बाढ़ के समान न थी बल्कि उस सरिता के सदृश थी जो वेग से अपितु शान्ति पूर्वक बहती है। हवा बन्द हो जाने से वृक्षों की चोटियों पर जलती हुई ज्वाला सीधी ऊपर को उठने लगी थी। कुछ समय बीत गया। अब एक वृक्ष स्वयं जल कर भस्म हो जाता था परन्तु दूसरे वृक्ष को आग न लगाता था। आग के अग्र भाग में अब दरारें उत्पन्न हो गई थीं और ताज़ा हवा बाहर की ओर दोनों दिशाओं में भुजाओं के समान निकल रही थी। यह दरार और भी विस्तृत होती गई। चीड़ के जिन

वृक्षों पर पत्ते कम थे उन में से उत्ताप के स्तम्भ और शोले भी ऊपर हवा में जा रहे थे। उनकी पतली-पतली पत्तियों में गूंद न थी और वे यदि जलते भी थे तो तालीश के पत्तों के समान गर्जन के साथ न जलते थे और उनकी ज्वाला आकाश की ओर एक बुर्ज के समान न उठती थी।

जंगल में अधिकतर चीड़ के वृक्ष थे इसलिये अब आग का रूप शिखर अग्नि का रूप न रहा था। परन्तु घास फूस और झाड़ियों में वह अब भी बढ़ी जा रही थी। जहां कहीं छोटे-छोटे वृक्षों का झुंड आ जाता ज्वाला तेजी से ऊपर को उठने लगती। कहीं कोई तालीश का पेड़ आजाता तो वह गरजती हुई उसकी चोटी पर पहुँच जाती। इसका अग्र भाग एक मील चौड़ा था। वह दो वर्ग मील के क्षेत्र में जल रही थी। ठूंठों तथा लट्ठों के जलने से इतनी गर्मी उत्पन्न हो रही थी मानो हजारों भट्टियां जल रही हों।

आगे बढ़ती हुई आग के उत्ताप से हवा की आक्सीजन तथा पत्तियों और लकड़ी की कार्बन बड़े वेग से उठती और मिलकर इतनी आग और इतनी गर्मी उत्पन्न करतीं कि आग आगे ही आगे बढ़ती जाती। साथ ही जैसे गरम हवा आकाश की ओर जाती वैसे ठंडी हवा आग के निचले भाग की ओर चूसी जाती। ताजा हवा की रौ अपने साथ नई आक्सीजन ले आती। किसी विशालकाय पशु के समान आग अपनी ही शक्ति से सांस लेती प्रतीत होती थी। वह अपने आप को जीवित रखने के लिये जंगल को हड़प कर रही थी।

आधी रात के पश्चात् आग का दक्षिणी कोण रिवर्स मैडो के सिरे के पास पहुँच गया। सूखी घास जलने लगी। आग का अग्र भाग तुरन्त उसे पार कर गया और आग शादूल के दूसरी ओर के जंगल में जा पहुँची।

बार्ट, निरीक्षक और प्रादेशिक कार्यालय से आया हुआ 'निवारक' वाल्ट बार्न तीनों आधी रात के पश्चात् मुख्य कार्यालय में एकत्रित हुये। वे नक्शों को और उन चित्रों को देख रहे थे जो हवाई जहाज द्वारा लिए

गये थे। निरीक्षकों ने रेडियो द्वारा जो सूचनायें भेजी थीं उनका भी वे ध्यान पूर्वक अध्ययन कर रहे थे।

वास्तव में समस्या बहुत सरल थी। तीसरे भाग के कारुकों का यह काम था कि वे डेढ़ मील की दरार को पूरा करें और आग की रेखा तक पहुँचने से पहले प्रत्याग्नि जला दें। यहां तक तो ठीक था परन्तु इससे आगे समस्या जटिल ही जटिल होती जाती थी। इसमें समय का, हवा का, मानव की भूल का प्रश्न था। ये ऐसे अवयव थे जिनके विषय में कुछ नहीं कहा जा सकता था।

बार्ट ने कहा, 'हम बैन को रेडियो द्वारा कहेंगे कि वह यहां रेखा बनाये'। रिवर्स मैडो के दक्षिण-पश्चिमी भाग में स्थित एक बिन्दु से आग के अग्र भाग से होती हुई उसने एक उत्तरपश्चिमी लकीर खींची। चौथाई मील का हवा के रुख का टुकड़ा उसने छोड़ दिया।

वाल्ट बर्नाबी ने पूछा, इस रेखा का कितना भाग वृक्षों में से होकर जाता है और कितना भाग झाड़ियों में से ?'

उस प्रदेश के विषय में अपनी स्मरण शक्ति का आश्रय लेते हुये बार्ट ने कहा, 'आधा आधा।'

निरीक्षक हवाई जहाज़ द्वारा लिये गये चित्रों का अध्ययन कर रहा था। उसने अन्त में कहा, 'आधे से अधिक भाग में मैजेनिटा की घनी झाड़ियां हैं।

बार्ट ने हाथ मार कर कहा, 'आधे से ज्यादा नहीं।' परन्तु तुरन्त ही उसका ध्यान निरीक्षक की ओर गया जो कागज़ के एक टुकड़े पर गुणा का एक सवाल हल कर रहा था। यह देख कर वह कुछ चिढ़ गया।

निरीक्षक एक सवाल हल कर रहा था जैसे वह स्कूल में होते हुये हल किया करता था। वह गणित का सवाल प्रतीत होता था। 'यदि अ एक घंटे में १० फीट लम्बा जंगला तैयार करता है तो कितने समय में····'

परन्तु आठवीं कक्षा के सवाल से यह समस्या कहीं अधिक जटिल

थी। नक्शे पर डेढ़ मील लम्बी लकीर लीजिये। भूमि पर वह पौने दो मील हो जाती है। इसका कारण यह है कि भूमि पर कोई रेखा सीधी नहीं चलती। बीच में कई बाधायें आती हैं। इसके अतिरिक्त एक आदमी जितना काम पहले घण्टे में कर सकता है उतना दूसरे घण्टे में नहीं कर सकता। थकान के कारण उसके काम की गति घण्टा प्रति घण्टा कम होती जाती है। रात की ठण्ड में अधिक काम की संभावना है परन्तु अन्धेरे के कारण दिखाई कम देता है इसलिये उतना काम नहीं हो पाता। मैंजेनिटा में से रेखा तैयार करने में बहुत समय लगता है। यह रेखा चौड़ी भी अपेक्षाकृत अधिक होती है। दो ट्रैक्टर मैंजेनिटा के बीच से बहुत आसानी से रेखा बना सकते हैं परन्तु जो काम ट्रैक्टर जंगल में कर सकते हैं वह रेखा बनाने में नहीं कर सकते। इसके साथ यह भी प्रश्न था कि आग कितने वेग से आगे बढ़ती है।

निरीक्षक मेज़ पर झुका हुआ था। उसने अपने प्रांशु शरीर को सीधा कर लिया और उत्तर दिया, यह कहना कठिन था कि इस उत्तर में हिसाब का कितना हाथ था और अटकल का कितना। बार्ट तो सब कुछ अटकल ही बोल रहा था।

वाल्ट बर्नाबी ने पूछा, 'अच्छा, यह बताओ कि उच्च गणित इस विषय में क्या निर्णय देता है?'

निरीक्षक ने कहा, 'गणित के अनुसार हमारा अनुमान ठीक है, परन्तु मैं क्षेम के अन्य साधन भी जुटाना चाहता हूँ।' वह थोड़ी देर चुप रहा फिर बोला, 'बार्ट, जंगल का कुछ अधिक भाग जल जाने दो। यदि जलेगा भी तो ब्रशकी झाड़ियों वाल भाग ही जलेगा जो किसी काम का नहीं।'

बार्ट के चेहरे पर उद्दंडता के चिन्ह थे।

'निरीक्षक, आप जानते हैं कि ब्रश की ये झाड़ियाँ बहुत पुरानी हैं। उन में तालीक्ष के वृक्ष उगने लगे हैं। दस-बीस साल में ये झाड़ियां समाप्त हो जायेंगी। उन्हें जलाने से वे मैंजेनिटा के रूप में प्रकट हो जायेंगी। हमें कोई न कोई निश्चय करना पड़ेगा।'

कुछ क्षण के लिये निरीक्षक विचार मग्न रहा। वह सोच रहा था कि क्या क्या दुर्घटना हो सकती है। हो सकता है ट्रैक्टर में से तेल की धार टपकने लगे। किसी शकल का अधिपुरुष कोई भूल कर बैठे। वार्ट ने ट्रांस्मीटर उठाया और वह किसी शब्द या संकेत की प्रतीक्षा करने लगा। निरीक्षक को किसी जनरल की कहानी याद आगई जिसने चुप्पी साध ली थी और आरोप का न तो समर्थन किया था और न उसका खंडन। बार्ट ने बोलना शुरू किया।

निरीक्षक सोच रहा था। आखिर वही बात हुई और वे निश्चय पर पहुँच गये।

बार्ने जूलिक ने अपना ट्रैक्टर ट्रक पर से उतारा और एक क्षण के लिए इंजन जोर-जोर से चलाया। जंगल का ट्रैक्टर चालक उसके पास आकर बात करने लगा। इंजन का शोर बहुत था। फिर भी वह बहुत सी बातें कहता गया। बार्ने को ये बातें तो सुनाई न दी परन्तु वह उसका आशय समझ गया। वह कह रहा था; 'काफी आसान है...पांच मील अथवा...खुला...अधिकतर चीड़ के वृक्ष...पांच सौ फीट ऊपर तक... दूसरे पर उदग्र ढलवान।' बार्ने ने सब बातें सुनने की आवश्यकता अनुभव न की थी। जो उसने सुना था वह भी उसे याद न रहा। उसका काम यही था कि वह अपने ट्रैक्टर को दूसरे ट्रैक्टर के पीछे लगा दे। बार्ने इस बात की गारंटी देने को तैयार था कि वह अपने अगुआ के पीछे पीछे जहां तक वह ज.ता वहां तक बल्कि उस से भी आगे तक जाने को तत्पर था।

प्रेषक ने सोने का प्रयास भी न किया। संसजन जारी था। उसके ध्यान देने योग्य सैकड़ों बातें थीं।

वह अभी भी घबराया हुआ था और उस पर आतति छाई हुई थी। वह जानता था कि कुछ सीमा तक इस का कारण हवा है। परन्तु इसका एक कारण यह भी था कि वह बहुत दूर बैठा था। यदि विस्फोट न हो तो अग्नि रेखा पर काम करने वाला व्यक्ति अधिक चिन्ता नहीं करता।

सफ्फोक के स्थान पर बैठे हुए प्रेषक की कल्पना शक्ति तेज थी। वह चिन्ता में मग्न रहता था। जन और सामान जो वहां से होकर जा रहे थे समुद्र में एक बूंद के समान थे। अग्नि-शिविर में जिस प्रकार इन आदमियों को और इस सामान को काम में लाया जाता था वह भी यहां बैठे दिखाई न देता था।

उसे विचार आया कि कहीं हवा का रुख न बदल जाये और आग किसी नई दिशा में न बढ़ने लगे। उसे यह भी विचार आया कि आदमी कहीं ऐसी घाटियों में जो झाड़ियों से पटी पड़ी थीं आग की लपेट में न आ जायें। उसके मन को उन शिखर अग्नियों ने भी चिन्तित किया जो संभव था उद्दंडता से जंगल भर में गरजती फिरें।

वह अपने दफ़्तर के बाहर प्रकोष्ठ में बैठा रहा। वह अब भी कार्यालय के इतने निकट था कि टेलीफोन और रेडियो की आवाज उसे सुनाई दे सकती थी।

एक पुरानी बस उधर से गुजरी। वह गैसोलीन के पम्प के पास आकर ठहर गई। उसमें बैठे हुये व्यक्ति बाहर निकल आये। वे उबासियां और अंगड़ाइयां ले रहे थे। बिना मतलब ही वे गालियां दिये और सिगरेट पर सिगरेट सुलगाये जा रहे थे। प्रेषक देख रहा था कि वे औसत दर्जे के हीन लोग हैं। कोई उनमें से दुर्बल है, कोई दीवाना है, कोई शराबी है तो किसी का मन विकृत है। उसे यह देख कर बहुत दुःख हुआ कि इसी मौलिक सामग्री से उन्हें आग बुझाने वालों की सेना तैयार करनी पड़ेगी।

वह ईमानदार आदमी था, इसलिए उसने उनके गुणों का भी विचार किया। वे गर्मी और सर्दी सहन कर सकते थे, धूल और धुयें में रह सकते थे। झाड़ियों में सो सकते थे और जो भी उन्हें मिल जाता उसी पर निर्वाह कर सकते थे। वे किसी चीज की मांग न करते थे।

बस के ड्राईवर ने चिल्लाकर कहा, 'अच्छी बात, अब अन्दर चलो।'

उनमें से पहला व्यक्ति अन्दर गया। उसने अन्दर जाते ही खिड़की

खोल दी और वह उसमें से बाहर झांकने लगा। एक क्षण के लिये प्रेषक को विचार आया कि शायद वह खिड़की में से बाहर निकलना चाहता है। वह दुबला पतला था इसलिए यदि वह चाहता तो ऐसा कर सकता था। यह एक अजीब सी बात थी कि एक 'पोगी' को भी खिड़की खोलने की आवश्यकता महसूस हो। जिस बस में ये लोग बैठते हैं वह अन्दर से प्रायः गरम होती है और बन्द-बन्द सी महसूस होती है। उससे तम्बाकू, ताड़ी और पसीने की बू आया करती है।

अनियन फलैट पर जो शिविर बना था वहां ट्रक और बसें चली आ-रही थीं।

निनानवे (९९) सैनिक (१) लैफटेनैंट की अध्यक्षता में।

सौ (१००) नाविक (२) वारेंट अफसरों सहित।

दो (२) स्वयंसेवक जो प्याएज़न स्प्रिंग पर मछली पकड़ रहे थे।

पांच (५) सान बर्नार्डो से आये हुये फालतू लोग--जो ऊँचे-ऊँचे वृक्षों और उत्तर के घने जंगलों में रहने के अभ्यस्त न थे।......

साठ (६०) सैक्रेमैंटो से उठाये हुये लोग जो दो बसों में आये।

अठावन (५८) मैक्सीको निवासी जिन्हें सान जोवियन के खेतों से उठाया गया।

बत्तीस (३२) राज्य वन खंड से आये हुये पेशावर जो इसलिये भेजे थे कि आवश्यकता पड़ने पर काम दें।

उस रात आग का उत्ताप ब्रश की उन झाड़ियों के उस मैदान में था जिन्होंने रिवर्स फलैट के बहुत से भाग को ढांप रखा था। यहां तीसरा खंड आग को रोकने के लिये रेखा तैयार कर रहा था। बैन रोच के पास यहां बहुत ही अच्छे कारुक थे। इनमें 'हाट-शाट' के सूरमा, 'बिलस्टर रस्ट के लड़के, मिल में काम करने वाले और लट्ठहार तथा सफ्फोक के स्थानीय लोग थे।

आग धीरे-धीरे आगे बढ़ी जा रही थी। जिधर से वह गुज़रती सब

साफ़ करती जाती थी। कई बार यह एक झाड़ी से लपक कर दूसरी झाड़ी पर पहुँच जाती। जैसे यह भी शिखर अग्नि हो।

बहुधा ऐसा होता था कि आग एक झाड़ी से सीधी दूसरी झाड़ी को न लगती थी। एक झाड़ी जल कर समाप्त हो जाती तो शोले उठने बन्द हो जाते। नीचे बिछे घास-फूस में आग जलती रहती और वह आगे बढ़ती रहती। इस घास फूस के जलने से जो गर्मी उत्पन्न होती उससे झाड़ी में से शोले निकलने लगते।

यहां काम करना कठिन और खतरनाक था। मैंज़ेनिटा जंगल के समान घना था। परन्तु उसमें जंगल की मृदुल हरियाली न थी। उसकी टहनियां कड़ी थीं और उसमें से गुज़रते समय वे पीछे को झुक जाती थीं। यदि वे टूट जातीं तो उनके सिरे इतने तीक्ष्ण होते जैसे कटार की नोक होती है।

आगे-आगे कुल्हाड़ा चलाने वाले चले। एक घनी झाड़ी पर वे कुल्हाड़े को चपटा चलाते और टहनियां कटकर नीचे गिर पड़तीं। फिर जब बड़ी टहनियों तक पहुँचते तो धार की ओर से कुल्हाड़ा मारते। इस में बहुत देर लग रही थी। चन्द्रमा का प्रकाश इतना कम था कि उसका कोई लाभ न था। कुल्हाड़ा चलाते समय सिर पर लगी रोशनी से भी काम न चलता था।

कुछ देर काम करने के पश्चात् कुल्हाड़ा चलाने वाले पीछे हट गये। अन्य व्यक्ति आगे बढ़े और उन्होंने टहनियों को उठाकर आग के दूसरी ओर झाड़ियों पर फेंक दिया। उसके पश्चात कुल्हाड़ा चलाने वाले फिर आगे बढ़े। उनके पीछे-पीछे कुछ लोग जिन्होंने बेलचे और गैंतियां संभाली हुई थीं चलने । वे छोटी-छोटी टहनियों, शाखाओं और सूखे हुये पत्तों को साफ करते जाते थे और खुरचते जाते थे जिससे नीचे से लाल मिट्टी निकल आती थी। वे आठ फीट चौड़ी रेखा बनाते जाते थे क्योंकि मैंज़ेनिटा में तग रेखा काम नहीं देती।

आग के मुख्य पक्ष से एक सींग सा आगे निकला हुआ था जो इतना निकट पहुँच रहा था कि उससे खतरा पैदा होने का डर था। बैन ने सफ्फोक के स्थानीय लोगों को उसकी रोक थाम के लिये आगे भेजा। वे आग के इस नोकदार भाग के सिर के इर्द-गिर्द रेखा बनाने लगे। वे उस सेना के समान प्रतीत होते थे जो शत्रु के प्रवाह की गति कम करने के लिये नियुक्त की जाती है।

जहां मेढ़ की नाक नीचे को झुकने लगी थी वहां पहुँच कर ट्रैक्टर चलाने वालों को आग पहली बार दिखाई दी। वन-सेवा का ट्रैक्टर-चालक कहने लगा कि अग्नि रेखा से वे दो मील के अन्तर पर हैं और वे वहां सवेरा होने तक पहुँच जायेंगे।

बार्न ने कहा—'भगवान के लिये मुझे आगे चलने दो। मैं तुम्हें इससे भी पहले पहुँचा दूँगा।

दूसरे ट्रैक्टर चालक को उसके कहने का ढंग अच्छा नहीं लगा परन्तु अब बार्न की बारी थी।

'यदि तुम चाहते हो तो लो आगे चलो। आगे-आगे चलना मेरे लिये कोई आनन्ददायक थोड़ा ही है। यह तो मुसीबत है।'

बार्न ने इंजन चलाया, उद्याम घुमाये और अपने ट्रैक्टर को चक्कर देकर झाड़ियों में से होता हुआ वह उसे दूसरे ट्रैक्टर के सामने ले आया। फिर मेढ़ की उदग्र नाक से नीचे की ओर चल पड़ा। यह चार सौ फीट की ढलवी रिवर्स फलैट की एक भुजा पर जो लग-भग सपाट थी आकर खतम होती थी।

थोड़ी देर में ही बार्न ने अनुभव किया कि वह भी दूसरे व्यक्ति की अपेक्षा कोई अधिक वेग से न बढ़ रहा था। इसका कारण यह था कि वन सेवा का कर्मचारी जो हाथ में मशाल लिये आगे-आगे मार्ग दर्शाता जा रहा था बहुत धीरे-धीरे चल रहा था।

उसने अपने साथी से कहा—'तुम बाहर निकल कर मुझे मार्ग दिखा दो और हम मशालची की परवाह न करेंगे।'

उसके पश्चात् वे अधिक वेग से आगे बढ़ने लगे। दो निरीक्षक मार्ग खोजते हुये इधर-उधर मुड़ने लगे। वे बार्ने को संकेत देना चाहते थे परन्तु बार्ने के ट्रैक्टर की रोशनी उनके बहुत निकट आ गई और उसकी मशीन गरजती हुई नीचे की ओर बढ़ी।

सामने उदग्र खुली जगह थी। बार्ने ने ट्रैक्टर की रोशनी में देखा कि लगभग सौ फीट तक झाड़ियां फैली हुई हैं। उनका तल सपाट प्रतीत होता या उसके अतिरिक्त उसे और कुछ भी दिखाई नहीं दिया। बार्ने ने ज़ोर से इंजन चलाया, ट्रैक्टर का फन ऊपर उठ गया और ट्रैक्टर बड़े वेग से आगे बढ़ा। दोनों निर्देशक मार्ग से हट गये। ट्रैक्टर ढलान से लुढ़कने लगा। उसकी श्रृंखलायें झाड़ियों के ऊपर घूमने लगीं फिर ट्रैक्टर झाड़ियों को कुचलने लगा। बार्ने कूद कर बाहर निकल आया। ट्रैक्टर का फन नीचे हो गया और वह लुढ़कता हुआ नीचे की ओर चल पड़ा। वह अपने भार से ही लुढ़कता जाता था और एक हाथी के समान प्रतीत होता था। वह लुढ़कता-लुढ़कता रुक गया और सीधा खड़ा हो गया।

ट्रैक्टर बार्ने के ऊपर से होकर गुज़र गया था। निर्देशक उसे उठाने के लिये लपके। परन्तु पहले ही वह झाड़ियों के नीचे से निकल आया था और गालियां दे रहा था। उसका शरीर गठा हुआ था। उसकी गरदन छोटी थी। वह मुड़-तुड़ कर रबर की गेंद के समान बन गया था और मैंज़ेनिटा के कुंड में जा घुसा था। उसे ज़रा भी चोट न आई थी।

ट्रैक्टर भी बार्ने के समान बहुत मज़बूत था और उसे भी कोई हानि न पहुँची थी। वे भागते हुये उसे देखने गये। बार्ने ने इंजन चलाया। परन्तु उधाम पर ट्रैक्टर का समस्त भार आ पड़ा था जिसके कारण वह अब बिल्कुल काम न देता था।

जहां से ट्रैक्टर गिरा था उन्होंने उस स्थान का निरीक्षण किया। स्थान छः फीट ऊँची दीवार के समान था। इस चट्टान से नीचे झाड़ियां

बहुत ऊँची-ऊँची थीं जिनके कारण यह स्थान हमवार प्रतीत होता था, मानो प्रकृति ने यह स्थान ट्रैक्टर को फांसने के लिये ही बनाया था।

ट्रैक्टर लगभग सारा ही झाड़ियों में छिप गया था। उसने ढलान के साथ एक अजीब सा कोण बनाया हुआ था और वह अपने चौड़े पक्ष के सहारे खड़ा था। वार्ने वशियन्त्र पर पूरा ज़ोर लगा रहा था परन्तु वह टस से मस न होता था।

चढ़ता हुआ चन्द्रमा काफ़ी ऊँचे आ चुका था। बैन रोच ने पहली आध मील लम्बी रेखा का जल्दी से निरीक्षण किया। उसने शकल अधि-पुरुष से कहा कि वहां प्रत्याग्नि जला दे। आग का यह ऐसा भाग था जिसे काबू में करना बहुत ही सुगम था। झाड़ीदार मैदान की अपेक्षा यह काफ़ी खुला था और यहां अठारह इंच चौड़ी रेखा काफी थी। उनके पीछे जो जंगल था वह भी काफ़ी खुला था इसलिये आवश्यकता पड़ने पर आसानी से पीछे हटा जा सकता था। शकल अधिपुरुष ने निश्चिन्त होकर प्रत्याग्नि जला दी। परन्तु झाड़ीदार मैदान की बात दूसरी थी। कई स्थान ऐसे थे जहां किसी आदमी का गुज़र ही न हो सकता था। अधिपुरुषों को सबसे पहले अपने आदमियों के क्षेम का ध्यान रहता है इसलिये यहां प्रत्याग्नि जलाना सुगम न था।

सफ्फोक के स्थानीय लोगों ने आग के सींग की नोक को आगे बढ़ने से रोक दिया था परन्तु आग इतने निकट आ गई थी कि वह बेचैन किये देती थी। मैंजेनिटा की जलती हुई पत्तियों के दहकते हुये टुकड़े उनके हाथों पर या गरदन पर आ पड़ते और वे तड़प जाते। अब उन्हें केवल २०० गज़ लम्बी रेखा और तैयार करनी थी। चन्द्रमा का प्रकाश पीला पड़ने लगा था। दूसरे कारुक की बत्तियों की रोशनी उन्हें दिखाई देती थी। यहां तक कि वे अब उन्हें टहनियां फेंकते हुये भी दिखाई देते थे। परन्तु एक पक्ष में आग इतनी दूरी पर न थी जितनी दूरी पर यह कारुक था।

उत्तर की ओर से एक इंजन के गरजने की आवाज़ सुनाई दी। एक आदमी ने चिल्लाकर कहा, 'वह देखो ?'

उन्होंने मिलकर हर्ष का नाद लगाया। 'लो आगया। ठीक समय पर आगया। निश्चय ही वह ट्रैक्टर है।'

'सौभाग्य की बात है कि ट्रैक्टर आगया। हमारे लिये इस रेखा को पूरा करना कठिन था।'

इंजन का शोर तेज़ होता गया। जब ट्रैक्टर चालक साफ की हुई रेखा के पास पहुँचा तो उसकी गति और भी बढ़ गई। फन उठे-उठे ही ट्रैक्टर आगे बढ़ता चला जा रहा था।

'वह देखो। वह आ ही गया है।'

सब आदमी इधर-उधर झाड़ियों में फैल गये।

मशीन ने काम करना आरम्भ किया। इंजन का बहुत शोर था परन्तु फिर भी जैसे उसका फन मैंजेनिटा को काटता जाता था 'कट-कट' की आवाज़ भी साफ़ सुनाई देती थी। ट्रैक्टर उसी गति से चल रहा था जिस गति से एक साधारण व्यक्ति चलता है।

मशीन के पीछे-पीछे लोग टूटी हुई टहनियां उठाते जाते थे और उन्हें एक ओर फेंकते जाते थे। वे बेलचे और गेंतियां चला रहे थे। परन्तु मशीन की अपेक्षा उनकी गति बहुत मन्द थी। यदि एक ट्रैक्टर और होता और वह पहले ट्रैक्टर के पीछे-पीछे कटी हुई टहनियों को हटाता और भूमि को खुरचता चलता तो काम अधिक वेग से हो सकता था।

अब दिन निकल आया था। ट्रैक्टर ने रेखा खोदने का काम पूरा कर दिया और वह वहां पहुँच गया जहां दूसरा कारुक काम करता था। वह झाड़ियों में जा घुसा, मुड़ा और फिर रेखा तैयार करने लगा। दो बार गुज़र जाने से ट्रैक्टर ने इतनी चौड़ी रेखा तैयार कर दी थी कि उस पर एक मोटरकार आसानी से चल सकती थी। यह रेखा बिल्कुल साफ और हमवार थी। सहायक उसके किनारे पर झुका हुआ था और कुर्सी के पीछे छिपा बैठा था। ट्रैक्टर चालक ने भुजा से अपना चेहरा छिपाया हुआ था।

यह बहुत नाज़ुक घड़ी थी। बैन रोच ट्रैक्टर के पीछे-पीछे फलीता जलाये चला आरहा था। सौभाग्य से प्रत्याग्नि शीघ्र ही प्रज्वलित हो उठी और गरजती हुई आग की उस नोक की ओर बढ़ी जो फैलती हुई आरही थी। पहल ी प्रत्याग्नि बुझ गई। रेखा पर से चिंगारियां तो उड़ कर न गई थीं परन्तु रेखा साफ़ न थी और आग की नोक एक स्थान पर उसे पार कर गई थी। गर्मी अब भी ऐसी थी जैसे कोई भट्टी तप रही हो। उत्ताप से युद्ध करने वाले दो व्यक्ति कूद पड़े। उन्होंने इस नोक को जा दबोचा और उसे रेखा की दूसरी ओर कर दिया।

वे दौड़ते हुये आग से बाहर आये। उनके कुर्ते सुंधक रहे थे। बैन रोच ने दूसरी प्रत्याग्नि सुलगाई। दूसरी ओर शकल अधिपुरुष ने भी ऐसा ही किया। दोनों प्रत्याग्नियों के बीच बहुत खतरा था और वहां किसी व्यक्ति को भी छोड़ा न जा सकता था। रेखा के इस भाग को निश्चिन्तता से छोड़ा जा सकता था।

बैन रोच ने कई बार आग का मुकाबला किया था। वह जानता था कि इस स्थान पर आग पर काबू पाना कठिन है। उसके हाथ में जलते हुये फलीते थे। उन्हें लिये-लिये वह एक-एक कदम पीछे की ओर हटता जाता था। हो सकता था कि रेखा काम दे जाये। परन्तु ट्रैक्टर वहां देर से पहुँचा था और वह था भी एक ही। सूर्य काफ़ी ऊपर आ चुका था जिसका अभिप्राय यह था कि अब हवा का वेग बढ़ जायेगा। इसलिये बैनरोच के मन का भय दूर न हुआ था। पीछे हटते हुये उसे इस बात का पूरा-पूरा ध्यान था कि कोई व्यक्ति आग की लपेट में न आ जाये। पीछे हट कर सूखे पत्तों और सूखी टहनियों को फलीता दिखाया। तब सहसा पीछे की ओर से उन्हें आग ने आ घेरा।

वह पीछे मुड़ा, और चिल्लाकर बोला, 'इसे बुझाओ लड़को।' यह कहते कहते उसने फलीता झाड़ी में फेंक दिया और भाग उठा।

बैन कोई युवक न था। उसका शरीर भी भारी था। वह जितनी

तेजी से किसी जमाने में भाग सकता था उतनी तेजी से अब न भाग सकता था। भागते-भागते उसे पीछे मुड़-मुड़ कर यह भी देखना पड़ता था कि कोई आदमी पीछे न रह जाये। परन्तु उसे केवल दो ही व्यक्ति दिखाई दिये जो उससे आगे-आगे जा रहे थे। वे नवयुवक थे। बैन हांप रहा था। गर्मी और धुँए की बहुतायत थी। उसके सम्मुख धुआं था। आग रेखा को पार कर आई थी।

बैन ठहर गया। वह जोर-जोर से सांस ले रहा था परन्तु स्थिति इतनी बुरी न थी। उसने नाक और मुंह को रुमाल से बांध दिया, अपनी टोपी को खींच कर नीचे कर लिया और एक लम्बी सांस लेकर आगे छलांग लगाई।

दस बारह कदम तक उसका बुरा हाल रहा। शोले साफ की हुई लीक को पार कर रहे थे। वह हैरान था कि क्या करे। परन्तु तुरंत ही वह एक खुले स्थान पर पहुँच गया। वह भूमि पर गिर पड़ा। उसने अपने सुंधकते हुये वस्त्रों को मिट्टी में मसला। फिर उठकर भाग खड़ा हुआ। उसे अपने सम्मुख खतरा दिखाई देता था।

स्थिति उतनी बुरी सिद्ध न हुई। एक दो क्षणों में ही वह उस स्थान पर पहुँच गया जहां दूसरा शकल अधिपुरुष अपने कारुक के साथ काम में लगा था। शकल अधिपुरुष ने केवल इतना कहा, 'बैन, अच्छा हुआ तुम बच निकले।' उसने कहा, 'मैं तो बच निकला परन्तु बाकी लोगों का क्या बना ?'

'मेरा अनुमान है कि सभी बच निकले हैं। मुझे दुःख है कि तुम्हें अधिक समय न दे सका। आग अकस्मात बड़ी तेजी से बढ़ आई -'

'उत्तरी कोण का क्या हाल है ?'

'चिल्लाने की आवाज तो सुनाई नहीं दी। यदि तुम कान लगाकर सुनोगे तो तुम्हें ट्रैक्टर की आवाज सुनाई देगी। परन्तु इसका अभिप्राय यह भी हो सकता है कि वे ट्रैक्टर को पीछे हटा रहे हैं।

अब इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता। रेखा तहस-नहस हो गई है। रेडियो द्वारा उन्हें आदेश दे दो कि वे बच कर निकल जायें। ऐसा न हो कि वे भी आग की झपट में आजायें। मैं अपने रेडियो द्वारा वार्ड को इस की सूचना दिये देता हूँ, अपने कारुक अधिपुरुषों के साथ मिलान करके देख लो कि सब लोग बच निकले हैं।

'यह काम बहुत कठिन है। यदि दोनों ट्रैक्टर आ जाते तो हम अवश्य आग पर काबू पा लेते। क्यों ठीक है न?' फिर उसने हाथ से चुप रहने का संकेत करते हुये कहा, 'जरा सुनो। उन्होंने ट्रैक्टर का इंजन काट दिया है। लो अब वे चिल्लाने लगे हैं।'

एक व्यक्ति की क्षति को छोड़कर बाकी जो कुछ दक्षिणी कोण पर हुआ बिलकुल वैसा ही उत्तरी कोण पर भी हुआ। उस शकल में काम करने वाले वन-सेवा के आदमी अधिकतर इनयो के रहने वाले थे। यह जंगल पूर्वी दिशा में है। वहां वर्षा बहुत कम होती है। खुश्क पहाड़ों पर चीड़ के ऊंचे-ऊंचे वृक्ष बिखरे हुये खड़े हैं। झाड़ियां भी कहीं-कहीं ही दिखाई देती हैं। इनयो के इन आदमियों में एक नवयुवक था जिसने कभी भयानक आग न देखी थी। झाड़ियों में एक स्थान पर आग लगी थी। वह उसे बुझाने के लिये रेखा के अन्दर दो चार गज आगे बढ़ गया। वहां पहुँचा ही था कि उसे आवाज़ सुनाई दी कि रेखा को छोड़ कर भाग चलो। उसने सोचा कि यदि वह वापिस जाता है और रेखा के साथ-साथ दौड़ता है तो आग की झपट में आने का भय है। उसने दूसरी ओर दृष्टि डाली। कुछ ही दूर पर झाड़ियों से बहुत ऊपर तालीश के वृक्ष थे। उसका विचार था कि पूर्व की ओर वृक्षों के बीच में झाड़ियां घनी नहीं होतीं। उसने यह निश्चय अपने अनुभव के आधार पर किया था। आग से मुख मोड़ वह झाड़ियों में से होता हुआ तालीश के वृक्षों की ओर बढ़ा।

वह सौ फीट भी आगे न बढ़ा था कि थकावट से उसका दिल धड़कने लगा। उसे दम लेने के लिये ठहरना पड़ा। दायीं ओर आग रेखा

को पार कर आई थी। आग की एक नोक उसके साथ-साथ ही आगे बढ़ आई थी।

उसने विचार किया—'मुझे उत्तेजित नहीं होना चाहिये।' सामने तालीश के वृक्ष अधिक दूर न थे। उसे विश्वास था कि इससे आगे झाड़ियां घनीं नहीं हैं।

वह पुनः आगे बढ़ा, परन्तु उसकी गति बहुत मन्द थी। धुआं गहरा होकर नीचे की ओर आता जाता था। इससे विदित होता था कि उसके पीछे भी आग रेखा को पार कर आई है। धुँए के कारण उसे अपने आप को संभालने में बहुत कठिनाई का अनुभव हुआ। परन्तु वह संभल कर झाड़ों में घुस गया। उत्ताप ने उसे व्याकुल कर दिया था। उसे विचार आया कि आग उसके बहुत निकट है। उसने बड़ी उत्तेजना से अपने-आपको झाड़ियों के ऊपर ऐसे फेंक दिया जैसे तैराक पानी पर लेट जाता है। उसके भार से टहनियां टूटने लगीं। उनके सिरे उसके कपड़ों में फंस गये और वह आगे न बढ़ सका। ये नोकदार सिरे उसे चुभने लगे और उसकी खाल उधेड़ने लगे। वह खड़ा हो गया और झाड़ियों के ऊपर-ऊपर चलने का प्रयास करने लगा। उसके पांव झाड़ियों में धंस जाते और नीचे की सख्त टहनियों पर जा अटकते। इससे कुछ काम तो चला परन्तु उसकी चाल बहुत धीमी हो गई।

उसकी शक्ति उसे जवाब दिये जा रही थी। वह क्षण भर दम लेने के लिये रुक गया। ताजा हवा प्राप्त करने के लिये उसे नीचे की ओर झुकना पड़ा। वह अपनी व्याकुलता को कम करने का प्रयास कर रहा था। उसने विचार किया—

'यह खेल सावधानी से खेलने वाला है।' वह इधर-उधर बड़े ध्यान से देखने लगा कि इन उलझी हुई टहनियों में से कोई सुगम मार्ग उसे दिखाई दे जाये। आखिर उसे एक ऐसा मार्ग दिखाई दे गया। वह बिना कठिनाई के उसमें से निकल गया। फिर उसे दूसरा मार्ग दिखाई दिया और वह आगे बढ़ गया। सामने बायीं ओर एक स्थानीय आग से

धुँआ उठ रहा था। उसे यह देखकर बहुत चैन आया कि तालीश का निकटतम पेड़ केवल सौ फीट की दूरी पर है। इस विचार से उसके तन में एक नई शक्ति का संचार हुआ। उसे विचार आया कि वह खतरे से बच जायेगा और उसे आराम मिलेगा। वह तेज़ी से आगे बढ़ा। उसी समय उसके पीछे कोई तीस फीट की दूरी पर एक झाड़ी से कागज़ के समान सफेद ज्वाला शां-शां करती हुई उठी। वह झाड़ियों में होकर भागा जा रहा था। कभी उनके ऊपर चढ़ता, कभी बीच में से निकल जाता और कभी उसे रेंगना पड़ता। जैसे कोई जानवर अपने आप को बचाने के लिये अंधा-धुंध भागता है वह भी ऐसे ही धुएँ के प्रवाह का विचार करते हुये भागा जा रहा था।

अकस्मात जैसे वह आगे बढ़ा जा रहा था उसका हाथ तालीश के वृक्ष की एक टहनी पर पड़ा।

उसे सहसा शान्ति का आभास हुआ और वह मन ही मन कृतज्ञता प्रकट करने लगा परन्तु ज्योंही उसकी दृष्टि ऊपर उठी उसका मन और भी बैठ गया। यह वृक्ष लगभग तीस फीट ऊँचा था। इसकी जड़ों में घनी झाड़ियां थीं। तालीश के वृक्ष की झुकी हुई निचली टहनियां मैजेन्टिा की ऊपरली टहनियों से जुड़ी हुई थीं। यहां क्षेम मिलने की कोई सम्भावना न थी। यहां से आसानी से आगे बढ़ने की आशा भी न थी।

एक हाथ से तालीश की टहनी थामे वह चुप-चाप लेटा था। वह बहुत थक गया था। आधा मिनट भी न गुज़रा था कि वह अपने आपको झंझोड़ कर उठ खड़ा हुआ। वह पूर्ण रूप से हताश न हुआ था, और अब भी बुद्धि से काम ले रहा था। जहां वृक्ष घने थे वहां झाड़ियां घनी नहीं हो सकतीं। उसकी यह धारणा थी कि झाड़ियां साये में नहीं पनपती इसलिये आगे बढ़ने में ही उसे कुशलता दिखाई दी। दायीं ओर आग की बढ़ती हुई नोक उससे आगे थी। बायीं ओर की स्थानीय आग भी बहुत फैल गई थी और आगे बढ़ आई थी।

वह तालीश के वृक्ष के गिर्द घूम कर जाना ही चाहता था कि धुएं के एक बादल ने उसे आ घेरा। हवा का एक झोंका बड़ी तेज़ी से आया था और उसके कारण आग बहुत वेग से बढने लगी थी। एक झाड़ी जो उससे केवल बीस फीट पीछे थी, आग का शिकार होगई।

उसका मन शान्त था। वह जानता था कि आग से बचकर जाना संभव नहीं। वह थककर चूर हो चुका था। धुएं ने उसे अधमुआ कर दिया था। परन्तु वह नव युवक था। वह अभी अपने आप को लड़का कह सकता था। वहां लेट कर आग में झुलस जाने को कैसे तैयार होता? अनन्तः हताश होकर उसने तालीश के वृक्ष पर चढ़ना आरम्भ किया। पेड़ की घनी और छाई हुई टहनियां एक छत का काम दे रही थीं जिनके ऊपर धुआं और गर्मी न पहुँच सकती थीं। उसे आशा थी कि आग नीचे-नीचे से निकल जायेगी। इस आशा में वह तारपीन के तेल की सुगंध से भी उदासीन रहा।

तालीश के वृक्ष के पास खड़ी एक झाड़ी को आग लग गई। तालीश की पत्तियों की गूंद जो गर्मी के कारण वाष्प बन गई थी, भड़क उठी और शां-शां की आवाज़ के साथ जलने लगी। आग वृक्ष के शिखर तक पहुँच गई। जब शोले शिखर से ऊपर उठने लगे तो उसकी टहनियों में से कोई चीज़ नीचे गिरी और बे-जान सी भूमि पर आ पड़ी।

रात को दो बजे बार्ट जूते उतारे बिना ही शयनार्थ एक थैले में घुस गया था। आतति के होते हुए भी थकावट के कारण उसे इतनी गहरी नींद आई कि साढ़े चार बजे जब सायरन बजने लगा तो उसे ज़बरदस्ती जगाया गया। वह थैले से बाहर निकला और गिरता-पड़ता मुख्य कार्यालय पहुँचा।

पहली बात तो उसे यह बताई गई कि एक ट्रैक्टर चालक ने एक चट्टान पर से अपने ट्रैक्टर को गिरा दिया है जो अब बिना मरम्मत के काम नहीं दे सकता। एक घण्टा पश्चात् उसे सूचना मिली कि ट्रैक्टर के न पहुँचने के कारण तथा अन्य कारणों से रिवर्सफ्लैट की समस्त

रेखा तहस-नहस हो गई है। आग उसे पार करके बशकी झाड़ियों के मैदान में पहुँच गई है। इसके अतिरिक्त एक आदमी गायब था। इतनी गर्मी थी कि कोई व्यक्ति उसकी खोज के लिए न जा सकता था।

बार्ट अपने आप भी निराशा की मूर्ति बना बैठा था। नींद के अभाव के कारण उसकी आंखों के नीचे थैलियां बन गई थीं।

रेखा के तहस-नहस होने के समाचार के पहुँचने से पूर्व ही दिन के कारुकों ने प्रातराश समाप्त कर उदग्र पगडण्डी पर चढ़ना आरम्भ कर दिया था। बार्ट ने एक घुड़सवार को उसके पीछे दौड़ाया कि वह कुछ व्यक्तियों को वापिस ले आये। रिवर्स फलैट के स्थान पर अब उनकी कोई आवश्यकता न थी।

यह एक आपत्ति का दिन था। इस दिन उन्हें पीछे हटना पड़ा था। परन्तु स्थिति उतनी बुरी न थी जितनी उससे पहले दिन थी। पहले दिन भगदड़ मच गई थी। आज वे शान्तिपूर्वक पीछे हटे थे।

तीनों ने मिलकर फिर युद्ध सम्मेलन किया।

बार्ट ने कहा—'मैंने रेखा बहुत निकट बनवाने की चेष्टा की थी।' उसे कुछ कहने की विवशता हो रही थी। उसे उस आदमी की मृत्यु से और वृक्षों के जलने से इतना दुःख हो रहा था कि उसे अपना विचार तक न आ रहा था।

वाल्ट बर्नाबी ने कहा—'यदि वह सनकी ट्रैक्टर चालक भूल न करता तो तुम्हारी योजना बिलकुल ठीक काम करती।

बार्ट ने कहा—'मैंने बचाव के लिये कोई स्थान न छोड़ा था।'

निरीक्षक ने कहा—'अब तो हमें मालूम है परन्तु पहले इसके विषय में कोई कुछ न कह सकता था।'

परन्तु बार्ट को निरीक्षक के शब्द याद थे। उसने कहा था कि आग को अधिक स्थान देना चाहिये और झाड़ियों का मैदान उसकी भेंट कर देना चाहिये। अब रेखा कहां बनानी चाहिये, इसके विषय में उन लोगों में कोई बहस नहीं हुई। वे सब एक मत थे कि रेखा रिवर्स रिज के ऊपर

बननी चाहिये । इसके विषय में युक्ति देने की आवश्यकता न थी । फिर भी बार्ट ने कहा—

'प्रतिरक्षा के लिए यह नैसर्गिक रेखा है । यह मेढ़ का शिखर है, पथरीला है, वृक्ष बिखरे हुये हैं । कई स्थानों पर चट्टाने बाहर को निकली हुई हैं । जहां पत्थर नहीं वहां भूमि हमवार है और उस पर ट्रैक्टर आसानी से चल सकता है । वह मेढ़ अपने आप ही आग को रोक सकती है । परन्तु इसका अभिप्राय यह नहीं कि इस आग को भी रोक सकती है ।'

पहले उन्होंने समस्त शक्ति को तीन खंडों में बांटा था । अब उन्होंने इसके दो मुख्य भाग किये और उन्हें पांच खंडों में विभक्त किया । पहला भाग समस्त उत्तरी पक्ष की देख भाल करेगा । ऐन्जलीस का आदमी इस भाग का अधिपुरुष होगा । वहां नया अग्नि शिविर स्थापित किया जायेगा । दक्षिणी पक्ष दूसरे भाग के सुपुर्द होगा । दूसरे भाग का प्रथम खंड उत्तर में उस स्थान के निकट आरम्भ होगा जहां आग पहले पहल लगी थी । यह अनियन क्रीक के साथ-साथ नीचे की ओर चलेगा । इसका बहुत सा हिस्सा जल कर शीतल हो चुका था इसलिये यहां अधिक आदमियों की आवश्यकता न थी । दूसरा खंड रिवर्स क्रीक से आरम्भ होगा और रिवर्स रिज के शिखर के साथ-साथ वौपौम्सी क्रीक तक जायेगा । यहां प्रचंड आग का सामना करना पड़ेगा । काम तो आसान होगा परन्तु काफ़ी आदमियों की आवश्यकता पड़ेगी । एक ट्रैक्टर भी चाहियेगा । दो होंगे तो और भी सुविधा रहेगी । तीसरा खंड रिवर्सरिज की मेढ़ के साथ-साथ चलेगा । यहां आग का सीधा मुकाबला करना पड़ेगा । इस खंड के अधिपुरुष को आदमियों के छांटने में पहल दी जायेगी और जितने ट्रैक्टरों का वह प्रयोग कर सकेगा उतने ही ट्रैक्टर उसे दिये जायेंगे । यदि ट्रैक्टरों से मार्ग साफ़ हो सकेगा तो वहां टैंक भी पहुँचाये जा सकते हैं जिनके द्वारा आग बुझाने का प्रयास किया जायेगा ।

दो खंड अन्य भाग में होंगे । इसकी लम्बाई लगभग पहले भाग की लम्बाई के बराबर होगी । यह भाग भी शीतल अथवा लगभग शीतल

था। यहां भी काम आसान था। चौथे खंड में दो या तीन ट्रैक्टरों की आवश्यकता होगी। पांचवें खंड में ट्रैक्टरों की आवश्यकता न पड़ेगी।

पहला भाग और विशेष रूप से तीसरा खंड उत्ताप का केन्द्र था। वहां अति उत्तम लोगों की जो क्षमता से काम कर सकें आवश्यकता थी। आग को रोक कर उसका मुंह बन्द करने के लिये बैनरोच से बेहतर कोई आदमी न था, इसलिये उसे तीसरे खंड का अधिपुरुष नियुक्त किया गया।

रिवर्स फलेट की रेखा तहस-नहस हो चुकी थी। इसलिये जिन आदमियों को वहां जाने से रोका गया था वे शिविर में आ गये थे। वे भांति-भांति के लोग थे परन्तु बार्ट के मन में उनके लिये स्नेह उत्पन्न हो गया था। यहां उनका मुकाबला एक सामन्य शत्रु से था। यह शत्रु आदमियों के रूप में न था। युद्ध में सैनिकों को बताना पड़ता है कि शत्रु क्यों निन्दनीय है। उन्हें कहना पड़ता है कि वे शत्रु सैनिकों को तम्बाकू और मिठाई आदि न दें। परन्तु शिखर-अग्नि को देखते ही सब समझ जाते हैं कि यह महान शत्रु है। उसके विषय में कुछ भी बताने की आवश्यकता नहीं।

कारुकों के झुंड-के-झुंड मैदान में से होकर गुज़र रहे थे। उनमें लट्ठेहार थे, मिलों में का करने वाले थे, बिजली की तार लगाने वाले थे, सैनिक और नावि थे, कोंची थे, दो सफ्फोक से आये हुये लिपिक थे, कोई घटिया दर्जे के मज़दूर थे। एक युवक मैन्डोसीनों परासक था जो ऐम० ए० पास था और मृत्यु से पूर्व जिसकी उच्च कर्मचारी बनने की संभावना थी। टा कीपर के साथ जो लड़कियां काम करती थीं वे बार्कले में पढ़ती थीं। ब्रउलहर्स्ट की एक सुन्दर स्त्री जो रसोई घर में काम करती थी, विवाह से पहले सानफ्रांसिसको में व्यवसायिक जीवन व्यतीत कर चुकी थी।

'पोगियो' में बहुत से ... थे। दो फिलेपाईन के रहने वाले थे। एक व्यक्ति जिसकी आंखें ... लम्बी थी आधा चीनी प्रतीत होता था।

लट्ठेहारों में तीन छोटे कद के इंडियन थे। उनका रंग काला था और वे किसी ऐसी स्थानीय जाति में से बच गये थे जिसकी हत्या कर दी गई थी। वे स्कैन्डेनेविया के लम्बे कद के और भूरे बालों वाले व्यक्तियों के साथ-साथ चल रहे थे। मैक्सीको के गंदुमी रंग के कुछ व्यक्ति ऐसी संगीतमयी भाषा में बोलते थे जो दूसरों की समझ में न आती थी।

एक शकल अधिपुरुष ने अपने आदमियों को पुकारा। उसने बैक्स क्रीक की संकीर्ण नदी को फांद कर पार किया। वह उन्हें सामने की उदग्र ढलान पर ले चला।

डावे हैलीडे ने नक्शे का अध्ययन किया फिर रविवार के नक्शे से उसका मिलान किया। वह इसी परिणाम पर पहुँचा कि हवा तीन दिन तक चलती रहेगी और हो सकता है कि चौथे दिन भी चले। तूफान जो ठंडी हवा साथ लाया था, डकोटास में होकर धीरे-धीरे पूर्व की ओर जा रहा था। दूसरा तूफान जो उसके पीछे-पीछे आ रहा था अलासका की खाड़ी में पहुँच गया था। इन दोनों तूफानों के बीच जीभ के समान ध्रुवीय हवा कैनेडा में घुसी आ रही थी।

पोंडेरोसा के जगल को आपत्ति का सामना करना पड़ रहा था। यदि समस्त संसार के मौसम का नियन्त्रण भी किसी के हाथ में होता तो क्या वह इस विशेष हवा के न्यून से प्रवाह को रोक सकता था? शायद किसी क्षेम कपाट की आवश्यकता थी। जिस स्थिति में कैलीफोरनिया के जंगल विध्वंस हुये जा रहे थे, शायद वही स्थिति वाशिंगटन और ब्रिटिश कोलम्बिया के आग से युद्ध करने वालों के हाथ मज़बूत कर रही थी। रूस, भारत और पूर्वी अफरीका में भी तो जंगल थे। उसे इस विचार पर हंसी आ गई कि मौसम के विश्वव्यापी नियन्त्रण का काम कितना यश हीन होगा। उसे इस बात की खुशी थी कि उसका काम मौसम के विषय में केवल पूर्वानुमान देना था। इसका नियन्त्रण करना न था। वह मौसम के लिये ज़िम्मेदार न था।

पूर्वानुमान के विषय में वह आर्न से बात करने गया । उसने कहा कि वह जाकर आग को निकट से देखना चाहता है ।

आर्न ने कहा, 'हां, हां । सैरोगोरडो की मचान इसके लिये बहुत अच्छा स्थान है । जीप में जाइये । सड़क कोई अधिक लम्बी नहीं ।'

डावे ने कहा, 'धन्यवाद, परन्तु पहरेदार को मेरा वहां जाना बुरा तो न लगेगा ? क्या वह भला आदमी है ?'

आर्न ने मज़ाक में कहा, 'हां, हां, मुझे यह बात भूल गई थी कि तुम इस जंगल में नये-नये आये हो । नहीं इसमें बुरा मानने की क्या बात है । तुम दोनों की खूब निभेगी ।'

अर्ध प्रातः होते-होते आग रौंदती हुई बढ़ने लगी । उत्तरपूर्वी हवा के झोंके इसका वेग बढ़ा रहे थे । इसका अटूट अग्रभाग एक मील से अधिक लम्बा था ।

दायें पक्ष में आग झाड़ियों के मैदान के उस भाग में पहुँच गई थी जहां बहुत से ऊंचे-ऊँचे ठूंठ मैंजेनिटा से बाहर उभर रहे थे । सूखे वृक्षों के ठूंठ प्रज्वलित हो उठे । ठूंठों के सिरे जो भूमि से सौ फीट से भी अधिक ऊँचे थे, हवा के कारण शोले दे रहे थे । धुआं और ज्वाला ध्वजाओं के समान फहरा रहे थे ।

बायें पक्ष में भी हवा ने नया रूप धारण कर लिया था । जो ढलान रिवर्स रिज को जाती थी आग उस पर पहुँच गई थी । चौपोमसी क्रीक का दर्रा कीफ़ के समान था । वह उत्तर दिशा में मेड़ के बीचों-बीच इस प्रकार स्थित था जैसे उसमें काट कर बनाया गया हो । यहां से हवा बगूले के समान उठती थी । बढ़ता हुआ उत्ताप भी दर्रे के साथ-साथ ऊपर को उठने लगा । भूमि तल सहायक होने के कारण आग तेज़ी से भड़कने लगी और झाड़ियां और छोटे-छोटे वृक्ष जलने लगे । खैर गुज़री कि यहां यह शिखर अग्नि न बन पाई । धूसर रंग के धुएं का महान स्तम्भ दक्षिण पश्चिम की ओर झुक गया । ऊपर उठता तो वह फैल जाता । बीस हज़ार फीट की ऊँचाई पर पहुँचकर वह ऊपरली हवा के पश्चिमी झोंकों के

प्रभावाधीन हो गया, और कुण्डलियां बनाता हुआ पूर्व की ओर चला गया।

रिवर्स फ्लेट की रेखा के तहस-नहस होने से शोले बेयर क्रीक की तंग नदी को पार कर गये थे और अब आग रिवर्स क्रीक के उत्तर में जल रही थी। प्रातः भर यही चेष्टा होती रही कि आग फैलने न पावे और ढलान के ऊपर न चढ़ पाये। इसे खाड़ी के दक्षिण की ओर धकेलने का प्रयास होता रहा।

दूसरे पक्ष पर समस्या सुगम थी। आग दर्रे की कीफ़ में गरज रही थी। वहां उस पर काबू पाना कठिन था। योजना यह थी कि उसे जलने के लिये अधिक स्थान दिया जाये। रेखा को मेढ़ की नाक तक ले जाया जाये और इस बात का ध्यान रखा जाये कि आग जल धारा को पार न कर सके।

दूर रिवर्स रिज के शिखर पर दो ट्रैक्टर और दो सौ आदमी काम में लग गये।

बो फौक्स और अन्य योगी एक बस में चले जा रहे थे। बस उस सड़क पर जा रही थी जो सैरोगोरडो के गिर्द बनी थी। बस नये शिविर के पास आकर रुकी और उन्हें वहां उतार दिया गया। उन पर कारुक अधिपुरुष नियुक्त कर दिये गये और उन्हें औज़ार दे दिये गये। उसके पश्चात् अधिपुरुष उन्हें उदग्र और संकीर्ण पगडंडी से रिवर्स रिज के शिखर पर ले चले।

यह पगडंडी बहुत टेढ़ी-मेढ़ी थी और एक शैलेय ढलान के ऊपर से जाती थी। यह ढलान दो ऐसी चट्टानों के बीच एक कटाव था जिन्हें पार करना असम्भव था। कारुक ऊपर चढ़ने लगा। बो को यह देख देख कर घबराहट हो रही थी कि इस संकीर्ण पगडंडी के दोनों ओर ऊँची-ऊँची चट्टानी दीवारें हैं जिनका कहीं अन्त नहीं। इस पगडंडी के अतिरिक्त उनमें कहीं भी कटाव प्रतीत न होता था।

पगडंडी काफ़ी चौड़ी थी। यह देख कर उसके मन को कुछ ढारस हुई। परन्तु ज्योंही उसकी दृष्टि चट्टानों पर पड़ती, यह मार्ग उसे अति संकीर्ण प्रतीत होता और ऐसा मालूम होता कि वह इन महान दीवारों में छोटा सा एक ही द्वार है। यदि कोई ऐसी घटना हो जाये कि यह द्वार बन्द हो जाये तो वह निश्चय ही एक पिंजरे में फंस जायेगा। दूसरी ओर उसे धुएं के अतिरिक्त कुछ भी दिखाई न देता था। कोई ऐसा स्थान न था, जहां धुएं की इस दीवार में दरार दिखाई देती हो।

आज दोपहर को धुएं के स्तम्भ के आधार की चाप उसके आग मापक पर पहले से दुगनी थी। देखने से ही ऐसा प्रतीत होता था कि धुआं पहले से अधिक निकट आगया है। रेडियो पर जो बातें होती रही थीं उनसे ऐसा प्रतीत होता था कि धुआं अब रिवर्स फ्लेट के इस ओर आ गया है और केवल आठ मील की दूरी पर है। धुआं धूसर रंग का तो था परन्तु बिल्कुल धूसर नहीं। अब उसमें कुण्डलियां पड़तीं और गुबार उठते दिखाई देते थे। सूर्य सिर के ऊपर था परन्तु फिर भी धुएं के कारण वह एक लाल पट्ट के समान प्रतीत होता था। सूर्य के प्रकाश के कारण परछाईं अब भी उत्पन्न होती थी परन्तु इसका पीलापन अनिष्ट का सूचक प्रतीत होता था। वह पूर्वी पैड़ पर आकर खड़ी हो गई। उसके हाथ जंगले पर थे। दायें अगूठे के पास कोई हलकी सी चीज जो रुई के समान सफेद थी आकर गिरी। यह रुई जैसी राख थी जो उसे पहली बार दिखाई दी थी।

इस राख के गिरने से ऐसा प्रतीत हुआ मानो आग कूद कर बहुत निकट आगई है। उसके नत्थनों में जलन सी होती रही थी। अब उसे निश्चय हो गया कि यह जलन केवल खुश्क हवा के कारण न थी बल्कि इसका कारण वह धुआं भी था जो हवा में छाया हुआ था।

निश्चय ही आग उसकी ओर बढ़ी आरही थी। सैरोगोरडो के गिर्द जो सड़क बनी थी, वहां से उसे एक और ट्रक के गुज़रने की आवाज़ आई। वृक्षों के कारण ट्रक उसे दिखाई न दिया। परन्तु वह जानती थी

कि वह नये शिविर की ओर जा रहा है। दूरबीन में से दृष्टि डाली तो उसे चट्टानों के एक कटाव में से जाती हुई पगडंडी पर औज़ार सम्भाले आदमियों की एक लम्बी कतार दिखाई दी।

शीशे में से नज़र दौड़ाई तो उसे वृक्षों में रंग की झलक दिखाई दी और चमकदार लाल रंग की एक जीप ढलान पर वहां तक आगई जहां सड़क भी न थी। वह बिल्कुल उसके सामने आकर रुक गई। इसमें केवल ड्राईवर बैठा था। वह वन-सेवा के वेश में न था। उसके सिर पर टोपी न थी। हवा के कारण उसके लहरियेदार भूरे बाल बिखरे हुये थे।

वह इन मचानों पर पहरा देने वालों के रीति रिवाज से अनभिज्ञ था। आज्ञा प्राप्त किये बिना ही वह लोहे की सीढ़ियों पर चढ़ने लगा। वह मृदुल आवाज़ में सीटी बजाते चला आ रहा था।

वह पेड़ के एक कोने में खड़ी हो गई। पहले पहल द्वार में से हवा में उड़ते हुए उसके बाल दिखाई दिये। फिर गरदन का पिछला हिस्सा और कमीज़ दिखाई दी। यहां आकर वह रुक गया। उसने मुड़कर देखा और उसकी नज़र इस लड़की पर पड़ी।

सहसा वह भौंचक्का रह गया। फिर एक क्षण पश्चात् वह झेंप गया और उसका चेहरा सुर्ख हो गया।

उसने कहा, 'ऊपर आ जाओ। मेरा नाम जूडिथ गोडोए है और मैं यहां की पहरेदारिन हूं।'

उसने हैरानी से दीर्घ आवाज़ में कहा, 'ओ हो ? मुझे क्षमा कीजिए।'

'कोई बात नहीं। आप ऊपर आ जाइये।'

वहीं खड़े-खड़े उसने कहा, 'देखिए, आर्नसोरेंसन ने मुझे यह नहीं बताया था कि यहां कोई लड़की काम करती है। मैं सफ्फोक से अभी अभी आया हूँ। मेरा विचार था कि पहरा देने का काम आदमी करते हैं।'

'अच्छा, यह बात है।'

'मुझे बहुत खेद है। मुझे आर्न ने केवल इतना कहा था कि मेरी और पहरा देने वाले की खूब निभेगी।'

'कोई बात नहीं। देश के इस भाग में यह एक अच्छा मज़ाक रहता है। ऊपर आ जाओ और ज़रा आग को देखो।'

वह ऊपर आ गया। इस आभास से लड़की को बहुत ख़ुशी हुई कि यह केवल आग की ओर ही नहीं ताक रहा।

बार्ट पुनः काठी पर बैठ गया। काली घोड़ी कर्न क्रीक के साथ साथ संकीर्ण पगडंडी पर तेज़ी से चढ़ने लगी। उसके पीछे-पीछे एक लड़का रेडियो लिये आहस्ते पर चढ़ा आ रहा था। वे एक ऐसे स्थान पर पहुँचे जहां देवदार के दो बड़े-बड़े वृक्ष साथ-साथ खड़े थे। पगडंडी उदग्र हो गई थी। यहीं आकर बार्ट को स्वर्ण अवसर मिला।

उसने घोड़ी की बाग खींची, भूमि पर कदम रखा और लड़के से कहा, 'जानवरों को ज़रा दम लेने दो।' इसके पश्चात् वह चुप चाप झाड़ियों में से होकर चल पड़ा।

जिस स्थान पर वह जाना चाहता था वह पगडंडी से सौ फीट से अधिक की दूरी पर न था। परन्तु जंगल में स्थित अन्य सुन्दर स्थानों के समान इस पर कम ही लोगों की दृष्टि पड़ी थी। जब कभी बार्ट का इधर से गुज़र होता था तो वह अवश्य इस स्थान को देखने जाता था। इसे वह केवल 'कुञ्ज' कहा करता था।

वहां एक छोटी सी नदी बहती थी। उसका निर्मल हिम सा शीतल जल सदैव बहने वाले झरनों से आता था। वह पावन चट्टानों पर हल्के हल्के प्रपात बनाता हुआ, नन्हें-नन्हें कुंडों में से गुज़रता था। नदी से पीछे कुछ दूरी पर जहां हवा में अभी भी नमी थी, ऐजेलियास घास उगी थी। बसन्त ऋतु में इस कुञ्ज में स्थान-स्थान पर फीके नारंजी रंग का कलियां दिखाई देती थीं। ऐजेलियास के बिछौने से रक्त बभ्रु देवदार के वृक्षों के झुण्ड नोकदार स्तम्भों के समान ऊपर की ओर उठते थे। सिर के ऊपर टहनियों का छत्तर छाया हुआ था जिसमें से होकर सूर्य की लम्बी-लम्बी रश्मियां भूमि तक आती थीं।

बार्ट ने यहां पहुँच कर लम्बी सांस ली। उसके मन में उच्च भाव-

नायें जाग्रत हो उठीं। सौंदर्य के लिये ऐसी आकाक्षायें उठ रही थीं जिनका वर्णन नहीं हो सकता। एक धुँधली सी आशा थी कि प्रेम की दुनिया में सभी चीजें एक साथ जीवित रह सकती हैं।

उसने इस कुञ्ज पर एक अन्तिम दृष्टि डाली। वह सावधानी से चलता हुआ ऐजेलियास में से बाहर निकल आया। उसे विचार आया कि कम से कम यह सुरक्षित हैं। भूमि को रौंदने वाले पर्यटक इस दृश्य का आनन्द न ले सकते थे। यह स्थान उसी के लिये सुरक्षित था जिसे इस से प्रेम था। अभी उसे गये एक मिनट भी न हुआ था कि वह पगडंडी पर वापिस आ गया। उचक कर काठी पर बैठ गया और चल पड़ा। आस्ते पर चढ़ा लड़का अब भी उसके पीछे आ रहा था।

कुंज में शायद प्रकृति का राज्य था परन्तु मेड़ के शिखर पर लोग काम में जुते थे। बार्ट में भी परिवर्तन उत्पन्न हुआ और वह आदमियों का नेता बन गया।

वह घोड़ी पर चढ़ा एक जनरल के समान दिखाई देता था। उसकी सेना ने शत्रु के प्रहार को रोकने के लिये प्रति रक्षा के स्थान तैयार किये थे और वह मेढ़ के शिखर पर इन स्थानों का निरीक्षण कर रहा था। परंतु वह उस साजो-सामान से सुसज्जित न था। जो जनरल को अन्य लोगों से पृथक करता है। चीड़ की लकड़ी का बिल्ला ही उसके अधिकार का द्योतक था। उसकी कमीज़ गन्दी और फटी हुई थी और आग ने उसमें एक सूराख कर दिया था। उसका चेहरा उसकी काली दाढ़ी के कारण जिसमें कहीं-कहीं सफेद बाल थे, बहुत ऊबड़-खाबड़ प्रतीत होता था।

वह घोड़ी पर चढ़ा जा रहा था। बनसेवा के कर्मचारियों ने कहा, 'हैलो, बार्ट, तुम यहां ठीक समय पर पहुँच गये हो। क्या देर तक सोये रहे हो? रेंजर, यह फ्यूज़ कहां से पाया है?'

मेढ़ के साथ-साथ चलते हुये वह एक ऊँचे स्थान पर पहुँच गया। घोड़ी से नीचे उतर कर वह बाहर निकली हुई एक चट्टान पर चढ़ गया। उसके बिल्कुल नीचे रिवर्स रिज की उत्तरी ढलान पर आग का एक मील

चौड़ा अग्रभाग था । वह उसे देखने लगा । ऐसा प्रतीत होता था कि यह आग आगे बढ़ कर रहेगी । इसे देखकर भय उत्पन्न होता था ।

खुश्क हवा के झोंके चलने लगे थे इसलिये स्थिति अब भी शोचनीय थी । आग दर्रों में से ऊपर को उठ रही थी । उसके मुकाबले के लिये आदमियों को खड़ा करना खतरे से खाली न था । उन्हें वहां खड़ा करना व्यर्थ भी था । ढलानों के ऊपर आग की संचित गर्मी बढ़ी चली आरही थी । कोई भी रेखा बनाई जाती आग उसे अवश्य पार कर जाती ।

मेड़ ही एक ऐसा स्थान था जहां आकर आग रुक सकती थी । नीचे की ढलान पर उसे वृक्षों के शिखर से आग का उठता हुआ उत्ताप हवा में चला जाता था । इसलिये यहां प्रतिरक्षा की सुदृढ़ रेखा बनाई जा सकती थी । मेड़ के साथ-साथ मशीनें और आदमी एकत्र करना भी सुगम था । परन्तु धुएं और ज्वाला को देखकर उसका मन व्यथित हो उठा । वृक्षों को जलते देख उसे वेदना हो रही थी । उसे अब अपने ऊपर भरोसा न रहा था । आग का सांद्रित उत्ताप ही उसे व्याकुल किये देता था ।

इस समय तक वह लड़का भी जिसने रेडियो सम्भाला हुआ था वहां आ पहुँचा । उसने रेडियो द्वारा भाग दो के साथ सम्बन्ध स्थापित किया । बार्ट ने इस भाग के अधिपुरुष से बात की । अधिपुरुष ने इस बात का समर्थन किया कि उन्होंने आग को खाड़ी के उस पार धकेल दिया है । यह बात बार्ट को स्वयं भी दिखाई देती थी । परन्तु ऊपर की ओर लीक पार करने से रोकना कठिन प्रतीत हो रहा था । उन्हें चौथे खण्ड के लिये अधिक आदमियों की आवश्यकता थी ।

बार्ट ने अनियन क्रीक के शिविर से बात की । 'कहो, क्या लाश मिल गई ?'

'लाश ?'

'हां ।'

'अच्छा, यह तो बताओ कि क्या उसका विवाह हो चुका था ?'

'कहते हैं कि उसका विवाह हो चुका था ।'

नवाँ दिन

अभी चन्द्रमा उदय नहीं हुआ था । आकाश में अंधेरा छाया था। रिवर्स रिज का श्यामल धुंध एक दानव के समान प्रतीत होता था। उसने एक बार फिर उससे परे की चमक पर दृष्टि डाली। आग इस बार भी उसकी ओर बड़ी तेज़ी से बढ़ आई थी। पहली रात यह चमक एक चटाक के समान थी और नीचे की ओर दिखाई देती थी। अब यह समस्त उत्तरपूर्वी क्षितिज पर छा गई थी। इसका आकार फैल कर पहले से दुगुना हो गया था। और वह रात की अंधियारी में बहुत उभरी हुई दिखाई देती थी।

आग की चटक या गर्जन सुनाई देनी चाहिये थी परन्तु चारों ओर निरवता छाई थी। वह केवल कल्पना द्वारा ही आग के चटकने और गरजने की ध्वनि सुन सकती थी। फिर वह स्तब्ध रह गई। गुलाबी पृष्ठभूमि पर एक चमकदार पीली सजीव ज्वाला दिखाई दी। इसमें अब कोई सन्देह न रह गया था कि शत्रु उसके सामने है।

एक क्षण के लिये उसे घबराहट हुई परन्तु फिर वह संभल गई। उसे ज्वाला दिखाई दी थी। परंतु इसका अभिप्राय यह न था कि आग सहसा मेड़ को पार कर आई है। किसी अलग-थलग स्थान पर किसी ठूंठ ने आग पकड़ ली थी और उसकी ज्वाला इस लड़की की दृष्टि रेखा में आ गई थी।

अप्रिय अंधेरे में बार्ट अपने कम्बलों में लिपटा पड़ा था। वह बहुत थक गया था। बार-बार उसके अंग फड़कते थे परंतु नींद उसे न आती थी। वह लेटे-लेटे सोच रहा था। उसे निरीक्षक का विचार आया जिसे लकड़ी की मिल का प्रबंधक होना चाहिये था, जंगल का नहीं। वह कागज़ पर हिसाब लगाता था। रिवर्स फलैट पर बनाई हुई अग्नि रेखा तहस-नहस हो गई थी। और एक व्यक्ति ...परंतु नहीं—उसके विषय में कुछ भी नहीं सोचना चाहिये। यह हानि उस पागल ट्रैक्टर-चालक

के कारण हुई थी। हमेशा यह सोचना चाहिये कि अधिक-से-अधिक अनिष्ट होने वाला है। इस बार तो अवश्य ऐसा ही हुआ था। परंतु निरीक्षक ......

उसके मन में आग का विचार आया और निरीक्षक उसके ध्यान से उतर गया। एक बार आग का विचार आते ही उसके ही विषय में हज़ारों बातें स्मरण हो आईं। फिर वह सहसा कम्बल उतार बाहर निकल आया।

नंगे पांव ही पथ पर चल पड़ा। इधर-उधर आदमी सोये पड़े थे। मुख्य कार्यालय की बत्तियाँ खूब चमक रही थीं। उसने मुख्य कार्यालय का ही रुख किया। पोंडेरोसा के दो आदमी ड्यूटी पर थे जिनमें से एक रात के लिये अग्नि अधिपुरुष का काम कर रहा था।

उसने कहा—'कहो, जैक, क्या हाल चाल है?'

'बार्ट—सब ओर खामोशी है।'

'रिवर्स क्रीक पर जो संकीर्ण दर्रा है उसका क्या समाचार है?'

'कोई विशेष समाचार नहीं। भाग दो ने थोड़ी देर हुए एक सन्देश भेजा था। यह देखिये यही वह सन्देश है। हमने इसका समय ३ ' २२ लिखा है। इससे विदित होता है कि सब ठीक-ठाक है।'

'खण्ड १ का क्या समाचार है?'

'नहीं, कोई भी नहीं। क्या इसके विषय में आपको कोई विशेष चिन्ता है?'

'नहीं, मैं कुछ हैरान सा था।'

'यदि आप चाहें तो एक मिनट में मैं उन्हें रेडियो द्वारा मिला सकता हूँ।'

'नहीं, कोई आवश्यकता नहीं। मैं तो नींद लेना चाहता हूँ।'

'बार्ट, बेहतर है आप सो जायें। आप बहुत थके-थके मालूम होते हैं।'

इसके पश्चात् वह वापिस वहीं आगया वहां उसके कम्बल पड़े थे। अब उसे चीड़ के वृक्षों के बीच से ऊषा की धीमी-धीमी रोशनी दिखाई

देने लगी थी। ऐसा प्रतीत होता था कि हवा का वेग बढ़ रहा है। उसे वृक्षों के शिखरों के बीच से आता हुआ, उसका रव सुनाई दे रहा था।

वह फिर अपने कम्बलों में घुस गया। कम्बलों में नीग थीं परन्तु वह जानता था कि अब उसे नींद न आयेगी। वह सायरन बजने की प्रतीक्षा करने लगा।

सैरोगोरडो की निचली ढलान के गिर्द से होकर आती हुई सड़क एक छोटे से हमवार स्थान पर आकर समाप्त हो जाती थी। यहीं कारेन क्रीक पर एक शिविर स्थापित किया गया था जहां बो फौक्स और अन्य योगियों ने रात गुज़ारी थी। साढ़े चार बजे कारकुन बाहर निकल आये। उन्होंने नाश्ता किया उन्हें भोजन आदि और औज़ार दिये गये और वे रात के कारकुनों का स्थान लेने के लिये चल पड़े।

अन्य लोगों के साथ बो ने भी छोटी सी नदी पार की। वह उनके साथ-साथ उदग्र पगडंडी पर जिस पर आड़ें लगी हुई थीं चढ़ने लगा। उसने घबराहट से इधर-उधर नज़र दौड़ाई। चट्टान में उसे कोई अन्य कटाव दिखाई न दिया। सामने की ओर उसने ऊपर को नज़र उठाई। धुँआ बहुत गहरा हो गया था और बहुत निकट आ गया था। आधे रास्ते आकर वे एक उदग्र ढलान पर दम लेने के लिये रुक गये। बो ने अपने एक साथी से अपने मन की बात कही।

'मुझे तो ऐसा लगता है कि इस स्थान पर आने के लिये यही एक मार्ग है।'

उसके पास खड़े आदमी ने बे-परवाही से पहले एक ओर दृष्टि डाली फिर दूसरी ओर।

फिर उसने कहा, 'हां, मालूम तो ऐसा ही होता है। परन्तु सम्भव है और भी मार्ग हों। मुझे उनका बोध नहीं।'

नीचे की ओर जो तीसरा आदमी खड़ा था उसने बो को कुछ कहते सुना था। परन्तु क्या कहा था यह बात उसकी समझ में न आई थी। अपने पास खड़े आदमी से उसने पूछा, 'ये लोग क्या कह रहे हैं?'

'ये कहते हैं कि यहां पहुँचने के लिये यही एक मार्ग है।'

जिस आदमी ने प्रश्न किया था उसे यह बात ठीक प्रतीत हुई। उसने अनजाने में ही बदल कर यह बात अगले आदमी को यों कही।

'तुम्हें मालूम होना चाहिये कि यहां पहुँचने का यही एक मार्ग है।'

प्रत्येक आदमी को यह जानने की उत्सुकता थी कि वह उससे आगे खड़े व्यक्ति क्या बात कर रहे हैं और उसे यह प्रलोभन था कि वह अपने से पिछले आदमी को यह सूचना पहूंचाये और यह सिद्ध करे कि वह बहुत कुछ जानता है। इस प्रकार यह बात उस पंक्ति में नीचे ही नीचे अन्तिम व्यक्ति तक पहुँच गई। जाते जाते यह वाक्य सरल और प्रबल होता गया। अन्त में इसे ऐसा रूप दे दिया गया मानों इसे ऊपर खड़े अधिपुरुष ने कहा है और यह एक प्रमाणिक तथ्य है कि ऊपर आने के लिये यही एक मार्ग है। अब यह बात पक्की हो गई कि चट्टानों में से होकर ऊपर आने के लिये यही एक मार्ग है।

'स्पिट कैट' ४५०० फीट की ऊँचाई पर शुरू हुई थी यहां जेफ़री चीड़ के वृक्षों का जंगल था जिसमें कहीं-कहीं श्वेत तालीश के दाह्य वृक्ष भी थे।

आग भेड़ की नाक को जलाती हुई, घास और झाड़ियों के मैदानों को विध्वंस करती हुई एक ऐसे जंगल में पहुँची जो उस से पांच सौ फीट नीचा था। यह जंगल पहले जंगल से कई बातों में भिन्न था। इस स्थान पर सामान्यता पोंडेरोसा चीड़ के वृक्ष थे। उनमें कहीं कहीं डगलस तालीश और सुरक्षित देवदार के वृक्ष भी थे।

आग के यहां पहुंचने से पहले यह एक बहुत ही सुन्दर और भव्य जंगल था। वृक्षों के बीचोंबीच खुले मार्ग थे। बड़े-बड़े वृक्षों के बीच काफी अन्तर था। उनके नीचे छोटे छोटे वृक्ष भी झुंडों के रूप में न थे। टहनियों का छतर भी कहीं घना न था।

आग का शिकार हो जाने के पश्चात यह जंगल काला और कुरूप होगया था। परन्तु यह जंगल बहुत खुला था। बहुत से बड़े-बड़े वृक्ष और

कई मध्यम ऊचाई के वृक्ष भी आग की झपट से बच गये थे। जहां कहीं खुला स्थान था वहां से आकाश की ओर गर्मी इस प्रकार जाती थी जैसे धुआंसिनो में से धुआं जाता है। इसलिए खुश्क हवा के होते हुये भी इस जंगल में शिखर-अग्नि ने तबाही न मचाई थी। ऊपर की टहनियां सुरक्षित रही थीं।

रिवर्स रिज के ऊपर की ओर विभिन्न प्रकार का जंगल था। यहां उत्तरी ढलान पर गर्मी की धूप कम तेज़ी से पड़ती थी और जल्दी ही छाया आ जाती थी। भूमि आर्द्र थी और हवा ठण्डी। यहां चीड़ और देवदार के वृक्ष थे और वे डगलस तालीश के वृक्षों का मुकाबला न कर सकते थे। डगलस तालीश के वृक्षों के समान ही ये वृक्ष साथ साथ उगे थे। नीचे की झाड़ियां भी घनी थीं। इनमें फर्न और बेरी के झाड़ थे। कहीं-कहीं ठूंठ खड़े थे जिनसे यह विदित होता था कि बलिष्ट वृक्षों ने किस प्रकार निर्बल वृक्षों का अंत कर दिया है। यहां वृक्षों के कुछ तने एक दूसरे के ऊपर गिरे पड़े थे। इस कहानी का दूसरा परिच्छेद क्या होगा यह इन्हें देखने से मालूम हो सकता था।

इस घने जंगल में आग प्रातः के मध्य में पहुँच गई। वह फर्न के बिछौने पर उग्र रूप से गरजने लगी। एक दूसरे के ऊपर गिरे हुये वृक्षों के तने सुंधकने लगे। फिर वे भड़क उठे और तेज़ी से जलने लगे। आग ठूंठों की खुश्क छाल को जलाती हुई ऊपर पहुँच गई।

ऊपर घनी टहनियों का छतर छाया था। उसमें से गर्मी बाहर न जा सकती थी। ताप तेज़ी से चढ़ने लगा। फिर अकस्मात एक नहीं बल्कि सभी वृक्षों के शिखर प्रज्वलित हो उठे।

संचित हुआ उत्ताप बाहर निकल गया। आग किसी सीमा तक बुझ गई। परन्तु एक बार शिखर अग्नि बनने के पश्चात वह शिखर अग्नि ही बनी रही। रिवर्स रिज की उत्तरी ढलान पर जो तीन दर्रे थे उनके कीफ़ों के समान मुखों से खुश्क हवा चल रही थी। भूमितल, खुश्की, हवा और घने जंगल ने मिलकर आग को बहुत तेज़ कर दिया।

भूमि की अग्नि और शिखर-अग्नि साथ-साथ बढ़ रही थीं। इन दो अग्नियों के बीच में न कोई वृक्ष शेष रहा न कोई झाड़ी, न कोई फर्न और न ही जड़ी बूटियां। सामने घने जंगल और चढ़ाई थी। पीछे से खुश्क हवा लगातार आ रही थी।

दर्रों के पैंदों में जहां हवा तेज़ थी आग की नोकें पहुँच गई थीं। शेष भाग में आग एक ठोस दीवार के समान खण्ड ३ की अग्नि रेखा की ओर भयानक रूप से बढ़ी चली जारही थी।

उस प्रातः बो फौक्स का कारुक कैन क्रीक पर स्थित शिविर से सबसे पहले रवाना हुआ था। मेढ़ के शिखर पर पहुँच कर वह भयभीत होने लगा। उसकी बायीं ओर से धुएँ का एक गुबार उठा जो निकटतर आता गया। उसे मालूम था कि उसकी दायीं ओर चट्टान की रेखा है। गत आधे घण्टे में उसने कई आदमियों को यह कहते सुना था कि चट्टान की रेखा के बीच से यही एक मार्ग था। वह पूर्व की ओर जारहा था और उसे यह आभास होता जाता था कि वह पिंजरे में फंसा जा रहा है। यदि कहीं पीछे की ओर पगडंडी आग की लपेट में आ जाये तो मानो पीछे का द्वार बन्द हो जायेगा और वह पकड़ में आ जायेगा। एक ट्रैक्टर गरजता हुआ उनके पास से गुज़रने लगा तो वह ठहर गये। अपने पास खड़े व्यक्ति से बो ने कहा,

'यदि पीछे पगडंडी पर आग पहुँच जाये तो हम यहां से बच कर न जा सकेंगे।' आदमी ने कहा, 'हां, यह तो ठीक ही है। चट्टान में से होकर यही एक मार्ग आता है।'

वह बो के समान घबराने वाला व्यक्ति न था। उसे आग निकट प्रतीत न होती थी।

कारुक अधिपुरुष के आदेशाधीन आदमी रेखा के दोनों ओर काम करने लगे। वे ऊँची-ऊँची झाड़ियों को काटने, छोटे-छोटे वृक्षों को झाड़ने और घास-फूस के ढेरों को जिनमें आग लगने की सम्भावना थी एक ओर हटाने लगे। एक दो घंटे काम करने के पश्चात् उन्हें महसूस होने लगा

कि आग का उत्ताप बढ़ रहा है। उतराई में एक मील से भी कम की दूरी पर शोले उठ-उठ कर कुण्डलियां बनाते हुये जा रहे थे। उन्हें आग की चटक सुनाई दी। एक सूखे वृक्ष के गिरने की आवाज़ भी गूंजती हुई आई।

एक व्यक्ति ने जो पहले भी आग को दबाने का काम करता रहा था कहा,

'आग शिखर अग्नि बन रही है।' बहुत से लोगों ने एक साथ उस पगडंडी पर दृष्टि डाली जिससे होकर वे आये थे।

उनमें से एक ने कारुक अधिपुरुष से कहा, 'मैंने सुना है कि जिस पगडंडी से हम आये हैं, चट्टान में से होकर आने का वही एक मार्ग है।' अन्य लोग यह बात सुन रहे थे।

कारुक अधिपुरुष पोंडेरोसा के जंगल का कार्यकर्ता न था। परन्तु चट्टानों के निरूपण का उसे कुछ ज्ञान था। इस चट्टान को देखने से उसे ऐसा प्रतीत न होता था कि उसमें कोई अन्य कटाव नहीं है और उसे पार करना कठिन है।

उसने पूछा, 'क्या यह बात ठीक है ? यह बात किसने कही है ?'

जो आदमी बात कर रहा था उसने पंक्ति में खड़े अन्य व्यक्तियों को पुकार कर कहा, 'बताओ, यह बात किसने कही थी कि ऊपर आने के लिये यही एक पगडंडी है ?'

किसी ने कहा, 'यह बात रेंजर ने स्वयं कही थी।'

ये लोग कारुक अधिपुरुष को रेंजर समझते थे परन्तु वह रेंजर न था। उसने यही विचार किया कि पौंडेरोसा के जंगल के किसी रेंजर ने यह बात कही थी।

उसने कहा, 'हो सकता है यह बात ठीक हो।'

अधिपुरुष को इस बात का विश्वास न आया परन्तु यह कोई अधिक महत्व की बात नहीं थी और उसने इसकी सच्चाई की खोज की आवश्यकता अनुभव न की। वह जानता था कि कोई अग्नि अधि-

पुरुष दर्जन भर कारुकों को ऐसे स्थान पर नहीं भेजेगा, जहां वे जलकर विध्वंस हो जायें ।

आग निकट आती गई और उसका उत्ताप बढ़ता गया । ऐसा प्रतीत होता था कि शोले भी अधिक ऊंचे उठ रहे हैं । काम करने वालों के मन में बेचैनी आ रही थी और वे मुड़-मुड़ कर देख रहे थे । अपनी रेखा के एक सिरे पर उनकी एक अन्य कारुक से भेंट हुई और उन्होंने इसके आदमियों के मन में भी घबराहट उत्पन्न करदी ।

'रेंजर कहता है कि ऊपर आने के लिये यही एक मार्ग है ।'

उनकी रेखा के अन्त पर एक अन्य कारुक के आदमी काम कर रहे थे जो अनियन क्रीक के शिविर से आये थे । दोनों कारुकों के आदमी आपस में मिले । दूसरे कारुक के आदमी चट्टान के किसी अन्य कटाव से होकर मेढ़ के साथ-साथ पश्चिम की ओर आये थे । उन्होंने उड़ती हुई खबर सुनी कि यहां आने का एक ही मार्ग है । उन्होंने अपने अनुभव की उनके अनुभव के साथ तुलना नहीं की । वे इस प्रदेश से पूर्ण रूप से परिचित न थे । उन्होंने यही समझा कि जिस मार्ग की बात हो रही है वह वही मार्ग है जिसके द्वारा वे वहां पहुँचे हैं । साथ ही उनका अधिपुरुष नवयुवक था । वह अपना यही दायित्व समझता था कि अपने आदमियों की रक्षा करे । शिखर-अग्नि को देख कर उसके हाथ-पांव फूल गये ।

यह दन्त कथा जब एक बार चल पड़ी तो पूर्व की ओर समस्त मेढ़ पर पहुँच गई । दूसरे कारुक के लोग भी घबरा गये । वे भी पीछे की ओर देखने लगे परन्तु उनकी दृष्टि पश्चिम की अपेक्षा पूर्व की ओर थी । वे समझते थे कि बचने का वही एक मार्ग है ।

इस समय तक आग को दबाने के लिए सोलह सौ आदमी आ चुके थे । अन्य बहुत से लोग आरहे थे । वाहन के लिये सौ से अधिक ट्रक, बसें और मोटर कारें थीं । तीन कई-कई डिब्बों की गाड़ियां थीं । एक सामान ढोने वाला हवाई जहाज था । रेखाओं पर बारह ट्रैक्टर काम कर

रहे थे। तीन टैंक तैयार खड़े थे। यदि आग ऐसे स्थान तक आ जाती जहां उनकी पहुँच हो सकती थी तो वे तत्क्षण काम आरम्भ कर देते। एक निरीक्षक वायुयान भी तैयार था। मुख्य कार्यालय और भाग १ का मुख्य अग्नि-शिविर अभी भी अनियन फ्लैट पर था। भाग २ का शिविर पार्कर फ्लैट पर था। कर्नन क्रीक पर समाप्त होने वाली सड़क पर भाग १ के लिये एक छोटा शिविर था जिसका सम्बन्ध अधिकतर खंड ३ से था। आग की दूसरी ओर काफ़ी हट कर एक छोटा शिविर था, जहां भंडार रहता था। ये पदार्थ सामान ढोने वाला हवाई जहाज रैडिंग से लाता था, और छतरियों द्वारा गिराता था। यहीं पहले-पहल हवाई जहाज से १० व्यक्ति छतरियों द्वारा उतरे थे। अनियन फ्लैट से नीचे की ओर जो सड़क जाती थी उस पर कैदियों का अपना शिविर था। इनके अतिरिक्त कई अलग-अलग स्थानों पर सामान के लिये गोदाम बने थे। कई स्थानों पर तेल और गैसोलीन के भंडार थे। इन्हीं से ट्रैक्टर और ट्रक चलते थे।

आग अब भी बहुत निकट थी। बो फौक्स अधिक से अधिक बेचैन हुआ जा रहा था। वह कांपने लगा। उसने रेखा के साथ पीछे को दृष्टि डाली और यह मालूम करने का प्रयास किया कि क्या आग पगडंडी के निकट पहुँच गई है। उसे प्रतीत हुआ कि आग वहां पहुँच गई है।

नाज़ुक घड़ी आ रही थी। बैन रोच ने खंड ३ के मध्य भाग के निकट रेखा के पीछे बाहर निकली हुई चट्टान पर अपना मुख्य कार्यालय स्थापित किया। रेडियो चालक ने एक अच्छा एरियल लगा दिया था जिसके कारण रेडियो द्वारा बातचीत बहुत स्पष्ट रूप से हो सकती थी। इस बाहर निकली हुई चट्टान पर खड़े होकर वह रेखा पर चौथाई मील तक पूर्व और पश्चिम की ओर देख सकता था। नीचे की आग भी उसे यहां से साफ दिखाई देती थी।

उसकी अभ्यस्त दृष्टि ने यह भांप लिया था कि आग का रूप बदल रहा है। मेढ़ शिखर पर अपेक्षाकृत समतल थी। इस हमवार भूमि पर

पहुँच कर आग का उफान कम होने की सम्भावना थी। इसमें वह तेजी बाकी न रह सकती थी जो चढ़ाई और दर्रे की कीफ़ के कारण उत्पन्न हुई थी। मेढ़ के शिखर पर धूप भी खूब पड़ती थी और यहां की भूमि खुश्क, चट्टानदार और पतली तह की थी। पोंडेरोसा के चीड़ के वृक्षों का स्थान पुनः डगलस तालीश के वृक्षों ने ले लिया था और वे भी बहुत छोटे-छोटे और अलग-अलग थे। कहीं-कहीं झाड़ियां और मैजेनिटा घास थी। उसे आशा थी कि खुश्क हवा के कारण भूमि की आग इनमें से तेजी से आगे बढ़ेगी परन्तु एक बार डगलस तालीश के घने वृक्षों को पार कर शिखर अग्नि निश्चय ही बुझ जायेगी।

उसने शकल अधिपुरुषों से मिलान करके देखा। उनके पास फलीतों की भरमार थी और उन्हें उनका प्रयोग मालूम था। अब वे अपने ऊपर निर्भर रह सकते थे।

उसने बार्ट को बुलाया।

जब बार्ट को मालूम हुआ कि उसे बैन बुला रहा है तो वह उछल पड़ा। वह उसके बुलावे की प्रतीक्षा ही कर रहा था।

उसने पूछा, 'आग का क्या हाल है?'

बैन ने कहा, 'बहुत बुरा तो नहीं है।'

'कितना अच्छा होता यदि मैं भी तुम्हारे साथ होता।'

'बार्ट, यहां तुम कुछ भी न कर सकते थे। तुम्हें मालूम है कि जहां हो वहां रहकर तुम सब स्थानों का समाचार पा सकते हो और बहुत उपयोगी काम कर सकते हो। हम जल्दी ही प्रत्याग्नि जलायेंगे। शिखर अग्नि दब रही है। पिछले कुछ क्षणों में ही कई स्थानों पर दरार उत्पन्न हो गये हैं। आशा है आधा घंटा बीतने तक यह बिलकुल बुझ जायेगी।'

'अच्छे बैन, मेरी इच्छा है कि मैं तुम्हारे पास आ जाऊं।' बार्ट की आवाज भर्रा गई। 'यहां प्रतीक्षा करना मुझे अखर रहा है। मुझे यहां रहना असहनीय हो रहा है।'

थोड़ी देर बैन चुप रहा। मालूम होता था जैसे बैन उसकी आवेशपूर्ण

आवाज को सुनकर घबराया है। उसके पश्चात बड़ी कठिनाई से उसकी आवाज़ निकली।

'बार्ट, सुनो! ऐसा कोई काम नहीं जिसे तुम यहां आकर कर सको। तुम यहां हो भी तो नहीं। इसलिये चिन्ता की कोई बात नहीं। अब चिन्ता मत करो। स्थिति बेहतर मालूम होती है। ऐस १४१५ ऐल १४६३ से कहता है उसकी बात समाप्त हो गई है। उसकी बात समाप्त हो गई है।'

बार्ट ने बैन को अपनी बात समाप्त करते देखा तो वह चौंक गया। बैन न चाहता था कि अग्नि-अधिपुरुष आगे कोई बात कहे। वह फिसल गया था। यदि वह बात करता तो आग के पास खड़े रेडियो सुनने वालों के कानों में उसकी आवाज़ अवश्य पड़ती। वे दूसरों से कहते—"देखो, बार्ट बहुत चिन्तित है। स्थिति बिगड़ गई मालूम होती है।

मुख्य कार्यालय में वहीं बैठे हुये निरीक्षक ने और वाल्टबर्नाबी ने उसकी आवाज़ सुन ली थी। उन्होंने इसके विषय में कुछ न कहा था परन्तु उसे ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो वे व्याकुल हो गये हैं।

जूडिथ गोडोए और डावे हैलीडे पूर्वी पैड़ पर साथ-साथ खड़े जंगले के ऊपर से झुक कर देख रहे थे। रिवर्सरिज के ज़रा परे से धुआं एक चौड़े स्तम्भ के समान उठ रहा था। अब स्पष्ट दिखाई देता था कि उसमें लहरें और कुंडलियां उठ रही हैं।

छः मील की दूरी से ही उन्हें अब लाल-लाल शोले उठते दिखाई दे रहे थे। उसने कहा—'मैं यूनानी-दर्शक हूँ।'

'वह क्या होता है? मैं मौसम का विशेषज्ञ हूँ।'

'मेरा अभिप्राय है कि रंग मंच पर जो कुछ होता है मैं उसे देखती हूँ और उसकी आलोचना करती हूँ। मैं खेल से बाहर हूँ और क्रिया में कोई भाग नहीं लेती।'

'अब मेरा हाल सुनो। मैं अपने नक्शे पर अंकित तूफान को देखता

हूँ, और उस पर टीका टिप्पणी करता हूँ परन्तु मैं तूफ़ान को मजबूर नहीं कर सकता कि वह वर्षा करे और आग को बुझा दे।'

वह बोली—'यह एक और बात है जो हम में सामान्य है।'

डावे चौंक कर बोला—'यह देखो, राख!' यह कहते-कहते वह उसके हाथ पर पड़ी राख को पोंछने लगा। परन्तु वह किसी न किसी बहाने अपना हाथ उसके हाथ पर जमाये रखना चाहता था। उसे यह स्वाभाविक ही प्रतीत होता था।

हवा रेखा से आ रही था। इसलिये यदि रेखा के निकट प्रत्याग्नि जला दी जाती तो वह हवा में सुगमता से पीछे की ओर न हट सकती थी। परन्तु यदि वह रेखा से काफ़ी अन्दर को जलाई जाती तो हवा उसे धकेल कर रेखा पर ले आती और वह मुख्य अग्नि के समान ही खतरनाक सिद्ध होती।

यदि आग बहुत तेज हो तो चारों दिशाओं से हवा चूसती है। उससे थोड़ी दूरी पर ऐसा स्थान होता है जहां हवा स्थिर हो जाती है। आग के अधिक निकट आकर हवा का प्रवाह उलटा हो जाता है प्रत्याग्नि उस समय जलाई जाती है जब हवा का यह उलटा प्रवाह बहुत प्रबल हो।

बाहर निकली हुई चट्टान पर खड़े बैन रोच को किसी सीमा तक अपने ऊपर भरोसा था। कई स्थानों पर रेखा बिल्कुल साफ़ थी और कई स्थानों पर उसे बाहर निकली हुई चट्टानों का सहारा था। आग के सामने की उपज न तो अधिक घनी थी और न अधिक ऊंची। मुख्य अग्नि वृक्षों के शिखरों पर अब बिल्कुल बुझ गई थी। परन्तु भूमि पर वह बड़ी तेज़ी से जल रही थी। बैन को महसूस हुआ जैसे हवा बन्द हो गई हो। फिर उसे अनुभव हुआ कि वह धीरे से उसकी दूसरी गाल के पास से होकर गुज़र गई है।

उसी समय उस शकल में जो उससे बिल्कुल नीचे था शकल अधिपुरुष ने फलीता जलाया। धीमी-धीमी गुलाबी ज्वाला उठने लगी तो उसने उसे सूखी झाड़ियों के ढेर में जिसे बड़ी सावधानी से तैयार किया

गया था, लगा दिया । हलका-हलका धुआं उठने लगा । उसके पश्चात् शोले बुलन्द हुये, आग चटकने लगी और जल्दी ही भड़क उठी। दो व्यक्ति तटस्थ खड़े थे कि यह आग रेखा को पार न कर जाये । शकल अधिपुरुष दूसरी प्रत्याग्नि जलाने चल पड़ा ।

चन्द मिनटों में ही बैन को पूर्व की ओर ज़रा हट कर धुआं उठता दिखाई दिया । हवा का उलटा प्रवाह पश्चिम की ओर शायद बाद में आया था । परन्तु कुछ देर पश्चात् उधर भी उसे धुआं उठता दिखाई दिया ।

अब प्रत्याग्नियां धायें-धायें करती हुई बीस फीट ऊंची ठोस दीवार के समान बढ़ी जा रही थीं । आशा थी कि चन्द मिनटों में ही उनकी मुख्य अग्नि के साथ टक्कर होगी । इस टक्कर में शोले बहुत ऊँचे उठेंगे और आपत काल का अन्त हो जायेगा । स्थिति बहुत सन्तोषजनक प्रतीत होती थी ।

बो फौक्स रेखा के साथ आधे मील नीचे खड़ा था । प्रत्याग्नियां उसे बहुत निकट चटकती हुई प्रतीत हुईं । उनसे ऐसा उत्ताप उठ रहा था कि बो ने उससे बचने के लिये अपने चेहरे को ढांप लिया । उसे यह आभास नहीं हुआ कि शोले वास्तव में रेखा से परे जा रहे थे ।

प्रत्याग्नि मुख्य अग्नि के अग्र भाग तक पहुँच गई । उनके मिलते ही शोले एक दम बुलन्द होने लगे । इतनी गर्मी थी कि सब घबरा गये । बो ने पीछे की ओर मुड़ कर देखा । सहसा उसी समय उसके बिलकुल पीछे रेखा की उलटी तरफ़ एक झाड़ी भड़क उठी ।

उसे ऐसा मालूम हुआ जैसे उसके पीछे द्वार टक से बन्द हो गया हो । एक भयभीत जानवर के समान उसने एक किलकारी मारी और वह अपना बेलचा वहीं छोड़ कर भाग खड़ा हुआ ।

कारुक अधिपुरुष ने उसे भागते देखा तो वह चिल्लाया और रोकने के लिये भागा ।

अन्य लोगों की दृष्टि भी उस ओर गई । उन्हें एक आदमी भय-

भीत हुआ भागता दिखाई दिया। कारुक अधिपुरुष भी चिल्लाता और भागता जाता था। आग रेखा को पार कर गई थी। उनके दूसरी ओर अग्नि गरज रही थी।

उन्होंने अपने औज़ार फेंक दिये और वे भी भाग खड़े हुये।

कारुक अधिपुरुष ने मुड़ कर आदमियों को रोकने का प्रयास किया। वह बाजू फैला कर पगडंडी के बीच में खड़ा हो गया और उन्हें पुकारने और डांटने लगा। भागते हुये जानवरों के समान वे उसके पास से होकर गुज़र गये। उस कारुक के आदमी जो दूर पूर्व की ओर काम कर रहे थे दूसरों को भागते देख कर भयभीत हो गये। पीछे मुड़ कर देखते ही उन्हें यह बात याद आ गई कि चट्टान को पार करने का एक ही मार्ग है। वे काम पर तो लगे थे परंतु उनके मन में असमंजस के भाव उत्पन्न हो चुके थे।

उनका कारुक अधिपुरुष नवयुवक था। वह अपने आदमियों के जीवन की रक्षा की चिन्ता करने लगा। वह भी घबराया हुआ था। उसने जल्दी ही इस पर विचार किया। यदि दूसरा कारुक भाग रहा है तो इसका अवश्य कोई कारण है। शायद समस्त रेखा का परित्याग किया जा रहा था, और अफला-तफली के कारण उस तक आदेश न पहुँच पाया था। उसने निश्चय कर लिया।

'आओ, यहां से निकल चलें। अपने-अपने औज़ार ले आओ।'

अपने बायें कन्धे के ऊपर से आग की ओर झांकते हुये वह भाग खड़े हुये। उनकी देखा देखी दूसरा कारुक भाग खड़ा हुआ। बहुधा आदमी ऐसे थे जो अपने बेलचे, कुल्हाड़े और अपनी गैंतियां फेंककर निर्लज्ज रूप से भाग रहे थे।

दूसरी ओर भगदड़ मच गई थी। घबराये हुये आदमियों की आवाज़ें सुनसुन कर एक के बाद दूसरा कारुक डर कर भागने लगा।

कुछ कारुक अधिपुरुष यह समझ कर कि कोई आपत्ति आई है भागने लगे। फिर भी बहुत से अधिपुरुष ऐसे थे जो डटे रहे। उनके साथ

उनके कारुक के एक दो आदमी भी खड़े रहे। आदमियों की यह भीड़ उस चट्टान के पास से गुज़र रही थी जहां बैन रोच निःसहाय खड़ा देख रहा था। वह उन्हें रोक न सकता था।

रेडियो सम्भालने वाले को सम्बोधित कर उसने कहा, 'हे भगवान ? हमने हवा का, ढलान का और उपज आदि का तो विचार किया था परन्तु अब यह आदमियों की घबराहट आ पड़ी है।'

उस व्यक्ति ने घबरा कर कहा, 'क्या हम भी यहां से भाग चलें ?'

'नहीं नहीं। यह स्थान बहुत सुरक्षित है। मुझे बार्ट से मिला दो।'

पश्चिमी पक्ष से उस समय तक लोग घबराकर भागते रहे जब तक कि वे उस स्थान पर नहीं पहुँच गये जहां से वह पगडण्डी आरम्भ होती थी जिसके द्वारा वे वहां आये थे। वहां पहुँचते-पहुँचते वे थक कर चूर हो चुके थे। यह स्थान उनके लिये सुरक्षा का सूचक था। बो फौक्स भी बैठ कर दम लेने लगा। अब उसे कोई घबराहट न थी।

पूर्व की ओर भी आतंक फैलता गया। केवल कैदी ही रेखा पर खड़े रह गये। सामाजिक रूप से शायद उनका स्तर ऊँचा न था परन्तु वे सुदृढ़ व्यक्ति थे। उन्हें यह देखकर बहुत आनन्द आया कि सदाचारी व्यक्ति भागे जा रहे हैं। वे पगडंडी के किनारे खड़े उनकी हँसी उड़ाते रहे और गंदे-गंदे शब्द बोलते रहे।

जिस आग ने बो फौक्स को घबरा दिया था वह चट्टान के पास जल-कर समाप्त हो गई। परन्तु रेखा का बहुत सा भाग ऐसे ही पड़ा था और वहां केवल थोड़े से अधिपुरुष और उनके साथ एक-एक दो-दो आदमी थे। दोनों अग्नियां मिलीं तो शोले बहुत ऊँचे तक पहुँच गये और ऊपरली हवा ने बहुत सी चिनगारियों को रेखा के पार फेंक दिया। धुएँ के बादल उठने लगे। अन्य स्थानीय अग्नियों के समान कई स्थानों पर थोड़ी-थोड़ी आग जलने लगी। कहीं वह बढ़ी हुई चट्टानों के पास जल-जल कर बुझ गई। कहीं उसे बुझाने के लिये शेष आदमी आगे बढ़े।

परन्तु बहुत से स्थानों पर जहां उसे बुझाने वाले आदमी न थे आग भड़क उठी। अधिकतर अग्नियां ऐसी थीं जो चट्टानों के बीच की दरारों में जल रही थीं। खुश्क हवा के कारण धीमी-धीमी आग भी प्रचण्ड हो गई और जल्दी ही आगे की ओर तेज़ी से बढ़ने लगी।

जब बार्ट को यह समाचार मिला तो उसे एक भयानक दृश्य दिखाई दिया। ऐसा प्रतीत हुआ कि कोई युवा स्त्री जो अति सुन्दर थी, उद्दंड हाथों में पड़कर लहुलुहान हो गई है। उसका स्त्रीत्व भंग कर दिया गया था। उसका शरीर मिट्टी से लथपथ था। उस पर काले-काले रक्त के चिह्न थे। उसे इस प्रकार फेंक दिया गया था कि जो भी उधर से गुज़रता उसकी दृष्टि उस पर अवश्य पड़ती।

उसने अर्ध स्वर से कहा, 'हे राम ?' उसकी आवाज़ से प्रतीत होता था कि वह बहुत भयभीत है।

उसने ये शब्द कहे तो उसे निरीक्षक और वाल्ट बर्नाबी फांद कर आते हुये दिखाई दिये। वे चौंक गये और उसकी ओर देखने लगे। फिर उन्होंने एक दूसरे की ओर दृष्टि डाली।

इस समय तक सभी को इस घटना का कुछ बोध हो गया था। बैन रोच कुछ समय तक सन्देश पहुँचाता रहा फिर उसने मन में कहा,

'यहां गर्मी बढ़े जा रही है। अब मैं किसी पथरीली कन्दरा में घुस जाऊँगा। आग मेरे ऊपर से गुज़र जायेगी। बस यही मेरा अन्त होगा।'

अब सैरोगोरडो बाकी रह गया था। पहरेदारिन से जो सन्देश प्राप्त हो रहे थे उनसे विदित होता था कि रेखा के सभी केन्द्र अपने प्राकृतिक बल के कारण सुरक्षित हैं। परन्तु पूर्व और पश्चिम में आग रेखा को पार कर गई थी। उदग्र ढलान से नीचे की ओर विशाल जिह्वा के समान आग दो स्थानों से आगे लपक रही थी। उसकी नोकें बड़े वेग से बढ़ रही थीं। चट्टान के समान ढलान पर उपज और भी कम थी। परन्तु हवा के उफान के कारण हर एक चीज़ समतल भूमि की अपेक्षा यहां दुगुनी और तिगुनी दूर तेज़ी से जा सकती थी। बार्ट को निरीक्षक

की आवाज़ सुनाई दी जो बहुत दूर प्रतीत होती थी। 'बार्ट, यह क्या है ?'

परन्तु शायद वह स्वयं बहुत दूर था। उसे मालूम था कि वह मुख्य कार्यालय में मेज़ के पास खड़ा है परन्तु उसे देवदार के दूरस्थ वृक्षों में जलती हुई ज्वाला की आवाज़ आ रही थी।

जहां बार्ट पहुँचा हुआ था वह वहां से धीरे-धीरे लौट आया। उसने तख्तों पर हाथ रख कर अपने आप को सम्भाला। वह मुख्य कार्यालय में थका-टूटा खड़ा था। परन्तु उसे थकावट की इतनी चिंता न थी जितनी आने वाली आपत्ति की।

झाड़ियों में कभी इधर कोई चीज़ भागती दिखाई दी कभी उधर। उसे लगा मानो वह पकड़ में आ गया है।

उसे अपनी आवाज़ सम्भली हुई महसूस हुई। वह कह रहा था, 'हां, हां, वाल्ट, मैं यहां हूँ। यह क्या है ?'

'बार्ट, क्या तुम यह न समझोगे कि तुम बहुत थक गये हो। तुम बहुत देर तक काम करते रहे हो।'

मैं कई बार इससे भी अधिक काम कर चुका हूँ। तुम्हें १९४४ की मैंडोसिनो की आग याद होगी।'

इस बार निरीक्षक बात कर रहा था, 'वह तुम्हारा अपना जिला न था। अब तुम चिन्तित हो।'

जब निरीक्षक बात करने लगा तो अन्दर से कुछ ऐसा उबाल उठा कि बार्ट में पुनः बल आ गया।

उसने सुदृढ़ शब्दों में कहा, 'हां। मुझे क्यों चिन्ता न हो ? मेरे लिए यह कोई लकड़ी का गोदाम नहीं। मैं यहां अग्नि अधिपुरुष हूँ। यदि आदमी घबरा न जाते तो वह रेखा काम दे जाती। इसका किसी को भी बोध नहीं हो सकता था।'

'बार्ट, तुम्हें इसके लिये कोई भी दोषी नहीं ठहरा रहा। न ही तुम पर कोई दोष लगाने जा रहा है।'

बार्ट ने उस लम्बे आदमी पर दृष्टि डाली जो उससे कहीं ऊंचा था। दृष्टि डालते ही उसके मन में उग्र भावनायें जाग्रत हो उठीं। निरीक्षक के अभी सशक्त होने के दिन थे, वह वृक्षों को लट्ठे समझता था, और आग का मुकाबला करने के लिए काग़ज़ पर हिसाब लगाता था। इसलिये बार्ट को इस नवयुवक से घृणा हो रही थी।

फिर उसने अपने आप को झंझोड़ा और नक्शे की ओर ध्यान दिया। वह अग्नि अधिपुरुष था। उसने कर्रेन क्रीक से ढलान के ज़रा ऊपर को एक रेखा के साथ उंगली घुमाई।

उसने कहा, 'हम नई रेखा वहां बनायेंगे।'

वाल्ट बर्नाबी ने कहा, 'बार्ट, यह रेखा तो आग के बहुत निकट होगी। क्या तुम्हारा विचार ऐसा नहीं है?'

'हो सकता है परन्तु कर्रेन क्रीक के साथ वह कुंज जो एक अति सुन्दर स्थान है बचाना होगा। यदि खड़े-खड़े मुंह न ताकते रहें तो हम इस रेखा की रक्षा कर सकते हैं। हमें मन में यह बात बिठानी होगी कि हम इसकी रक्षा कर सकते हैं।'

वाल्ट बर्नाबी ने कहा, 'यह संभव नहीं।'

निरीक्षक ने कहा, 'ठीक कहते हो।' उसके हाथ में कागज का एक टुकड़ा था। वह आंकड़ों से भरा था। उस पर आदमियों की संख्या, वाहन के साधन, रेखा तैयार करने आदि का ब्योरा लिखा था। उसके विपरीत अन्तर और आग के फैलने की गति का ब्यौरा था। कोई चमत्कार हो जाये तो और बात है नहीं तो जीत आग की ही होती दिखाई देती थी।

निरीक्षक ने कहा, 'बार्ट को यह बात बता देनी चाहिये।'

'इसका कोई लाभ नहीं।'

'आपका क्या अभिप्राय है?'

'आपको मेरा अभिप्राय मालूम है।'

'वाल्ट, मैं इसके विषय में अनुमान लगा सकता हूँ।'

'जब एक व्यक्ति कहने लगता है, यदि हम ज़रा सोचें तो सब कुछ कर सकते हैं, वह मानवीय शत्रु का मुकाबला कर सकता है परन्तु आग पर काबू नहीं पा सकता।'

'यह तो मेरा काम है।'

'आप इसे लिख कर दे दीजिये।

'नहीं-नहीं, मैं अपनी इच्छा से ऐसा नहीं कर सकता।'

जहां नेपथ्य में निरीक्षक और वाल्ट बात करने के लिये चले गये थे वह स्थान मुख्य कार्यालय से सौ फीट से अधिक की दूरी पर न था। बार्ट मेज की ओर पीठ किये उनकी ओर देख रहा था। उसके चेहरे से ऐसा प्रतीत होता था मानो वह किसी चीज़ की प्रतीक्षा कर रहा है। उस की दशा एक ऐसे जानवर के समान थी जो छुरी की या डंडे की प्रतीक्षा करता है।

उसने कहना आरम्भ किया, 'बार्ट, तुम्हें याद है कि तुम हार्ट क्रीक की आग के समय उपस्थित थे और तुम्हें बहुत कठिनाई का सामना करना पड़ा था। वाल्ट और मैं आपस में बातचीत करते रहे हैं। आप बहुत थक गये हैं। आप का क्या विचार है? यदि आप थोड़ा विश्राम करें तो बेहतर न होगा?'

बार्ट ने फीकी आवाज से कहा, 'आप का मतलब है कि आप मुझे अग्नि अधिपुरुष के पद से वंचित कर रहे हैं।'

'बार्ट, तुमने बहुत कठिनाई का सामना किया है।'

बार्ट की आंखों से आग बरस रही थी। बार्ट ने कहा, 'निरीक्षक आप को यह मुझे लिख कर देना होगा।'

'अच्छी बात। यदि तुम्हारी यही इच्छा है तो मैं लिखे देता हूँ।' निरीक्षक अब शान्त हो गया था। उसने काग़ज़ का एक पैड लिया और एक कार्बन पेपर उठाया। उसे काग़ज़ों के बीच लगाकर वह लिखने लगा।

'रेंज़र जौन बार्टले को इसी समय से इस आदेश के अनुसार अग्नि

अधिपुरुष के भावी कर्तव्यों से मुक्त किया जाता है स्पिटकैट नाम की आग को बुझाने में अब उसका कोई दायित्व नहीं।'

चट्टानों के बीच जहां दरार थे उनमें झाड़ियों से ढकी प्रत्येक उदग्र ढलान पर आग तेजी से बढ़ रही थी। उसका बढ़ाव आगे को था। कई बार किसी चट्टान के बीच में आ जाने से आग की दो भुजायें बन जाती थीं जो आगे चलकर मिल जाती थी। उनके बीच तकले के आकार का बहुत सा भाग बिना जला रह जाता था। दो कटावों का अग्र भाग अधिक चौड़ा न होता था। कई बार तो आग अलग अलग ही बढ़ती जाती थी और चट्टान के कटावों की सीध में इस प्रकार चलती थी जैसे कोई बांध टूट गया हो और पानी नीचे की ओर बहे जा रहा हो।

खंड ३ के खंडित मुख पर प्रत्येक शकल अधिपुरुष और कारुक अधिपुरुष अपनी सामर्थ के अनुसार आग का मुकाबला कर रहा था। एक स्थान पर दो अधिपुरुष और तीन अन्य व्यक्ति योधाओं के समान एक स्थानीय आग को दबाने की चेष्टा कर रहे थे। आखिर वे थक गये और हांपने लगे। इतने में आग भी बुझ गई। पर ज्यों ही उन्होंने मुड़ कर देखा एक और आग रेखा को पार कर आई और उनकी करी कराई पर पानी फिर गया। अन्य स्थान पर तीस आदमी खड़े आग को बढ़ता देख रहे थे। यदि वे चाहते तो उस पर काबू पा सकते थे।

धीरे धीरे पुनः अनुशासन स्थापित हो गया। गर्मी दबी तो बैन रोच कन्द्रा से बाहर आया और उसने अपना रेडियो सम्भाला। धुंआ छाया था परन्तु फिर भी सैरोगोरडो की पहरेदारिन ने बढ़ते हुए दोनों बिन्दुओं की गति का ब्यौरा तैयार कर दिया था। निरीक्षक अग्नि-शिविर से निकल कर तेज़ी से आगे बढ़ा। उसने रेडियो द्वारा कार्यालय को वास्तविक स्थिति से सूचित किया। शकल अधिपुरुषों ने सन्देश भेजे कि जो आदमी बाकी रह गये थे उन्हें इकट्ठा कर उन स्थानों पर लगा दिया है जहां आग आगे बढ़ आई थी।

लाग-बुक में केवल एक ही इन्दराज था। '२ : ११ निरीक्षक जोंज़ ने अग्नि अधिपुरुष का कार्य सम्हाल लिया है।' इसके अतिरिक्त कुछ भी न लिखा था।

निरीक्षक ने जल्दी-जल्दी सब काम नियोजित किया। इस आपत्ति-काल में उसने रात को काम करने वालों को दो घण्टे पहले ही काम पर लगा दिया। आशा थी कि वे आग की बग़लों को काबू में रखेंगे और नीचे की ओर तीव्रता से बढ़ती हुई जिह्वाओं को अधिक चौड़ी न होने देंगे। यदि वे इतना कुछ कर दें तो काफ़ी था। नीचे की ढलान पर आग को रोकने की कोई सम्भावना न थी, दर्रे के पेंदे पर पहुँचने पर भी आग को रोकना कठिन था। बस इतना ही हो सकता था कि ऊप-रली ढलान पर इसकी बग़लों को दबाया जाये और धीरे-धीरे इसे काबू में कर लिया जाये। या यह हो सकता था कि किसी मेड़ के शिखर के साथ-साथ एक सुदृढ़ रेखा तैयार की जाये।

उसने अपना सिर घुमाया और बेक्स क्रीक से आगे की उदग्र ढलान पर दृष्टि डाली। उसे आग का बढ़ता हुआ वास्तविक मुख दिखाई दिया। शिखर पर से और टीलों की रेखा के बीच से होकर आग वहां पहुँची थी। आग की ओर देख ही रहा था कि वह उसे ढलान पर से ढुलकती हुई प्रतीत हुई। शिविर अधिपुरुष ने आकर प्रश्न किया।

'क्या मैं इसे उखाड़ना शुरू कर दूँ?'

निरीक्षक ने आग पर एक और दृष्टि डाली और वह समय और फासिले का अनुमान लगाने लगा। उसने एक काग़ज़ पर एक मिनट तक जनसत्ता और रेखा तैयार करने की गति का हिसाब लगाया। ऐसा प्रतीत होता था कि वे शिविर के गिर्द रेखा तैयार कर उसकी रक्षा कर सकते हैं परन्तु इस प्रकार की चालों के लिये कई घण्टों की मेहनत की ज़रूरत थी और इसमें कुछ न कुछ जोखिम भी थी। हो सकता था इसमें हज़ारों रुपयों की और बहुत से आदमियों के जीवन की हानि हो जाये। शिविर को किसी अन्य स्थान पर ले जाने में भी समय और मेहनत की आव-

श्यकता थी। परन्तु इस उपाय में जोखिम न थी और यह काम भरोसे से किया जा सकता था।

उसने शिविर अधिपुरुष से कहा, 'हां, जाओ, उसे उखाड़ दो।'

'इडलहर्स्ट के गार्ड स्टेशन से इधर कोई भी समतल भूमि पर्याप्त चौड़ी नहीं है।'

'तो इसे गार्ड स्टेशन पर ही स्थापित कर दो।'

आदेश मिलते ही आदमी दौड़े आये। ट्रक वाहन पार्क से गरजते हुए निकले और पीछे हट कर अपने-अपने स्थान पर लग गये। सैकड़ों मन सामान जिसे अभी-अभी लाकर बड़ी सफ़ाई और श्रम से सजाया गया था पुनः उखेड़ दिया गया। वह लदने लगा।

एक इंजन चलने लगा और पहला ट्रक वाहन 'अधिपुरुष के पास से गुज़रता इडलहर्स्ट की सड़क पर नीचे की ओर चल पड़ा।

उसी समय हवा का एक झोंका संकीर्ण दर्रे की ओर चला और उससे धुएँ का घना गुबार ऊपर उठा। उसके पश्चात् वेक्स क्रीक के पास की ढलान से तेज़ी से धुंआ उठा। वह इसकी प्रत्याशा में थे। इसे देख कर उनका लहू जमने लगा। कोई सहायता के लिये पुकार रहा था। यह स्पष्ट था कि हवा एक चिंगारी को घाटी के पार ले गई है और इस ने सूखी पत्तियों को आग लगा दी है। हवा के कारण आग तेज़ी से ऊपर को बढ़ रही थी। सौभाग्यवश इस आग को दबाना सुगम था परन्तु इस प्रकार की और दर्जनों घटनाएँ होने की सम्भावना थी।

निरीक्षक दोनों खाड़ियों के संगम पर गया। वेक्स क्रीक के पार ही उसे झाड़ियों में ज्वाला उठती दिखाई दी। वह इतनी निकट थी कि उसके चेहरे को आग की गर्मी महसूस हो रही थी। पास ही तेज़ आग को बुझाने वाले पम्प की उत्तुङ्ग धार थी। घाटी की दूसरी ओर अनियन क्रीक के ऊपर पम्प से साफ़ पानी मेहराब के रूप में निकल रहा था। अनियन क्रीक की रेखा को सुरक्षित रखना कोई बड़ी बात न थी। क्योंकि

हवा लगभग दर्रे के नीचे की ओर जा रही थी और नदी दस फीट चौड़ी थी। आग के विपक्ष के पार्श्व के साथ-साथ आदमी बिखरे हुए थे।

उसने वेक्स क्रीक के ऊपर की ओर दृष्टि डाली। यहां की कहानी भिन्न थी। यहां एक छोटी सी नदी थी जिसमें टपक-टपक कर पानी आता था। नदी के दोनों ओर गहरा धुंआ उठ रहा था। यह आग चाहे स्थानीय अग्नि थी चाहे मुख्य अग्नि परन्तु यह झाड़ीदार घाटी को पार कर गई थी और ढलान पर ऊपर की ओर बढ़ रही थी। खण्ड अधि-पुरुष ने इस ओर से अपने आदमी शायद पहले ही निकाल लिए थे। शायद वह पश्चिम की ओर आग की बग़लें दबाने का प्रयास कर रहा था।

दिन प्रतिदिन आग एक एक-डग भरते मचान पर बैठी लड़की के निकटतर आती जाती थी। पहले-पहल उसे बारह मील की दूरी पर थोड़ा सा धुंआ दिखाई दिया था। फिर आग नौ मील और सात मील की दूरी पर रह गई। अब आग चार मील की दूरी पर पहाड़ के नीचे उसकी आंखों के सामने जल रही थी।

उसने दूरबीन उठाई। एक-एक अग्नि अलग-अलग दिखाई दे रही थी। एक ऊँचा ठूंठ अकस्मात चोटी तक जल उठा। पूर्वी हवा चल रही थी। आग उदग्र ढलान से होती हुई पेंदे तक पहुँच गई थी। अब कर्रन क्रीक के साथ-साथ आग की एक नोक पश्चिम की ओर बढ़ी आरही थी। सहसा वह प्रसन्न हो उठी। उसे ऐसा अनुभव हो रहा था जैसे अन्य व्यक्तियों के समान वह भी उस नाटक का एक पात्र है जो उसके सामने खेला जा रहा है। उसके मन में विचित्र प्रकार की भावनाएँ उठ रही थीं जैसे उसके हृदय के कोई पेंच ढीले पड़ गये हों अथवा कसे गए हों।

आज की शाम सड़क पर पहले से अधिक ट्रक चले आ रहे थे, मानो युद्ध क्षेत्र उसके निकटतर आ रहा था। वह अपने आपको इस युद्ध में भाग लेने वाले एक सैनिक के समान समझती थी। उसका पुराना भय और

उसकी पुरानी आतति अब जाती रही थी। उसकी भावनाओं की पुनः अभिव्यंजना हो रही थी और वह बहुत से साथियों के बीच विचर रही थी।

नया अग्नि शिविर पुराने अग्नि शिविर के समान ही प्रतीत होता था। अन्तर केवल इतना था कि इडलहर्स्ट गार्ड स्टेशन के मैदान पर बालूत के वृक्षों की बहुतायत थी। जो बिजली की तारें अनियन फ्लैट से जल्दी-जल्दी उतार ली गई थीं वे इडलहर्स्ट के स्थान पर पुनः लगा दी गई थीं। जनित्र काम करने लगा था।

मुख्य कार्यालय में बिजली की रोशनी में नक्शा नवीस उस क्षेत्र को नाप रहा था जो उस दिन विध्वंस हुआ था। उसने अपना रेखा चित्र तैयार किया और विभाजक उस से परिमाप को नापने लगा। रेखायें टेढ़ी-मेढ़ी थीं इसलिये क्षेत्र बहुत बढ़ गया था। घुमाओं का विचार छोड़कर भी यह क्षेत्र अच्छा खासा बीस मील था। इससे पहले दिन इसका माप केवल तेरह मील था।

पुर और छेद-चित्रों की सहायता से उसने क्षेत्रफल का अनुमान लगाया। उस दिन २७६५ एकड़ जंगल विध्वंस हुआ था। चौबीस घंटे में आग का क्षेत्र फिर दुगना हो गया था। कुल मिलाकर ६,००० एकड़ अर्थात् लगभग नौ वर्गमील जंगल जल चुका था।

दसवां दिन

खुश्क हवा चलते चार दिन हो गये थे। उस दिन आधी रात के पश्चात् भी स्पिटकैट चटक और भड़क रही थी। अब पहले से कहीं अधिक खतरा था। यदि उसकी आगे बढ़ी हुई भुजायें दक्षिण दिशा में फैल जायें और आगे जाकर आपस में मिल जायें तो आग उस कीमती जंगल को जो स्वे बैक रिज और सैरोगोरडो के बीच की लोठती हुई भूमि को ढांपे हुये था विध्वंस हो जायेगा। परन्तु यह भी संभव था कि पूर्वी हवा के चलने से आग पौडर क्रीक के जलोत्सारण के बीच के निम्नतल छेद्र को पार कर जाये। यदि हवा का रुख अचानक दक्षिण या पश्चिम

की ओर हो जाये तो यह और भी बुरा था। इस ओर रेखा कई मील लम्बी थी और उसकी रक्षा बहुत थोड़े आदमी कर रहे थे। यदि एक भी चिन्गारी उड़कर चली जाती तो आग किसी नई दिशा में ही चल पड़ती।

उत्ताप संचित हो रहा था। रेखा क्षण-क्षण लम्बी हुई जाती थी। दुर्घटनाओं की सम्भावना अधिक होती जाती थी। ख़तरा इस सीमा तक बढ़ गया था कि वह भूत के समान प्रतीत होता था।

मौसम के पूर्वानुमान को देखकर निरीक्षक को यही खुशी थी कि इसे तैयार करने में ईमानदारी से काम लिया गया था। यह पूर्वानुमान टैलीफून द्वारा सफ्फोक से आया था। पूर्वानुमान देने वाले ने यहां तक कह दिया था कि उसे पूर्ण ज्ञान नहीं। अगले चौबीस घंटे में स्थिति बिगड़ भी सकती थी और सवर भी सकती थी। निरीक्षक अग्नि अधिपुरुष का काम कर रहा था। इससे सब काम आसान हो गया था। उसे केवल घोर आपत्ति के लिये तैयारी करनी थी।

उसकी योजनायें पहले ही बन चुकी थीं। आग की रेखाओं में नई दरारें उत्पन्न हो गई थीं। उसने काम को तीन भागों में और आठ खण्डों में बांट दिया था। वह अपने आदमियों की नियुक्ति नये ढंग से कर रहा था। शिविर में तीन बसें दाखिल हुईं और आकर एक मिनट के लिये खड़ी हो गईं। वे आदमियों को विश्राम देने के लिये रुकी थीं। निरीक्षक आदमियों को देखने गया। झुटपुटा था। परन्तु जिस प्रकार वे बस से बाहर निकले और आकर खड़े हुये उसी से प्रतीत होता था कि वे अनुभवी लोग हैं।

'हाट-शाट' कारुक, लट्ठेहार और सफ्फोक के स्थानीय लोग उसने चुन लिये। उसे स्लग्गर ओ नील दिखाई दिया जिसके पीछे-पीछे उसके आदमी आ रहे थे। इस झुटपुटे में किसी ने पुकारा, 'हेलो स्लिम' यह सुनकर वह उछल पड़ा।

उसने इधर-उधर नज़र दौड़ाई तो उसे एक सांवला चेहरा दिखाई

दिया जिसकी आंखों की सफेदी खूब चमक रही थी। कौरपोरल के पीछे छतर सैनिकों का छोटा सा झुण्ड खड़ा था।

निरीक्षक ने कहा, 'सुनाओ, कौरपोरल, आपकी कैसे गुजरी?'

'बहुत बुरी नहीं। जब अकस्मात आग भड़क उठी तो हम भाग खड़े हुये। हमारी कमीजें जलते जलते बचीं। फिर हमने विलसन क्रीक की ओर की स्थानीय अग्नियों का मुकाबला किया। हमने आग को खाड़ी पार करने नहीं दिया। जब मैंने तुम्हें हवाई जहाज़ में देखा था तब मुझे यह मालूम न था कि तुम यहां के करता धरता हो।'

'यह कोई बात नहीं। मैं तो यह जानना चाहता हूं कि क्या तुम और तुम्हारे आदमी अधिक कठिनाइयां सहन करने को तैयार हैं?'

'हां हां, हम सबने आराम कर लिया है और हम आगे जाने को तैयार हैं।'

वे बातें कर रहे थे तो अन्य बहुत से लोग वहां आकर एकत्रित हो गये। (वह निरीक्षक है)। यह बात झुण्ड में एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक पहुँच गई थी। (अब वह अग्नि अधिपुरुष है)। लोग मुँह उठाये उसकी ओर देख रहे थे। निरीक्षक ने इन बहुत से चेहरों की ओर दृष्टि डाली।

उसने कहा, 'सुनो, कल हम उस रेखा को इसलिये गँवा बैठे कि कारुक भयभीत हो गये और भाग खड़े हुये।'

सबने कहा, 'धिक्कार है, धिक्कार है!'

'वे साधारण व्यक्ति थे और उन्होंने कभी आग न देखी थी। मैं चाहता हूँ कि तुम आग के मुख पर आओ और अपना कर्तव्य पालन करो।'

मानो इन शब्दों से वे लोग उत्तेजित हो उठे थे। किसी ने कहा, 'चलो चलें।'

'पौट्टर क्रीक को जो कटाव जाता है आग उसी ओर बढ़ी जा रही है वहां उसका अग्र भाग आधा मील चौड़ा है। हम चाहते हैं कि आग के

गिर्द रेखा तैयार करदी जाये जिससे वह वहीं जल कर भस्म हो जाये। वहां जाना बहुत कठिन है और ट्रैक्टर सहायक नहीं हो सकते। मुझे तुम नवयुवकों पर भरोसा है।'

उसने केवल इतना ही कहा। वह मुड़ा और मुख्य कार्यालय की ओर चल पड़ा। लोगों ने खुशी का एक धीमा सा नारा लगाया। उसने कौरपोरल को कहते सुना। 'बहुत अच्छा, स्लिम।' कई अन्य लोगों ने भी यही शब्द कहे।

भोर हो रही थी। दूर बारलो रेंजर स्टेशन पर बार्ट आखिर निश्चिंत होकर सो गया था। उसे निरीक्षक पर अब ज़रा क्रोध न था। निरीक्षक ने वही किया जो उसका कर्तव्य था। उसका अपना मन हिल गया था। यह क्या हो गया है? क्या वह वृद्ध हुआ जा रहा है? या इसका कारण यह है कि संसार में जिस चीज़ से उसे सबसे अधिक प्यार था वह चीज़ सब-की-सब आग की भेंट हो गई है? यह घटना पीड़ा दायक थी।

उसकी पत्नी ने उसके घावों पर पट्टी बांध दी थी। खरोंटों पर उसने प्रतिपूय छिड़क दिया था। उसके पश्चात् वह हाथ में पानी का गिलास और एक टिकिया लिये आई।

उसने कहा, 'इसे खालो।'

बार्ट ने उसे खा लिया परन्तु उसका कोई प्रभाव न पड़ा। शाम तक वह बिस्तर पर लेटे करवटें बदलता रहा। वह अग्नि अधिपुरुष बनने का इच्छुक न था, परन्तु कहीं न कहीं रेखा पर रहना चाहता था। उसकी पत्नी ने उसे एक और प्रावर दे दिया और उसे कुछ शान्ति हुई। वह अर्ध निन्द्रा में था। उसे फिर उसी युवा स्त्री की छाया दिखाई दी जिस का स्त्रीत्व हरण कर लिया गया था। उसका शरीर बुरी तरह घायल था और उसमें से रक्त बह रहा था। उसकी सूरत भयानक प्रतीत होती थी और वह धूप में लेटी पड़ी थी। फिर उसे कोई चीज़ बच निकलने की चेष्टा में इधर-उधर भागती दिखाई दी।

आखिर इस दृश्य की तेज़ी मन्द हुई। उसे ऊंघ आने लगी। पहले

पहल झटके से उसकी आंख खुल जाती परन्तु थोड़ी देर बाद वह गहरी नींद सो गया। यह भयानक दृश्य जिसमें स्वप्न का लेश था अन्ततः लोप हो गया।

भोर हुई तो वह आखिर गहरी नींद में था। उसके सोये-सोये उन घटनाओं का वास्तविक सूत्रपात हुआ जिन्हें उसने चिन्ह रूप में स्वप्न अवस्था में देखा था।

आग करॅन क्रीक को पार कर गई। इस प्रदेश में जंगल से ढकी तंग घाटियां थीं। वे सब नष्ट हो गईं। जैसे एक पंजा आगे बढ़ता है वैसे ही आग ने उस 'कुंज' को आ दबोचा।

रात भर यह कुंज आग के बीच ऐसे रहा था जैसे युद्ध के बीच कोई निष्पेक्ष देश शान्त रहता है। अन्य रातों के समान आज रात भी मृगी इधर उधर झाड़ियों को चरती हुई घूम रही थी और शावक उसके पीछे-पीछे जा रहा था। कभी-कभी कोई तेज़ आवाज़ आती। आग की चमक तीव्र हो जाती या हवा का कोई झोंका धुएँ की दुर्गन्ध ले आता तो वह व्याकुल होकर सिर उठाये देखने लगती। कुंज के इर्द गिर्द बहुत से जानवर इकट्ठे हो गये थे जो पहले वहां न होते थे। झाड़ियों में अधिक खरखोश घूम रहे थे। एक कून कुंज से गुज़र कर दूसरी ओर के जंगल में चला गया। मस्त और झूमती हुई चाल से चलता हुआ एक मिन्क नदी के साथ-साथ आगया। उल्लू भी कहीं अधिक संख्या में बोल रहे थे।

इस विघ्न का प्रभाव मृगी पर भी पड़ा। उसे अनुभव न था। न ही उसमें इतनी शक्ति थी कि वह घटनाओं को देख कर उन से कोई व्यापक धारणा बना सके कि आग इन जानवरों को क्यों इधर खदेड़े लिये आती है। शिकारियों के झुंड भी उन्हें इस प्रकार न खदेड़ सकते थे। भोर हुई तो हवा के उठते हुए झोंके आग को निकटतर ले आये।

मृगी घबराई हुई इधर-उधर देखने लगी। वह खड़ी हिचकिचा रही थी। उसी समय उसकी आंखों के सामने झाड़ियों का एक झुंड धायें

धायें करके जलने लगा और पहली बार कुंज में धुआं छा गया। मृगी घबरा गई। एक क्षण के लिये वह अपने शावक को भूल गई। उसने ऐंजेलीस को पार किया। वह नदी को फांद गई और कलांचे भरती हुई दूसरी ओर की ढलान पर चढ़ गई। शावक पीछे-पीछे चलता गया परन्तु कुछ दूर जाकर उसकी माता की अन्टी सी पूंछ उसकी आंखों से ओझल हो गई। वह भी घबराया हुआ था इसलिये वह किसी अन्य दिशा में चला गया।

ढलान पर आधे रास्ते जाकर मृगी को विचार आया कि शावक उसके पीछे-पीछे नहीं है। कुछ देर वह अनिश्चित रूप से पांव मारती रही। फिर ठहर कर आग की ओर ताकने लगी और अन्ततः वापिस पहाड़ी से नीचे उतर गई। नदी पर आकर वह रांभने लगी। उसकी घबराहट बढ़ रही थी। घबराहट में ही उसने नदी पार की, ऐंजेलीस को पार किया और उसी स्थान पर आगई जहां से वह चली थी। वहां भी उसे शावक दिखाई न दिया। उसने कुछ दूर तक चारों ओर शावक की खोज की। वह साथ-साथ रांभती भी जाती थी।

मृगी वहीं मंडरा रही थी कि दूसरी ओर की ढलान पर आग की एक भुजा जा पहुँची और इस प्रकार आग ने मृगी के गिर्द एक घेरा डाल लिया। उसके पास ही एक झाड़ी जिसने उस स्थान को घेरा हुआ था जलने लगी। इस समय तक कुंज को आग ने चारों ओर से घेर लिया था और उत्ताप असहनीय हो गया था। मृगी कुछ देर पानी में खड़ी हांपती रही। फिर एक चिंगारी उसकी पीठ पर आकर गिरी। उसे बहुत तेज पीड़ा हुई। बालों के जलने की गंध भी आने लगी। इससे भयभीत होकर वह भाग खड़ी हुई। उसके सामने आग एक दीवार के समान खड़ी थी। पीछे भी आग उसकी ओर बढ़े चली आ रही थी। उसने एक उग्र कलांच लगाई और वह ज्वाला में कूद पड़ी।

देवदार के छोटे-छोटे वृक्षों के जलने से आग इतनी दहक गई कि वह बिल्कुल सफेद दिखाई देती थी। वह ऊपर उठी और वयस्क वृक्षों

के शिखरों पर जा पहुँची। अकस्मात एक चिपमक के कराहने की आवाज़ आई जो जल्दी ही ठंडा हो गया। उत्ताप इतना था कि मिंक ने अपनी नाक भी पानी में डुबा दी। एक मिनट से कुछ अधिक काल बीता होगा कि उत्ताप कम होगया। आग की सफेद चमक ने पीला रंग धारण कर लिया।

कुंज पूर्णरूप से नष्ट हो गया था। उसने उग्र रूप धारण कर लिया था और वहां मृत्यु और कुरूपता छाई हुई थी। सरिता के तल से मिंक ने सांस छोड़ी जो बुलबुलों के रूप में प्रगट हुई। उसने बड़ी सावधानी से सिर उठाया और नथने पानी से बाहर कर गहरी सांस ली। वह और ट्राऊट मछली दोनों जीवित रह गये थे।

मेढ़ के शिखर पर पहुँच कर उसने काली घोड़ी की बागें खींच लीं। उसके पांव के नीचे के दर्रे से और पूर्व दिशा में गहरे धुएँ का स्तम्भ अब भी वैसे ही उठ रहा था। उसे यह देख कर प्रसन्नता हुई कि उसका अग्र भाग दोनों मेढ़ों के बीच सीमित प्रतीत होता था। उसकी योजना सफल हो रही थी।

निरीक्षक ने अपने रेडियो वाले से कहा 'चलो' उसके पश्चात् दोनों मेढ़ के साथ-साथ नीचे उतरने लगे। वहां से ट्रैक्टर केवल एक बार गुजरा था। फिर भी पगडंडी पर घोड़े आसानी से चल सकते थे। उन्हें जो पहले व्यक्ति दिखाई दिये वे 'हाट-शाट' कारुक थे।

उन्होंने निरीक्षक का अभिवादन किया। उनके शब्द खुशी का नाद प्रतीत होते थे। वे इस घड़ी की सद्यस्कता को समझते थे और अपना कर्तव्य पालन करना चाहते थे। कारुक अधिपुरुष खीसता हुआ आया।

उसने कहा, 'आपके आदेश के अनुसार हमने आग को उस मैदान में बढ़ने से रोक दिया है और हम उसे मेढ़ की ओर ले गये हैं। इसमें हमारा, रंजित लड़कों का और अन्य लोगों का हाथ है।

'बहुत खूब।'

'क्या हम आज इस पर काबू पा सकेंगे?'

निरीक्षक एक क्षण चुप रहा। सहसा पहाड़ पर ट्रकों, ट्रैक्टरों और आरों की गर्जन सुनाई दी। उसे यह भी विचार आया कि वहां कोई पम्प भी काम कर रहा है।

उसने कहा, 'ऐसा प्रतीत होता है कि आग पर काबू पा लेंगे। हमारे पास बहुत सी मशीनें और बहुत से आदमी हैं। परन्तु तुम जानते हो कि महान अग्नि क्या होती है।'

आगे छाता सैनिक काम कर रहे थे। उन्होंने पुकार कर कहा, 'हेलो-स्लिम।' उससे आगे स्लग्गर ओ नील के आदमी थे और फिर वार्लो का आग बुझाने वाला कारुक।

थोड़ा आगे एक ट्रैक्टर काम कर रहा था। उसके चालक की गर्दन मोटी थी और उसका चेहरा धूल से मृत्यु के समान धूसर दिखाई देता था उसकी आंखों की सफेदी उग्र रूप से लोठती प्रतीत होती थी। उसने एक तीस फीट ऊंचे चीड़ के वृक्ष को काटना शुरू किया और उसे गिरा दिया। फिर प्रभावशाली प्रहार करने के लिये वह पीछे की ओर हटा। ट्रैक्टर ज़रा नीचे होकर गया और उसने जड़ों समेत वृक्ष को एक ओर हटा दिया। शक्ति से चलने वाले आरे की आवाज़ आनी अकस्मात बन्द हो गई और दूर से धीमी-धीमी आवाज़ आई, 'काष्ठ' उसके पश्चात् एक धड़ाका सुनाई दिया।

शक्ति से चलनेवाले आधा दर्जन आरे काम कर रहे थे। वे ठूंठों को तिनकों के समान गिरा रहे थे। इस बार उसने आग को जलने के लिये पर्याप्त स्थान दिया था। वह किसी हालत में रेखा को गंवाना न चाहता था। जो सावधानी ली जा सकती थी वह उसने ली थी।

जहां मेढ़ नीचे को ढुलकती थी वहां उसे दृश्य अधिक स्पष्ट दिखाई दिया। स्वेवैक की उत्तरी छोर से कोई धुंआ उठता नज़र न आया। इस बात से उसे कुछ सन्तोष हुआ। अनियन फ्लैट के शिविर की भूमि के भीतर से आग की एक भुजा गुज़र गई थी। उसकी बग़लों को रात-

रात में ही दबोच लिया गया था और उस पर काबू पा लिया गया था। अब वह रेखा के भीतर सीमित थी और अच्छी तरह जल-बुझ चुकी थी। निकटतर, उसके पांव के नीचे उस लम्बे दर्रे में जो सैरोगोरडो की पूर्वी ढलान में बेक्स क्रीक ने बनाया था मुख्य अग्नि अभी भी एक मील चौड़े वक्र मुख पर जल रही थी। हवा दर्रे से घूम-घूम कर उठ रही थी। आग का अगला सिरा नदी के साथ-साथ बहुत दूर चला गया था। वह तीव्र गति से बढ़ रहा था। परन्तु देखें आग बढ़कर कहां जाती है। उसने रात को अपने अति उत्तम कारुकों को काम में जोत दिया था। उन्होंने आग को कटाव और पौट-टर क्रीक के जलोत्सारण की ओर बढ़ने से रोक दिया था। आग का यह रुख बहुत ही खतरनाक था। अब आग केवल बेक्स क्रीक के दर्रे में जल रही थी। वह दो तीच्ण मेढ़ों के बीच सीमित थी। अब मेढ़ों के साथ-साथ उसकी बग़लों को दबोचने का और सैरोगोरडो के हमवार चट्टानदार और अल्पवनीय शिखर के साथ-साथ इसके बढ़ाव को रोकने का काम था। इसका अभिप्राय यह था कि दो या तीन वर्गमील के कीमती जंगलों को विध्वंस कर दिया जाय। उसने इस बलिदान का दायित्व अपने ऊपर लिया था। इस योजना में सबसे कम जोखिम थी।

जले हुए क्षेत्र का परिमाप अब पच्चीस मील से अधिक था। बहुत सी अग्नि रेखा जल चुकी थी और शीतल प्रतीत होती थी परन्तु अब भी उस पर निरीक्षण के लिये आदमी नियुक्त थे। वह न चाहता था कि कोई भी दुर्घटना हो। आग की तेज़ी बहुत देर हुए कम हो गई थी फिर भी काफी हिस्सा ऐसा था जिसमें आग लगने का डर था। गिरे हुए वृक्षों के एक दूसरे पर पड़े हुए तनों से सूखे लट्ठों से और ठूंठों के फटे हुए शिखरों से अब भी धुंआ निकल रहा था। कहीं-कहीं आग भी दृष्टिगोचर होती थी।

शकल अग्निपुरुषों ने इन खतरों के विरुद्ध कमर कस रखी थी। उन्होंने ठूंठों को गिराने के लिये वृक्ष गिराने वाले कारुक नियुक्त कर दिये

थे । सफाई करने वाले कारुक जलते हुये ठूंठों को अलग-अलग करने में लगे थे । इसका अभिप्राय यह था कि ठूंठों को हवा लगती रहे और वे जल कर भस्म हो जायें ।

अग्नि रेखा के बीच के बिना जले भाग भी खतरे का कारण थे । जलती हुई आग में उसके दहकने से हवा की रवें पैदा हो जाती हैं जिसके कारण सभी कुछ जो आग की लपेट में आता है विध्वंस नहीं हो जाता । महान् अग्नियों में ऐसा ही होता है । इस आग में भी बहुत से बिना जले छोटे-छोटे कई टापू रह गये थे ।

रिवर्स रिज के पश्चिमी सिरे पर जो रेखा थी उसके निकट भी इस प्रकार का एक छोटा सा टापू रह गया था जिसमें प्रायः झाड़ियां उगी थीं । यह खतरे का कारण था । वह किसी समय भी हवा के झोंके से भड़क कर खतरनाक सिद्ध हो सकता था ।

इसलिये एक कारुक जाकर उसे जलाने लगा । भूमि पर पड़े पत्ते जल्दी ही जलने लगे । इस बात का किसी को भय न था कि चिंगारियां रेखा के उस पार चली जायेंगी और दूसरी ओर जाकर स्थानीय अग्नि उत्पन्न कर देंगी ।

वहां किसी झाड़ी में एक ख़रगोश छिपा बैठा था । पहले दिन वह बहुत डर गया था । परन्तु आग उस स्थान से गुज़र गई जहां वह छिपा बैठा था । उसने अपने लिये घास-फूस और मिट्टी की तह के नीचे एक सूराख बना लिया था जिसमें घुस कर वह उत्ताप से बच रहा था । परन्तु आज शोले उसके पास ही उठ रहे थे और उनकी गर्मी से वह व्याकुल हो रहा था । उसकी टांगों के पुट्ठे सुकड़ने लगे उसने सीधे सामने की ओर छलांग लगाई । वह जलती हुई घास-फूस से गुज़र रहा था कि उसके बालों को आग लग गई । वह दूसरी ओर निकल आया परन्तु उसका रूप ऐसा था जैसे चलती हुई आग की धुआंसती हुई कोई गेंद हो । इस जलते हुये और घबराये हुये ख़रगोश को झाड़ी में से निकल कर रेखा के पार जाने में एक सैकिन्ड लगा होगा । कारुकों में से

किसी ने उसकी इस तीव्र गति को न देखा था। उनका ध्यान झाड़ियों को जलाने में लगा था। इस आग का धुआं दब गया तो कारुक अधिपुरुष को आभास हुआ कि धुआं अभी भी उठ रहा है।

कारुक अधिपुरुष ने चिल्ला कर कहा, "हे राम! आग रेखा को पा कर गई है।" उसने सहायता के लिये एक ऊँचा नाद लगाया।

इस आग पर काबू पाने के लिये वह अपने आदमियों को लेकर गया परन्तु आग पहले ही मेड़ के साथ-साथ बढ चली थी। वह तेज़ी से बढ़ी जा रही थी और उस पर एक कारुक काबू न पा सकता था।

डाबे हैलीडे आकाश की ओर ताक रहा था और हवा का स्पर्शन कर रहा था। किसी बात का निश्चय करना कठिन था। बैरोमीटर बाल भर नीचे उतरा था। हवा चलेगी या वर्षा होगी, यह अनुमान का ही विषय था।

परन्तु उसके मन में उत्सुकता थी कि वह लाल रंग की जीप में बैठ जाये और सैरोगोरडो का रुख करे। हवा की रवों की निरीक्षण करने के लिये वह स्थान बहुत अच्छा था।

उसने अपने नायब से कहा, 'सैरोगोरडो के लिये रवाना हो रहा हूँ। यदि कोई महत्वपूर्ण सन्देश आये तो मुझे बुलवा लेना।

नायब ने कहा, 'सैरोगोरडो के परित्याग की तैयारियां हो रही हैं। नई अग्नि रेखा बिल्कुल उसके नीचे से जाती है। वहां तो बहुत उत्ताप होगा।'

डाबे के मन में एक भय उत्पन्न हुआ जिसका सम्बन्ध हवा की रवों से न था।

उसने कहा, 'अच्छी बात। मैं अपने निकटतम रेडियो द्वारा प्रेषक को सूचना भेज दूँगा।'

वह बहुत जल्दी रवाना हो गया। परन्तु जब वह जीप में सवार हो रहा था उसने आकाश की ओर दृष्टि डाली। हवा पहले के समान ही गरम और खुश्क थी। उसमें चमक थी और वह बेचैन किये देती

थी। इसमें से कुछ दुर्गन्ध भी आरही थी। ऊपर धुएं ने लगभग समस्त आकाश को ढांप रखा था। परन्तु धुएँ के किनारे पर पश्चिम और दक्षिण की ओर बादल दिखाई दिया जिसका आकार घोड़े की पूँछ के समान था। उसने मन में कहा, 'बहुत ऊँचा है। हो सकता है वर्षा आजाये और हो सकता है हवा चले।'

वह जीप में बैठ गया और इंजन चलाकर फिर आकाश की ओर देखने लगा। अब उसे बादल कुछ बड़ा और ठोस प्रतीत हुआ।

'दीर्घ लघु, दीर्घ।' उसने घण्टी बजाई और वह प्रतीक्षा करने लगी। 'दीर्घ, लघु, दीर्घ।' उसके कान से लगा हुआ रिसीवर मृतक के समान नीरव था। उस ने उसे रख दिया और फिर दोबारा घण्टी नहीं बजाई। (अच्छा, यह बात है) टेलीफोन की लाईन टूट गई थी। शायद वह इस ढलान से नीचे की ओर कहीं जल गई थी। रेडियो अब भी काम कर रहा था। परन्तु उसे विशेष प्रकार के एकान्त का आभास हुआ। आग निकटतर आती जाती थी।

मचान से देखने पर सब जगह आग ही आग दिखाई देती थी। वह कभी-कभी पैड़ पर जाती और वापिस आ जाती। अधिकतर समय वह अन्दर ही बैठी रहती। पैड़ पर लगातार राख और अध-जली पत्तियां आकर गिर रही थीं। कभी-कभी गरम राख भी आ पड़ती। उसके देखते-देखते छोटे वृक्षों से आग बीच के वृक्षों पर पहुँच गई। उनके शिखरों से ऊँचे-ऊँचे शोले निकलने लगे। पुराने वृक्ष ऐसे खड़े थे जैसे वे आग के समुद्र में चल रहे हों। उनकी सूखी टहनियां जल जल कर भूमि पर गिर रही थीं।

उसे आदेश मिल चुका था कि वह जब चाहे मचान छोड़ कर जा सकती है। उसे ज़रा भी सूनापन महसूस न होता था। मचान से रेखा निर्माण की समस्त क्रिया साफ़ दिखाई देती थी।

वह पैड़ पर खड़ी थी। सहसा उसे तेज़ गर्मी का आभास हुआ जो धूप की गर्मी न थी।

वह खांसती हुई अंदर चली गई। अन्दर इतनी गर्मी न थी परन्तु पूर्वी खिड़कियां छूने से गरम लगती थीं।

वह सोचने लगी कि उसे वहां से चला जाना चाहिये। संभव है आग तेज़ी से बढ़ आये या शिखर अग्नि बन जाये या ज्वाला सीढ़ियों को अपनी लपेट में ले ले उस सूरत में न जाने उत्ताप कहां तक पहुँच जाये। परन्तु उसे भाग जाना अच्छा न लगता था। अकस्मात उसे डाबे का विचार आया। वह उस से पूछना चाहती थी कि क्या करे।

सैरो गोरडो की समतल चोटी पर कुछ बड़े बड़े पत्थर बाहर को निकले खड़े थे। मिरीक्षक ने इन्हीं में क्षेत्र मुख्य कार्यालय स्थापित किया था। रेखा इन पत्थरों के सिरों के साथ साथ जाती थी। इस प्रकार ये पत्थर नैसर्गिक प्रतिरक्षा रेखा का काम देते थे। उसने दक्षिण की ओर दृष्टि डाली। रेखा के साथ साथ आधे मील की दूरी पर बुर्ज खड़ा था। उसे विचार था कि लड़की अब तक वहां से चली गई होगी। फिर उसने पश्चिम दिशा में नज़र डाली। उसे पर्वत शिखर की उभरी हुई ढलान दिखाई दी जिस पर घना जंगल था। यह ढलान पौटटर क्रीक की दरार तक जाती थी। उत्तर को ओर धुआं छाया था। रिवर्स रिज पर रेखा के पार जो स्थानीय अग्नि उत्पन्न हुई थी, उस से धुएँ का एक स्तम्भ उठ रहा था। यह अग्नि किस प्रकार उत्पन्न हुई इसका किसी को बोध न था। यह आग अधिक खतरनाक न थी यद्यपि इसके कारण सौ एकड़ जंगल के विध्वंस होने का भय था।

पूर्व की ओर आग ही आग और धुआं ही धुआं दिखाई देता था। आग निकट आ गई थी और रेखा के साथ-साथ भड़क रही थी। शक्ति द्वारा चलने वाला एक आरा अभी काम कर रहा था पर ठूंठ सब कट चुके थे। उसे रेखा का एक मील लम्बा टुकड़ा दिखाई दिया। दोनों ओर रेखा बहुत साफ़ थी। किनारों के साथ-साथ उसे बहुत सफ़ाई से छांटा गया था। वह ऐसे प्रतीत होती थी जैसे किसी बाग़ की साफ़ की हुई

रक्षित हो। सब काम समय से पूर्व ही समाप्त हो चुका था। खंड अधि-पुरुष प्रत्याग्नियां जलाने की तैयारी कर रहे थे।

मचान पर बैठे-बैठे उसे ऐसा प्रतीत हुआ मानो कोई नई प्रकार की आवाज़ आ रही है। वह इतनी भारी न थी जितनी इंजनों की गर्जन या ठूंठों के गिरने का धमाका होता है। यह धीमी आवाज़ थी और अनिष्ट की सूचक थी। यह सभी ओर छाई जारही थी। यह शोलों के चटकने और फुंकारने की आवाज़ थी।

उसे विचार आया कि यहां से भाग जाना ही बेहतर है। कांच की दीवारों के भीतर भी उसे गर्मी महसूस हो रही थी। उसके सिर के ऊपर गहरा धुआं मंडरा रहा था। कभी-कभी वह पेड़ के साथ आकर कुंडलियां बनाने लगता।

नीचे की ओर दृष्टि डालने पर उसे रेखा के साथ धुआं दिखाई दिया। आदमी अब रेखांकित कोण में आग लगाने लगे।

अपने उत्तुंग आसन से वह सम्मोहित हुई देख रही थी। परन्तु एका-एक धुआं नीचे की ओर आगया और उसने समस्त बुर्ज को घेर लिया। ताज़ा हवा की अपेक्षा बुर्ज के अन्दर धुआं आरहा था। वह डर गई परन्तु उसे यह न भाता था कि वह नीचे की ओर भाग चले और धुएँ में घिर जाये। वह अभी असमंजस में ही थी कि धुआं फिर ऊपर उठ गया और ख़तरा टल गया।

हवा में अब ताज़गी महसूस होने लगी। एक महान अग्नि जल रही थी। परन्तु इसका क्या भरोसा था कि कहीं नई आग न लग जाये। पहरेदारिन यही देखने के लिए तो होती है।

टेलीफोन की लाइन बेजान हो चुकी थी। परन्तु वह रेडियो द्वारा या पेड़ से चिल्लाकर ही सन्देश दे सकती थी।

शकल अधिपुरुषों ने अपने बहुत से कारुक फैला दिये थे कि वे स्था-नीय अग्नियों का ध्यान करें। रेखा के साथ साथ निरीक्षणार्थ कम आद-मियों की आवश्यकता थी। अब तक प्रत्याग्नियां तीस फीट अन्दर की

ओर पहुँच गई थीं। कहीं-कहीं दुर्बल स्थानों को छोड़ कर वे आपस में मिलकर बढ़ रही थीं। आशा थी कि थोड़ी देर में ही वे मुख्य अग्नि के उलट-वायु-प्रवाह के प्रभाव में आ जायेंगी और उसकी ओर तेज़ी से उड़ेंगी। वे धायें-धायें करती उससे जा टकरायेंगी।

डावे बहुत तेज़ी से गाड़ी चलाता आया था। उसे सद्यस्कता और घबराहट का आभास था। इसमें सन्देह नहीं था कि जूडिथ बुर्ज से बाहर चली गई है परन्तु वह इसके विषय में निश्चय करना चाहता था।

वह अन्तिम मोड़ पर मुड़ कर पहाड़ के शिखर पर आ पहुँचा। यहां पहुँच कर उसे एक भव्य दृश्य दिखाई दिया। प्रत्याग्नियां मुख्य अग्नि से जा टकराई थीं। जो कुछ भी उनकी लपेट में आया विध्वंस हो गया। ज्वाला एक ऊंची और ठोस दीवार के रूप में उठ रही थी। बुर्ज पर उसकी दृष्टि पड़ी। उस बुर्ज को धुएँ ने घेरा हुआ था। उसे शीशे में से हिलते हुए एक पीले रुमाल की झलक दिखाई दी। अकस्मात उसे विचार आया। 'मूर्ख कहीं की! जब यहां से निकल भागने में कुशल थी उसे उस समय भाग जाना चाहिए था।' तब उसे यह सोच कर बहुत खुशी हुई कि वह स्वयं उसे बचाने या कम से कम इसका प्रयास करने आया है।

वह जीप से उतरा और बुर्ज के पेंदे की ओर बढ़ा। ऊंचे-ऊंचे शोले उठ रहे थे और उनका उत्ताप उस पर तेज़ी से पड़ रहा था। परन्तु हवा अच्छी थी और आग की ओर खिंची आरही थी। वह दौड़ा जा रहा था। दौड़ते-दौड़ते ही उसने संभावनाओं का हिसाब लगाया। बुर्ज का ऊपरला आधा भाग गहरे धुएँ में घिरा था। उसने अपना जीवन हवा के अध्ययन में व्यतीत किया था, वह इस बात का अध्ययन करता रहा था कि हवा का मौसम पर क्या प्रभाव पड़ता है। वह जानता था कि धुएँ के गुबार के किनारे-किनारे उठती हुई ताज़ा हवा की थैलियां होती हैं। आग जिस ताज़ा हवा को अपनी ओर चूसती है उसमें से कुछ ऊपर चली जाती है। इसमें चलते हुए एक सावधानी रखनी होती है। धुएँ में दम साधे रखने से है और ताज़ा हवा की थैलियों के पास पहुँच कर अधिक हवा अन्दर

खीचने से आदमी बच सकता है। बुर्ज के शिखर तक पहुँचने के लिए दस-दस फीट ऊंची छः सीढ़ियां थीं। पहली दो सीढ़ियों पर चढ़ना सुगम था। उसके पश्चात् धुआं बहुत निकट होता गया। उसने एक गहरी सांस ली और आंखें बन्द किये-किये एक दम आठ पग पार कर लिये। उसे फिर ताज़ा हवा दिखाई दी। धुएँ के घिर आने से पूर्व उसने फिर एक गहरी सांस ली। इस प्रकार वह चार सीढ़ियां पार कर गया। दो सीढ़ियां अभी बाकी थीं।

लड़खड़ाते हुये और यह समझते हुये कि वह क्षीण होने लगा है वह आखिर पैड़ तक जा पहुँचा। उसने धक्का देकर द्वार खोल दिया। धुएँ को रोकने के लिये उसने अन्दर जाते ही द्वार फिर बन्द कर दिया।

वह भूमि पर गिरा ही चाहता था परन्तु अन्दर की हवा कुछ बेहतर थी। उसके सिर की धुंध दूर हो गई।

उसने केवल इतना ही कहा, 'मूर्ख कहीं की!' फिर वह स्वभावतः उसके कंधे पर सिर रख कर सुबकने लगी। उसने उसे अंक में लेकर उसकी पीठ को थपकना शुरू किया।

एक क्षण बीता होगा, अकस्मात उसे विचार आया कि कांच के इस डिब्बे में बहुत गर्मी है। चारों ओर धुआं छाया था। गर्मी के कारण तड़ाक से खिड़की का एक शीशा टूट गया।

डावे ने उसे द्वार की ओर धकेलते हुये कहा, 'चलो।'

द्वार खोलते ही धुआं अन्दर घुस आया।

'गहरी सांस लेकर दम साध लो।'

वह अभी भी उसकी अंक में थी और दम साधे थी। पहली सीढ़ी पर से वे आसानी से दौड़ते हुए उतर आये। दूसरी सीढ़ी के मध्य में पहुँचकर चलने में कठिनाइ अनुभव होने लगी। डावे को हवा का रुख बदलता दिखाई दिया। उसने अपनी भुजा के दबाव से उसे रोक लिया। सहसा अच्छी हवा आने लगी थी। उसने चैन की सांस ली। हवा ठण्डी थी और उसमें कुछ नमी भी थी।

उसने भुजा का दबाव ढीला कर दिया परन्तु भुजा उसकी कमर में डाले-डाले कहा, 'ज़रा विश्राम कर लो।'

'मैं आसानी से नीचे उतर सकती हूँ।'

'कोई जल्दी नहीं, हवा का रुख दक्षिण की ओर है। जब हवा इस रुख चलने लगती है और वैसी होती है जैसी वह इस समय है तो फिर उसका रुख नहीं बदलता।'

लड़की ने उसकी ओर आँखें उठाईं और उसके शरीर की मृदुल चाप डावे के निकटतर आ गई।

हलकी सी मीठी मुस्कान के साथ बोली, 'मौसम के विषय पर भाषण देने के लिये यह बहुत ही अनौखा समय और विचित्र स्थान है।'

डावे झेंप गया और उसका चेहरा सुर्ख हो गया।

दोनों अग्नियों की आपस में टक्कर हुई और एक भारी गर्जन सुनाई दी। निरीक्षक ने घड़ी देखी। यह २·४९ का समय था। वह पत्थरों की आड़ में नीचे झुका बैठा था। उसे हवा का रुख बदलता दिखाई दिया। रुख बदलते ही ताज़ा हवा आने लगी। झोंके के कारण सौ फीट की दूरी पर चीड़ का एक महान वृक्ष प्रज्वलित हो उठा। उस से बहुत ऊँचा शोला बुलन्द हुआ।

कहीं-कहीं स्थानीय अग्नियाँ प्रकट होती थीं परन्तु एक, दो या तीन आदमी एक-एक अग्नि पर बेलचा और गैंती लेकर पिल पड़ते और उसे दबाने का प्रयास करते।

मेढ़ के खुश्क शिखर पर वृक्ष इस प्रकार छिदरे हुए थे कि उनमें शिखर अग्नि उत्पन्न हो ही न सकती थी। केवल कहीं-कहीं ऐसा न था। पत्थरों के उपर से सिर उठाकर निरीक्षक ने देखा तो मालूम हुआ कि वृक्ष गिराने वालों ने अपना काम समाप्त कर दिया है। हरे वृक्ष यदि आग पकड़ते भी थे तो एक मिनट में जलकर समाप्त हो जाते थे। उनकी पत्तियों और छोटी-छोटी टहनियों का तेल समाप्त हो जाने के पश्चात् आग उन पर न ठहर सकती थी।

ध्यानपूर्वक देखने से निरीक्षक को मालूम हुआ कि ज्वाला एक दीवार के समान उठ रही है। यह ज्वाला झूमती थी, बढ़ती थी और हेठी हो जाती थी। कभी यह नोक का रूप धारण कर लेती थी और कभी गुच्छों का। वह बिल्कुल सफेद थी और गरज रही थी।

जब दो अग्नियाँ मिलीं तो ज्वाला बड़ी तेज़ी से जलने लगी परन्तु उसकी ऊँचाई तीस फीट से अधिक न थी। उससे लाखों चिनगारियाँ उठती थीं परन्तु वे उस स्थान पर आकर गिरती थीं जिसे प्रत्याग्नि पहले ही जला चुकी थी। हवा का वेग बढ़ रहा था और उसके झोंके उठ रहे थे। वह देख रहा था कि दायें या बायें किसी ओर से हल्ला तो नहीं होता। क्योंकि हल्ले का अभिप्राय यह हो सकता था कि घोर आपत्ति आ पड़ी है। यह ऐसा युद्ध था जिसमें हार मानने का प्रश्न ही न उठता था। इसे जीतने के लिये वह फिर योजना बनाने लगा यदि आग रेखा को पार कर जाये तो उसकी बग़लें तो दबोची जा सकती थीं परन्तु वह उस ढलान से होकर निश्चय ही पौट्टर क्रीक तक जा पहुँचेगी। उसे पांच सौ आदमी और कुछ अन्य व्यक्ति उनका नेतृत्व करने के लिये चाहियें थे। यदि उत्तरी हवा चलने लगे तो यह स्पिटकैट पौट्टर क्रीक को पार कर जायेगी। यदि ऐसा हुआ तो यह एक ऐतिहासिक घटना सिद्ध होगी। सफ्फोक तक पहुँचने से पहले उसे दबोचना सम्भव न होगा।

परन्तु अभी तक दायें या बायें किसी ओर से हल्ला न हुआ था।

उसने पत्थरों से ऊपर उठकर पुनः चारों ओर दृष्टि डाली। सहसा उसे ऐसा महसूस हुआ कि आग दब गई है। आग का उत्ताप घट चला था। शोलों की व्यग्रता कम हो गई थी। उनका रंग सफेदी की अपेक्षा अब ज़र्दी पर था। आग के मुख में कटाव उत्पन्न हो गये थे।

वह उठ खड़ा हुआ। अपने चेहरे को उसने अपनी भुजा से ढांप रखा था। उसके सामने पचास फीट के टुकड़े पर आग शान्त हो गई थी। शोलों का रंग सियाह पड़ गया तो उसने मुँह के आगे से बाजू हटा ली।

आग की दीवार के स्थान पर अब एक श्यामल जंगल खड़ा था जिस

में यत्र-तत्र आग जल रही थी। जैसे गैस बन्द करने से स्टोव की गर्मी जाती रहती है अब वैसे ही यहां महसूस हो रहा था।

वह एक पत्थर के ऊपर चढ़ गया। उसने आगे पीछे इस सशंकीय रेखा पर दृष्टि डाली। सभी स्थानों पर आग दब गई थी। आदमी निठल्ले खड़े ताक रहे थे।

उसने एक लम्बी सांस छोड़ी फिर वह चैन से सांस लेने लगा। उसने अपनी जेब से नोट बुक निकाली। घड़ी पर नज़र डाली, और यह अनुभव किया कि अभी तीन मिनट पहले उसने घड़ी देखी थी। वह सुदृढ़ होकर लिखने लगा।

'२'५२, सांयकाल, आग पर काबू पा लिया गया है।'

अन्तिम दिन संध्याभर वे लोग चिन्तित रहे। आग पर काबू पा लिया गया था परन्तु इसका मतलब यह न था कि आग बुझ गई है।

सफ्फोक में अपना काम समाप्त कर डावे गहरी नींद सो गया। उत्तरी तट के परासों पर वर्षा आरम्भ हो गई थी। दक्षिण की ओर खाड़ी तक बूँदा-बांदी हो रही थी। प्रशान्त महासागर से ठंडी और भारी हवा बड़े वेग से आ रही थी। यह हवा सैक्रेमैंटो की वादी में भरी जा रही थी और पूर्व और उत्तर से खुश्क हवा का मार्ग बन्द हो रहा था।

दक्षिण के रुख दक्षिण-पूर्व से लगातार नमदार हवा चल रही थी। प्रातः का झुटपुटा था कि वर्षा आरम्भ हो गई। पहले यह धुंध के रूप में आई फिर लगातार बूँदा-बांदी होने लगी। कभी-कभी बौछाड़ आने लगती।

इङलहर्स्ट के गार्ड स्टेशन के मैदान पर स्थित मुख्यकार्यालय में बैठे हुये नक्शा नवीस ने सन्तोष पूर्वक आग का ब्योरा अन्तिम बार तैयार किया। उसे यही आशा थी कि यह उसका अन्तिम ब्योरा होगा।

बहुत क्षमता से उसने पैंसिल के साथ उस क्षेत्र पर निशान लगाया जो पहले दिन जला था। पहले क्षेत्रों से यह इस बात में भिन्न था कि यह तीन अलग-अलग स्थानों पर था। उसने इन भागों को नीली

पैंसिल से इंगित किया। रेखायें खींच कर उसने उस दिन विध्वंस हुए क्षेत्र का अनुमान ३,७७० एकड़ लगाया।

अब आग का टेढ़ा-मेढ़ा रूप उसके सामने स्पष्ट था। उसका परिमाप अब उस रेखा की लम्बाई के बराबर था जो आग के गिर्द बनाई गई थी और जिसकी सफलता पूर्वक रक्षा की गई थी। इस रेखा की लम्बाई बत्तीस मील थी। इतनी लम्बी रेखा तैयार करना मार्क का काम था। अचम्भे की बात यह थी कि अधिकतर रेखा आठ फीट चौड़ी थी और पहाड़ी प्रदेश में चार दिन में तैयार की गई थी। उसके आस-पास कोई सड़क न थी और सामान भी बहुत दूर से आता था।

चित्र से ही यह प्रतीत होता था कि स्पिटकैट को बुझाने में कठिनाई का सामना करना पड़ा है। अन्तिम दिन भी वह पीछे से आती हुई हवा और आगे की उठती हुई ढलान के कारण बढ़ती ही जा रही थी। उस दिन जो क्षेत्र उसकी लपेट में आया वह पहले दिन के क्षेत्र से कहीं अधिक था। उसने इस क्षेत्रफल को पहले दिनों के क्षेत्रफल के साथ जोड़ दिया और लिखा १०,०३२ एकड़। इसका अभिप्राय था लगभग सोलह वर्ग मील।

बाद में चैन से बैठ कर हिसाब लगाने से इन आंकड़ों में कुछ उलट फेर होने की सम्भावना थी परन्तु उसने फैसला करते हुये कहा—'लगभग दस हज़ार एकड़।' और इसके पश्चात नक्शा उठा कर रख दिया।

५ प्रदेश के इतिहास में भी स्पिटकैट का कोई विशेष महत्त्व न था। कोई भी पुराना कर्मचारी बता सकता था कि कई बार इससे भी भीषण आग का सामना करना पड़ा है। भविष्य में भी इससे कहीं अधिक प्रचंड अग्नियों से वास्ता पड़ सकता था।

आग को दबाने पर लगभग पांच लाख रुपया सर्फ हुआ था। एक आदमी की हत्या हो गई थी और कई अन्य व्यक्तियों को चोट आई थी। जो वृक्ष जल गये थे उनकी कीमत का अंदाजा पचास लाख रुपये से कम न था। भविष्य में काष्ट की कमी के कारण उसका भाव कहां तक बढ़

जायेगा इसका विचार न किया गया था और यह अनुमान वर्तमान बाज़ार भाव को देखकर लगाया गया था।

जो हानि हुई थी उसका हिसाब केवल वर्तमान स्थिति में ही न लगाया जा सकता था। नदियों में गदला पानी बह रहा था जिससे प्रतीत होता था कि हलकी सी वर्षा भी उर्वर मिट्टी को बहाकर ले जा रही है। जिन मेड़ों पर मिट्टी की पतली तह थी और जिस में चीड़ ने बड़ी कठिनाई से जड़ पकड़ी थी वहां अब अर्धनग्न चट्टानों पर कांटेदार बेलें लटकती दिखाई देंगी।

स्पिटकैट केवल कुछ दिन ही जलती रही थी परन्तु इसका प्रभाव सदियों तक दिखाई देगा। एक साधारण व्यक्ति यदि किसी चोटी पर खड़ा होकर देखता तो उसकी दृष्टि कई ऊँचे-ऊँचे और हरे-भरे वृक्षों पर पड़ती और वह यही समझता कि बहुत थोड़ी हानि पहुँची है। परन्तु उनमें से बहुत से वृक्षों के निःतल बुरी तरह झुलस गये थे। कइयों को ऐसी हानि पहुँची थी कि शीघ्र ही कीड़े मकौड़ों के कारण खोखला होकर उनके गिरने की संभावना थी।

जहां-जहां शिखर अग्नि का प्रहार हुआ था वहां-वहां बीज गिराने वाले वृक्ष बाकी न रहे थे। वहां जंगल की अपेक्षा झाड़ियों के उगने की संभावना थी। एक बार झाड़ियां उगने लगें तो वे सालों और सदियों तक अपना स्थान नहीं छोड़तीं। किनारे-किनारे जंगल धीरे-धीरे बढ़ता है और झाड़ियां धीरे-धीरे पीछे हटती हैं। कुछ लोग निराशा भरे शब्दों में कहते थे कि कैलिफोरनियां के जंगल किसी नमीदार युग में उत्पन्न हुये थे और एक बार जड़ पकड़ने के पश्चात झाड़ियां तभी समाप्त होंगी जब फिर कोई नमीदार युग आयेगा।

आग ने जो हानि पहुँचाई थी उसकी पूर्ति सौ साल में भी न होगी। पांच सौ साल पश्चात भी इस हानि के चिन्ह दिखाई देंगे।

सफ्फोक में स्थित जंगल के मुख्य कार्यालय में वाल्ट बर्नाबी हवाई

जहाज़ की तैयारी की प्रतीक्षा कर रहा था। उसकी तैयारी में दस मिनट बाकी थे।

आर्नेल्ड सोरसन निसज्जन में लगा था। परन्तु वह कुछ मिनट के वाल्ट से स्पिटफ़ैट के विषय में बात करने लगा।

उसने कहा, 'यह तो स्पष्ट है कि हम बिजली को गिरने से न रोक सकते थे।'

'नहीं, बोर्ड आफ़ रिव्यू ने किसी को भी दोषी नहीं ठहराया।'

'हो सकता है। परन्तु जब मैं दो दिन पश्चात् हवाई जहाज़ द्वारा उसका निरीक्षण करने के लिये गया तो मुझे इसका पता लगाना चाहिये था। उस समय पता लग जाता तो इतना अनर्थ न होता।'

'शायद उस समय धुआं उठ ही न रहा था। उस समय पहला कारुक ही इस पर काबू पा सकता था। संभव है अधिपुरुष सलग्गार से कोई भूल हो गई हो, किन्तु निश्चय पूर्वक कुछ नहीं कहा जा सकता। कैसे आग फैलती गई इसका कारण तो हवा की तेज़ी और निम्न आवलेद ही हो सकते हैं। यह प्रदेश भी ऐसा था जहां आदमी पहुंचाना सुगम न था।'

'बार्ट के विषय में तुम्हारा क्या विचार है?'

'बेचारा बार्ट; उसने रिवर्स फ्लैट पर जो रेखा बनाई वह आग के बहुत निकट थी। परन्तु आदमी को भूल करने के पश्चात् ही समझ आती है। और मेढ़ पर जो भगदड़ मची उसके विषय में कोई भी बोर्ड आफ़ रिव्यू पता नहीं लगा सकता कि इसका क्या कारण था। महीना भर बैठे रहें तो भी इसका अता पता न मिलेगा।'

आर्न अनासक्त भाव से दो हज़ार आदमियों को और बहुत से सामान को यथास्थान पहुँचाने के काम में लग गया।

बार्ट मोटर में चढ़कर शिविर में आया। उसने साफ़ वस्त्र पहने थे और बहुत सफ़ाई से दाढ़ी मूंढी थी। उसकी अन्य लोगों से भेंट हुई।

इस मेल में कोई बात शोकातुर न थी। किसी ने भी पिछली घटनाओं की बात नहीं छेड़ी।

बार्ट ने कहा, 'हैलो, मुझे बहुत अच्छी नींद आई है। मैंने समझा कि शायद आप मुझे किसी काम पर लगा सकेंगे।'

निरीक्षक ने कहा, 'बहुत धन्यवाद। मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे साथ रेखा को देखने चलो। मैं मालूम करना चाहता हूँ कि आग कहां शुरू हुई थी।'

पगडंडियां पानी से भरीं थीं, घोड़ों के लिये चलना दूभर हो रहा था। जहां चीड़ के दो महान वृक्ष खड़े थे वह घोड़ों के दम लेने के लिये स्वाभाविक स्थान था। जिस दिन वह घोड़े पर चढ़ कर पहली बार आग को देखने आया था उस दिन बार्ट यहीं आकर ठहरा था। ऐसा मालूम होता था जैसे वह बहुत पुरानी घटना हो। उचटती हुई नजर डालने पर इस दृश्य में कोई अन्तर आया दिखाई न देता था। उसने दर्रे के साथ साथ दूर तक नज़र दौड़ाई और अनियन क्रीक की दरार पर दृष्टि डाली। मेढ़ों की परिचित लोठन वैसी ही थी। जब उसने ध्यान पूर्वक देखा तो सब कुछ बदला हुआ प्रतीत हुआ।

सैरोगोरडो की मचान अब भी दूरस्थ पश्चिमी आकाश की पृष्ठ-भूमि पर तीक्ष्ण रूप से खड़ी थी। परन्तु अब वह सफेद और चमकदार न थी। मकान के नीचे पहाड़ के मुख पर उसे जली हुई घास दिखाई दी। उससे परे रिवर्स रिज का विध्वंसित शिखर दिखाई देता था। उत्तर की ओर ब्रश की झाड़ियों का जला हुआ मैदान था। उससे ज़रा परे अनियन क्रीक के ऊपर की मेढ़ जहां से वह आग के भड़कने के कारण भागा था नज़र आती थी।

उसका दिल बैठने लगा। उसे किसी और चीज़ का विचार आगया था। उसने पीछे मुड़ कर पश्चिम दिशा में नज़र दौड़ाई। रिवर्स रिज ने कर्न क्रीक को ढांप रखा था परन्तु उसे कुंज का स्थान मालूम था। वह

अब एक सुन्दर कुंज न था। उसके जीवन में वह फिर पहले के समान हरा-भरा न होगा। उसकी स्थिति किसी अन्य व्यक्ति के जीवन में भी जो उस समय जीवित था न सुधरेगी।

छः दिन में बहुत कुछ बदल गया था। वह स्वयं भी वृद्ध हो गया था। ज़िले का नित्य का काम वह अवश्य कर सकता था परन्तु महान अग्नि के समय वे अब उस पर कभी भरोसा न कर सकते थे। स्पिटकैट उसके वश में न आसकी। वह कुछ खो बैठा था। सभी लोगों को यह बात मालूम थी। उसे अपने ऊपर भी भरोसा न था। उसके विचार उसके चेहरे पर प्रकट हो रहे थे। उसने किसी को कहते सुना।

'बार्ट, इसके विषय में कुछ कहना बहुत कठिन है। प्रकृति का कुछ भी अर्थ हो, इसमें दर्रे के शुष्क पार्श्व का भी वही मूल्य है जो सुन्दर वृक्षों से ढकी ढलान का। भेद केवल हमारी अपनी समझ का है।'

बार्ट ने कहा, 'मेरे लिए इस भेद का बहुत महत्त्व है।'

वे पुनः घोड़ों पर सवार होकर चल पड़े। निरीक्षक ने अपने सम्मुख फिर पुरानी कठिनाई का आभास किया। वह भूमि का, वृक्षों का और आग का भी प्रबन्ध कर सकता था। वह आग को खूब जानता था परन्तु क्या यही बात मनुष्यों के विषय में भी कह सकता था? कभी-कभी यह दीवार दुर्बल होती प्रतीत होती थी। कभी कभी यह लड़खड़ाती भी दीखती थी। जब छतरसैनिकों ने उसे 'स्लिम' कहा और जब 'हाट-शाट' आदमियों ने खुशी का हलका सा नाद लगाया तो यह दीवार वास्तव में उसे टूटती हुई मालूम हुई थी। इस आग का उसके लिए कुछ न कुछ महत्त्व था। उसने एक कदम आगे बढ़ाया था। अब लोगों को मालूम हो गया था कि वह आग को दबा सकता है। वे उसका यशगान करने और उसे मान देने को तैयार थे। वह उस परीक्षा में सफल हुआ था जिसमें सफल होना एक नये निरीक्षक के लिए आवश्यक था। परन्तु जब वह सहसा लोगों के पास पहुँचेगा तो क्या वे खीस तो न पड़ेंगे?'

बार्ट ने कहा, 'हमें वहां पहुँचने के लिये एक सड़क की आवश्यकता थी और होवल माऊंटेन पर एक मचान की।'

'मैंने इनकी मांग की थी परन्तु उस समय वित्त की कमी थी, शायद अब इन्हें तैयार करना सम्भव हो सकेगा।

'जब चिड़ियां चुग गईं खेत ?'

'कोई बात नहीं। हमारे और भी खेत हैं।'

निरीक्षक पहाड़ के विध्वंसित पार्श्व पर खड़ा सोच रहा था, 'हां, हमारे और भी खेत हैं।'

अधिक सड़कें, अधिक मचानें, बेहतर शिक्षण प्राप्त किये कारुक, शिक्षित जनता लट्ठे तैयार करने के बेहतर उपाय, समय के साथ सभी कुछ होगा। अब आग का मुकाबला करने वाला केवल सोटी वाला आदमी न होगा। 'हैलीकौफ्टर, पानी' छोटे-छोटे ट्रैक्टर निरीक्षक हवाई जहाज़ों के लिये इन्फ्रारेड कैमरे, कृत्रिम वर्षा, रासायनिक बम्ब, जिनमें फलीते लगे होंगे इनमें से बहुत से साधन पहले ही उपलब्ध थे। अन्य की उपलब्धि की आशा थी।

वह जानता था कि युद्ध जारी रहेगा। पुराने ढंग के लट्ठेहार समझते थे कि जंगल एक खान के समान है जिसे एक बार लूटा जा सकता है। परन्तु जंगल एक खान नहीं है। बार्ट समझता था कि वह एक आदि सुन्दर स्थान है। परन्तु यह बात भी न थी। आदमी ने सेब के वृक्ष को सिधा लिया है। वैसे ही वह चीड़ के वृक्ष को भी सिधा लेगा। यह वृक्ष भी सेब के वृक्ष के समान उसके लिये उपयोगी सिद्ध होगा। जब ऐसा समय आयेगा तो आदमी यह प्रबन्ध भी कर लेगा कि वह आग की नज़र न हो।

प्रातः का सारा समय वह कठोर श्रम करती रही थी। उसने एक नौकरानी के समान खिड़कियां साफ़ कीं। जिस-जिस चीज़ पर उसका हाथ न फिरा था उस पर अभी भी धुएँ की कालिमा जमी थी। जहां सफेद और चमकदार रंग किया गया था वहां अब कालक, फुटियां और झुरियां दिखाई देती थीं। यह पक्ष वह था जिधर आग लगी थी।

प्रातः के समय कई चीज़ों के नीरीक्षण की आवश्यकता थी। आदमी अभी भी रेखा पर गश्त लगा रहे थे। मध्य प्रातः के समय एक लाल रंग का टैंकर मचान के पास से गुज़रा था। इसके पहियों पर चढ़ी भारी श्रृंखला ने रेखा की नरम मिट्टी में गहरी लीकें डाल दी थीं। कारुक के चेहरों पर और कपड़ों पर धूल पड़ी थी जिससे प्रतीत होता था कि उसे यहां लाने में उन्हें कितना श्रम करना पड़ा है। उसने उन्हें पगडंडी के साथ-साथ काम करते देखा। वे यदाकदा ठहर जाते, कोई भारी नल संभालने, उसे खींच कर ले जाते और फिर पानी छोड़ कर किसी सुंधकते हुये ठूंठ को शान्त कर देते।

कभी-कभी कहीं दूर उसे किसी ठूंठ के धड़ाम से गिरने की आवाज़ आती। खतरा जाता रहा था परन्तु फिर भी निश्चय करने के लिये देख-भाल हो रही थी।

उसने दोपहर का भोजन किया। फिर जिस सीमा तक कर सकती थी अपने शरीर को साफ़ किया। धूप निकली हुई थी। वह सोच में बैठी थी। उसे कोई ऐसी महत्वपूर्ण बात दिखाई न दी जिसके विषय में उसे दो बार सोचने की आवश्यकता अनुभव हो। टैंकर का कारुक और कुछ अन्य व्यक्ति उसके सामने ही काम कर रहे थे। वह चाहती थी कि वे वहां से हट जायें।

उसने सोचा, 'जो लड़कियां कांच के घरों में रहती हैं उनके पास दिन में आदमी नहीं आने चाहिये।' वह सोचने लगी कि यदि थे वह अग्नि मापक यन्त्र के पास मचान के केन्द्र के निकट खड़ी हो जाये तो नीचे खड़े व्यक्ति की दृष्टि उस पर न पड़ सकती थी। फिर उसने अपने मन में कहा, 'बच्चो, तुम्हारे पिता से मेरी भेंट पहले-पहल जंगल की एक आग के समय हुई थी।'

फिर वह हैरानी से सोचने लगी। क्या डावे के विषय में उसके विचार उचित थे। यदि आग न लगती, यदि वह अपने आपको उस दृश्य का और उन लोगों का भाग न समझती जो वहां काम कर रहे थे, यदि

उसके मन में वे विचार न आते जो उस समय आये थे तो उस समय भी जब वह पहली बार आया था·········

पराह्न के समय वह आया । आग मापक यन्त्र के पास खड़े होकर उसने कांच के घर की समस्या का हल निकाल लिया । इसने खूब काम दिया ।

वे पूर्वी पैंड़ पर आकर खड़े हो गये । वे देख रहे थे कि कहीं धुआं तो नहीं उठ रहा । परन्तु धुआं कहीं भी दिखाई न देता था । लड़की से उसने बहुत सी बातें कीं । किस प्रकार उसने अपना स्पेनिश नाम पाया था, किस प्रकार उसकी कोई दादी परदादी किसी कैलीफोरनिया निवासी से प्रेम करने लगी थी और कैसे वह उसे एक विशाल काले घोड़े पर चढ़ाकर भगा ले गया था । कुटुम्ब में इसी प्रकार की कहानी कही जाती थी ।

डावे ने कहा, 'मेरे पास काला घोड़ा तो नहीं है । क्या लाल रंग की जीप से काम न चलेगा ?'

'समय में परिवर्तन आ चुका है इसलिये मुझे सोचना पड़ेगा······ हां, इससे काम चल जायेगा ।'

एक दिन पहले एकमील चौड़े मुख पर आग की अटूट दीवार आकाश की ओर उठ रही थी । अब सैरोगोरडो के पूर्वी पार्श्व पर स्थित दर्रे के पेंदे में दो लट्ठों के बीच में एक छोटी सी ज्वाला जल रही थी । धूप में वह टिमटिमा रही थी । ऐसा प्रतीत होता था कि वह बुझ जायेगी परन्तु वह फिर प्रज्ज्वलित हो उठती । एक लट्ठे से कुछ राख झड़ गई । उनके बीच का अन्तर चौड़ा हो गया । हवा के जिस प्रवाह ने ज्वाला को जीवित रखा था अब मन्द हो गया था । अब ज्वाला अनिश्चित रूप से टिमटिमाने लगी ।

ज्वाला झुक गई । सजीव हो उठी, टिमटिमाई । फिर जैसे कोई तीली को बुझा देता है हवा के एक झोंके ने उसे बुझा दिया । जैसे बुझती हुई सिगरेट से धुआं निकलता है वैसे लट्ठों के बीच से धुआं उठता दिखाई दिया ।

॥ समाप्त ॥